समकालीन मलयालम कहानियां

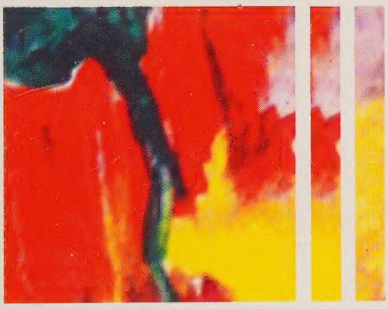

चयन एवं अनुवाद

संतोष अलेक्स

मलयालम कहानी में आधुनिकता की शुरुआत टी. पद्मनाभन और एम.टी. वासुदेवन नायर से हुई। इनके अलावा एन. मोहनन, पट्टथुविला करुणाकरन, माधवीकुट्टी, एन. पी. मुहम्मद, सी. राधाकृष्णन और जी. विवेकानंदन आदि प्रमुख हैं।

टी. पद्मनाभन को मलयालम कहानी का पितामह कहा जाता है। इन्होंने मलयालम कहानियों को एक नई दिशा प्रदान की। इनकी कहानियों में मानवतावादी विचारधारा को देखा जा सकता है। 'प्रकाशम परतुन्ना पेनकुट्टी' (प्रकाश फैलाने वाली लड़की) को मलयालम की सबसे श्रेष्ठ कहानियों में एक माना जाता है। 'गौरी', 'साक्षी' (गवाह), 'हारिसन सायिपिन्डे नाय' (हारिसन साहेब का कुत्ता), 'कालभैरव' और 'पुषकल कडन्न मरंगल्क इडयीलूडे' (नदी पार कर पेड़ों के बीच) इनके प्रमुख कहानी-संग्रह हैं।

माधवीकुट्टी कमलादास का कलम नाम है। इन्होंने मलयालम में उम्दा कहानियां और उपन्यास लिखे हैं। इनकी कहानियों में स्त्री मन की गहराइयों को बड़ी चतुराई से पेश किया गया है। 'झूठ' कहानी बालमनोविज्ञान पर लिखी गई सर्वश्रेष्ठ मलयालम कहानियों में चुनी जाती है। इनके प्रमुख कहानी-संग्रह हैं—'तरीशु निलम' (बंजर भूमि), 'पक्षीयुडे मणम' (चिड़िया की महक), 'पलायनम' (भाग जाना), 'चुवन्न पावाडा' (लाल घाघरा), 'मतीलुकल' (दीवार), और 'नष्टपेटटा नीलांबरी' (खोई हुई नीलांबरी)।

एम.टी वासुदेवन नायर बहुमुखी प्रतिभा के धनी साहित्यकार हैं। उनके उपन्यास व कहानियां स्वातंत्र्योत्तर भारत में केरल समाज की पीड़ा को प्रस्तुत करते हैं। इनकी रचनाओं का मुख्य कथ्य व्यक्ति-व्यथा और भावनात्मक तीव्रता है।

समकालीन मलयालम कहानियां

Digitized by the Internet Archive
in 2022 with funding from
Kahle/Austin Foundation

https://archive.org/details/samakalinamalaya0000unse

समकालीन मलयालम कहानियां

चयन एवं अनुवाद

संतोष अलेक्स

SOMERSET COUNTY LIBRARY
BRIDGEWATER, NJ 08807

ISBN : 81-88672-37-8
प्रथम संस्करण : 2009
© : जय संतोष
आवरण : प्रवीण
मूल्य : 150.00 रुपये
प्रकाशक : साहित्यशिला प्रकाशन
598-बी, पांडव रोड़, विश्वास नगर
शाहदरा, दिल्ली-110032
कंपोजिंग : मुस्कान कम्प्यूटर्स, दिल्ली
मुद्रक : भारद्वाज आफसैट, दिल्ली

SAMKALEEN MALYALAM KAHANIYAN
Selected & Translated by Santosh Alex

प्रिय मित्र संतोष एचिकानम के लिए

अनुक्रम

1.	गौरी	टी. पद्‌मनाभन	13
2.	मंदिर के दीये	पुनत्तिल कुंजअब्दुल्ला	20
3.	चांदनी को मालूम है	सारा जोसफ	29
4.	संशोधन	एन. एस. माधवन	37
5.	लौटते हुए	सी. वी. श्रीरामन	44
6.	ऊंचाइयां	सेतु	49
7.	पागलपन	माधवीकुट्‌टी	55
8.	भिन्न संख्या	ग्रेसी	57
9.	कौन जानता है	पॉल जकरिया	60
10.	विपरीत दृश्य	सी. वी. बालकृष्णन	65
11.	ईश्वर ओवन्स से हाथ मिला रहा है	सुभाष चंद्रन	67
12.	बेचारा गांववासी	ई. हरिकुमार	72
13.	कोमाला	संतोष एचिकानम	77
14.	पांचवीं का आगमन	चंद्रमती	89
15.	मूसलाधार बारिश के बाद	एम. टी. वासुदेवन नायर	95
16.	ईश्वर का राज्य	अंबिकासुदन मांगाड	105
17.	तथागत	अक्षिता	110

समकालीन मलयालम कहानियां : दशा व दिशा

☆ संतोष अलेक्स

भारतीय भाषाओं में लिखी गई कहानियों में मलयालम कहानियों का महत्त्वपूर्ण स्थान है। मलयालम कहानी का प्रस्फुटन एक विकास दीर्घकालीन तथा सुस्थिर विकास का परिणाम है। शुरुआती कहानीकारों पर एडगर एलेन पो, वाशिंगटन इरविंग व नाथेलिन हार्थोन का प्रभाव दिखाई पड़ता है। उस समय की कहानियां मनोरंजन प्रधान थीं और इसलिए सामाजिक यथार्थ से दूर थीं। पहली पीढ़ी के कहानीकारों में मुर्कोत्तु कुमारन, ओडुविक कुंजिकृष्णन मेनोन, एम.आर.के.पी, अंबाडी नारया पोदुवाल, के. सुकुमारन, इवी. कृष्णपिल्लै आदि प्रमुख थे।

1930 से मलयालम कहानी का आधुनिक काल प्रारंभ होता है। इस दौर के कहानीकारों ने फ्रायड और कार्ल मार्क्स की रचनाओं से प्रेरणा ग्रहण की। कहानियों में सामाजिक यथार्थ दृष्टव्य था। कहानीकारों ने सामाजिक समस्याओं को अभिव्यक्ति दी। फलस्वरूप एक नये युग का प्रारंभ हुआ। इस दौर के कहानीकारों ने अपनी अनुभूतियों को वड़ी कलात्मकता से पेश किया। तकषी, पी.केशवदेव, पोनकुन्नम वर्की, वशीर, ललितांविका अंतर्जनम, के.सरस्वती अम्मा आदि इस दृष्टि से प्रमुख हैं।

इस दौर के लेखकों में एस.के. पोटटेकाड तथा पी.सी. कुटटीकृष्णन के नाम उल्लेखनीय हैं जिन्होंने जीवन की उलझनों और मानव संवंधों पर लेखनी चलाई। इसके अलावा इ. एम. कोवूर, नागवल्ली, आर.एस. कुरुप, वटटूर रामन नायर, पोजिक्करा राफी आदि ने अपनी मौलिक विधाओं से मलयालम कहानी को समृद्ध किया।

प्रगतिशील लेखक आंदोलन तक आते-आते कहानी के स्वरूप में वदलाव आया। कहानीकारों ने सारे पूर्वनिर्मित सिद्धांतों को तोड़ा।

अचानक कहानी व्यक्ति केन्द्रित हो गयी। लेखक अपने आपकी खोजबीन करने लगे। कहानी बाह्य की अपेक्षा आंतरिक रूपों की ओर मुड़ी। व्यक्ति की खुशी, नाराजगी, बेचैनी आदि कहानी के विषय बने।

आधुनिकता

मलयालम कहानी में आधुनिकता की शुरुआत टी. पद्मनाभन और एम.टी. वासुदेवन नायर से हुई। इनके अलावा एन. मोहनन, पट्टथुविला करुणाकरन, माधवीकुट्टी, एन.पी. मुहम्मद, सी. राधाकृष्णन और जी. विवेकानंदन आदि प्रमुख हैं।

टी. पद्मनाभन को मलयालम कहानी का पितामह कहा जाता है। इन्होंने मलयालम कहानियों को एक नई दिशा प्रदान की, इनकी कहानियों में मानवतावादी विचारधारा को देखा जा सकता है। ''प्रकाशम परतुन्ना पेनकुट्टी'' (प्रकाश फैलाने वाली लड़की) को मलयालम की सबसे श्रेष्ठ कहानियों में एक माना जाता है। ''गौरी'', ''साक्षी'' (गवाह), ''हारिसन सायिपिन्डे नाय' (हारिसन साहेब का कुत्ता), ''कालभैरव'' और ''पुपकल कडन्न मषंगल्क इडयीलुडे'' (नदी पार कर पेड़ों के बीच) इनके प्रमुख कहानी-संग्रह हैं।

माधवीकुट्टी कमलादास का कलम नाम है। इन्होंने मलयालम में उम्दा कहानियां और उपन्यास लिखे हैं। इनकी कहानियों में स्त्री मन की गहराइयों को बड़ी चतुराई से पेश किया गया है। ''झूठ'' कहानी बालमनोविज्ञान पर लिखी गई सर्वश्रेष्ठ मलयालम कहानियों में चुनी जाती है। इनके प्रमुख कहानी-संग्रह हैं—''तरीशु निलम'' (बंजर भूमि), ''पक्क्षीयुडे मणम'' (चिड़िया की महक), ''पलायनम'' (भाग जाना), ''चुवन्न पावाड़ा'' (लाल घाघरा), ''मतीलुकल'' (दीवार), और ''नष्टपेटटा नीलांबरल'' (खोई हुई नीलांबरी)।

एम.टी वासुदेवन नायर बहुमुखी प्रतिभा के धनी साहित्यकार हैं। उनके उपन्यास और कहानियां स्वातंत्र्योत्तर भारत में केरल समाज की पीड़ा को प्रस्तुत करते हैं। इनकी रचनाओं का मुख्य कथ्य व्यक्ति-व्यथा और भावनात्मक तीव्रता है। इनके प्रमुख कहानी-संग्रह में ''इरूटिन्डे आत्माव'' (अंधेरे की आत्मा), ''ओलवुम तीरवुम'' (लहर व तट), ''कुट्टीऐटटत्ती'', ''वानप्रस्थम'', ''कलीवीड'' (मिट्टी का घर) व ''शेरलोक'' शामिल हैं।

उत्तर आधुनिकता

मलयालम कहानियों में ओ.वी. विजयन, ककाडन, एम. मुकुंदन, पुनत्तिल कुंजअब्दुल्ला और सेतू उत्तर आधुनिक कहानीकार हैं। इनकी कहानियों में पश्चिमी दर्शनशास्त्र का प्रभाव दिखाई पड़ता है। कथ्य और शिल्प की दृष्टि से इनकी कहानियों में एक नई शुरुआत हुई जो मलयालम कहानी के इतिहास में एक महत्त्वपूर्ण पड़ाव है।

मलयालम साहित्य के इतिहास में ओ.वी. विजयन का अन्यतम स्थान है। उन्होंने कहानियों को पारंपरिक लेखन से मुक्ति दिलाई। उनके प्रमुख कहानी-संग्रहों में ''अशांति'', ''कडलतीरत्तू'' (समुद्री तट के पास), ''काटटूपरंज कथा'' (कहानी जो हवा ने बताया), ''ओ. वी. विजयन की कहानियां' और ''अरक्षीतावस्था'' (असुरक्षित अवस्था), शामिल हैं।

ककादन ने व्यक्ति के समाज के साथ जटिल संबंधों को अपनी कहानियों में प्रस्तुत किया। अपने पात्रों द्वारा उन्होंने पाखंडी समाज के नकाब को उतार फेंका। एम. मुकुंदन कहानी के इतिहास में आधुनिकता के कर्मठ भाष्यकार हैं। साठ के दशक के युवक इनकी लेखनी से बहुत प्रभावित हुए। इस पीढ़ी के अन्य लेखकों में आनंद, पद्मराजन, पुनत्तिल, कुंजअब्दुल्ला, एम. पी. नारायण पिल्ला, के. पी. निर्मल कुमार, मैथिल राधाकृष्णन, पॉल जकरिया, सी. वी. श्रीरामन, एम. सुकुमारन, वी.के. एन., वी.पी. शिवकुमार, मुंडर कृष्णकुट्टी, वैशाखन, यू.ए. खादिर, शत्रुघ्न, ई. हरिकुमार, के.एल. मोहनवर्मा, सी.वी. बालकृष्णन, यू.के. कुमारन, अकबर ककटिल, प्रायिप्र राधाकृष्णन्, सारा जोसफ, मानसी, पी.आर. श्यामला, प्रेसी और चंद्रमती आदि ने अपनी पहचान बनाई।

पुनत्तिल कुंजअब्दुल्ला काव्यभाषा के साथ व्यंग्य का सहारा लेकर रचना करते हैं। वी.के. एन., एस.वी. वेणुगोपन नायर व अष्टमूर्ति की रचनाओं में हास्य-व्यंग्य देखा जा सकता है। वैशाखन की कहानियां कविता की सी प्रतीति करानेवाली हैं।

एम. सुकुमारन आधुनिक यंत्र संस्कृति से दूर सहज जीवन की सरलता की कहानी कहते हैं। सी.वी. श्रीरामन, मानवी, वी.पी. शिवकुमार की कहानियों में साम्यवादी पुट दृष्टव्य है।

यू.के. कुमारन, इ.वी. श्रीधरन, टी.वी. कोच्चुबावा पढ़ी-लिखी समझदार नई पीढ़ी की व्यथा-कथा कहते हैं। अकबर ककटिल, एन.पी. हाफिज

मुहम्मद, सी.वी. बालकृष्णन और प्रायिप्र राधाकृष्णन युवकों की आशाओं व निराशाओं का चित्रण करते हैं।

नया दृष्टिकोण

समकालीन मलयालम कहानीकारों में कुछ ऐसे हैं जिन्होंने उत्तर आधुनिकतावाद के चलते भी कहानी में मानवीय अस्तित्व की खोज की। इस दृष्टि से एन.एस. माधवन, टी.वी. कोच्चुबावा, वी.आर. सुधीश, अंबिकासुदन, अशोकन चेरुविल व वी.एस. अनिल कुमार की कहानियां महत्त्वपूर्ण हैं।

युवा पीढ़ी के कहानीकारों में बी. मुरली, सुभाष चंद्रन, टी. एन. प्रकाश, के.पी. सुधीरा, संतोष एचीकानम, प्रिया एस., सिनारा एस. आदि मलयालम कहानी को समृद्ध कर रहे हैं।

गौरी

☆ टी. पद्मनाभन

छः महीने के अंतराल के वाद वे मिल रहे थे। उसे लगा कि गौरी दुवली हो गई है। यही नहीं, वह गौरी को चश्में को साथ पहली बार देख रहा था। उसने उसे आहिस्ता अपने शरीर से लगाकर आर्द्र स्वर में पूछा, ''क्या हुआ ?''

पहले उसने जवाव नहीं दिया। जबरदस्ती पूछने पर उसने जवाब दिया, ''आजकल कुछ निरुत्साह सा महसूस कर रही हूं, पढ़ने पर सिर-दर्द होता है। गंभीर रूप से कुछ सोचने पर भी होता है। डॉक्टर ने बताया, खास बात नहीं है। चश्मा लगाना पड़ेगा। इसलिए अभी एक हफ्ता ही हुआ....''

वरामदे में उन दोनों के अलावा और कोई नहीं था। सुबह होने लगी थी। लेकिन अभी रात पूरी तरह से बीती नहीं थी। हल्की-सी धुंध भी थी।

होटल में तब सब लोग गहरी नींद में थे। शरीर विहीन दो आत्माओं के समान वे एक-दूसरे के करीब खड़े हो गए। वह कुछ कहना चाहता था। लेकिन अपराधबोध के कारण कुछ कह नहीं सका।

''मुझे कुछ नहीं मालूम, आजकल समय के बारे में, आयु के बारे में ज्यादा सोचती हूं....रातों में घबराकर अचानक उठ जाती हूं....।''

उसको अचानक झटका-सा लगा। पूरा शरीर कांपने लगा। लेकिन वह चाहता था कि गौरी उसके हावभाव को न जाने। उसने उसकी उंगलियों को कसकर पकड़ते हुए कहा, ''नहीं-नहीं! हम कभी बूढ़े नहीं होंगे।''

दोनों ने मुस्कराने की कोशिश की। वे कुछ कहने वाले थे लेकिन फिर दोनों ने सोचा कि बेहतर यही है कि चुप रहें। यह सच्ची बात है कि दोनों युवा नहीं थे। उनकी आयु इन दोनों के बीच कहीं थी। उसकी

आयु औरत से भी ज्यादा थी लेकिन ऐसा लगता नहीं था।

आयु के बारे में वे कभी बात नहीं करते थे। इसलिए पहली बार यह सुनने पर....। बाद में गौरी ने कहा, "हमने फिजूल बातें करके समय बर्बाद किया। आओ, जल्दी चलते हैं। वहां पहुंचने पर शायद आज...'

उसने जल्दबाजी में कहा, "नहीं-नहीं। हमारे वहां पहुंचने से पहले सूर्योदय नहीं होगा। मुझे यकीन है।"

समुद्र के किनारे-किनारे जाने वाली सड़क पर वे चलने लगे। इसके पहले भी एक से अधिक बार वे यहीं से होकर गुजर चुके थे। वह भी हमेशा सुबह के वक्त। फिर समुद्र की ओर झुके चट्टान के ऊपर, समुद्र से सूर्य के उदित होने की प्रतीक्षा कर...।

उसे समझ में नहीं आया कि गौरी गोपालपुर को इतना पसंद क्यों करती है। क्या इन दोनों ने इससे भी खूबसूरत जगह कभी देखी नहीं? वहां ठहरे नहीं? महाबलेश्वर, पंचमढ़ी, दार्जिलिंग, कन्याकुमारी...लेकिन गौरी की पसंद गोपालपुर ही था। या तो पर्यटकों की भीड़ शुरू होने से पहले या फिर मौसम के खत्म होते ही। वहां के समुद्र किनारे, दिन के वक्त गांवों से होकर गुजरना, हर सुबह चट्टानों पर बैठना...। वहां के होटल के शांत वातावरण में बिना समय की परवाह के, बिना किसी चिंता के...।

कुछ लोग जाल लेकर मछली पकड़ने के लिए सामने से गुजरे। इन मछुआरों के अलावा सड़क पर और कोई नजर नहीं आया। रास्ते की बत्तियों से केवल हल्की सी रोशनी दिखाई देती थी।

बत्तियों के चारों ओर पतंगे नाच रहे थे। वे दोनों चुपचाप चल रहे थे। फिर भी वह सोच रहा था—

छह महीनों के पहले गौरी ने लिखा—इस बार काठमाण्डू में एक हफ्ते का मैनेजमेंट सेमिनार है। केवल हमारी कम्पनी के वरिष्ठ एक्जीक्यूटिव, बाहर से किसी को बुलाया नहीं। इसका संचालन भार मुझ पर है। सेमिनार जनवरी 7 तारीख को समाप्त होगा। इसके बाद एक हफ्ते छुट्टी लेकर नेपाल में ठहरना चाहती हूं। आप आएंगे न? आपको आना ही है। नहीं तो फिर मैं क्यों ये सब...।

हम दोनों मिलकर...याद है आपने एक बार अन्नापूर्णा की घाटी के तालाब और उस तालाब के बीच के द्वीप के बारे में बताया था?

हमारी मुलाकात के पहले एक बार, उस द्वीप के पुराने होटल में

कुछ दिन बिताने की बात मुझसे कहा था न? मैं अब वहां जाने और अपनी दुनिया को पूरी तरह भूलकर आपके साथ कुछ दिन बिताने के लिए बेचैन हूं।

उसने सोचा। जिस दिन से खत मिला उस दिन से वह भी तो बेचैन है। शाम को वे पशुपतिनाथ के मंदिर गए। वह दोपहर की फ्लाइट से पहुंचा ही था। एक बच्ची की तरह आनंद और उत्साह से गौरी ने कहा, "चलो, पैदल चलेंगे।"

वह इस जगह पर पहले जा चुका था। उसने कहा—"थक जाओगी, बहुत दूर जाना है, रास्ता भी ठीक नहीं..."

गौरी ने फिर कहा, "कोई बात नहीं, मैं थक जाऊं तो देखभाल करने के लिए मेरे साथ अब..." फिर थोड़ी गंभीरता के साथ लेकिन थोड़ा हंसी-मजाक में "इस बार देव के सामने पहुंचने पर मैं सनाथ रहूंगी।"

उसने सोचा, जब गौरी ने सनाथ शब्द का उच्चारण किया तब उसकी आवाज में थोड़ा-सा कंपन था? उसकी खूबसूरत आंखों में जैसे अभी भी इंतजार की आग थी।

लेकिन तब उसने...

वे शाम को मंदिर पहुंचे। मंदिर पहुंचने पर गौरी ईश्वर के बारे में भूल गई। परेशान होकर गौरी ने कहा, "कितनी गंदगी..."

मंदिर के पीछे पत्थर की सीढ़ियों से होते हुए वे बागमती के छोर पर पहुंचे। दूर पहाड़ों से मिट्टी बहाकर उन्मादियों की तरह बहने वाली बागमती यहां पर थोड़ी शांत होकर बह रही थी। फिर भी जैसे उसका उग्र रूप दिखाई पड़ता था।

बागमती के तट की चिताओं पर लाशें रखी थीं। कुछ लाशें पूरी तरह जल चुकी थीं, कुछ आधी, कुछ पर अभी आग लगाई थी। कुछ लाशें अपनी बारी का जैसे इंतजार कर रही थीं।

आसमान में बादल छा गए थे। हल्की बारिश शुरू हो गई थी। उन्हें इसकी खबर नहीं थी और वे चिताओं को देखते खड़े रहे। उसने कहा—"अब चलना चाहिए!" लेकिन गौरी नहीं मानी। गौरी ने उसका हाथ पकड़कर रोका। गौरी चुप थी। उसकी आंखें पूरी तरह चिताओं पर ही टिकी थीं। जलती चिताओं से लकड़ियों और हड्डियों के चिटकने की आवाजें आने लगीं।

दूसरे दिन सुबह वे हवाई जहाज से पोखारा की ओर गए। उनका छोटा-सा जहाज खेतों, घरों और बागमती के ऊपर से होकर उड़ा। गौरी बहुत खुश थी।

पोखारा से अन्नापूर्णा की ओर वे कार से रवाना हुए। फिर तालाब के बीच के पुराने होटल में....होटल मतलब बिना काटे हुए गोल पत्थर और जंगली लकड़ियों से बनी हुई कुछ झोंपड़ियां। झोंपड़ियों में बांस और बेंत से बनी चारपाई, मेज, कुर्सियां...।

शांति के कुछ दिन।

बाहरी दुनिया से उन्हें जो सुविधा थी वह केवल पीने का पानी, बिजली और टेलीफोन की थी। झोंपड़ी के बरामदे से दिखाई देनेवाले तालाब का जल-स्तर, तालाब के दूसरे छोर की घाटियां, घाटियों के जंगली फूल....सर्वोपरि हमेशा हिम से आच्छादित अन्नापूर्णा....।

गौरी खुश थी। फिर भी उसे अंदर ही अंदर भय लगता था। बागमती के तट पर, चिताओं के सामने, सब कुछ खोकर एक चित्र के समान स्थिर गौरी का रूप कितना सोचने पर भी उसके मन से नहीं मिटा। बाद में छुट्टियों के खत्म होने पर, दोनों हमेशा की तरह अपने-अपने संसार में जैसे मुखौटे पहनकर अपने-अपने रास्ते पर लौट पड़े....।

वापस पहुंचने पर गौरी ने लिखा, "कल मैंने सफर की थकान महसूस नहीं की। मालूम है, मेरे साथ कौन था? नहीं बताऊंगी। मुझे नहीं मालूम मैं कितनी बदल चुकी हूं। यह प्यार एक मधुर पीड़ा है। आपने एक बार लिखा था, दर्द के साथ प्यार कर रहा हूं।" यह बिल्कुल ठीक है। मैं अब यह महसूस कर रही हूं....।

संकट के बीच में ऐसा आनंद जिसको कोई नाम नहीं दिया जा सकता। गोपालपुर के वीरान तट पर गौरी के साथ चलने पर उसने भी संकटों के बारे में ही सोचा। गौरी के ही नहीं, खुद के संकटों के बारे में भी।

एक बार गौरी ने पूछा, "क्या सोच रहे हो?...चुप क्यों हो?" यह अचानक चौंक गया। फिर धीरे से बोला, "नहीं, कुछ भी नहीं।"

वे एक लैंप पोस्ट के नीचे से गुजर रहे थे कि गौरी ने उसको अचानक रोका। उसके चेहरे को देखते हुए उसने पूछा, "सच बताओ, मुझसे बोर हो रहे हो? इस सबकी जरूरत नहीं थी....ऐसा कभी..."

उसने घबराकर गौरी की ओर देखा तो गौरी ने फिर कहा..."कभी-

कभी मैं सोचती हूं, खासकर आजकल....पता नहीं क्यों? आपने प्यार में किसी भी तरह की कमी नहीं दिखाई। फिर आजकल....शायद मैं एक बोझ बन रही हूं....प्यार के अनजाने तलों तक मैं ही आपको खींचकर ले गई। पहले आपने नकारने की कोशिश की। फिर भी मुझे मालूम था कि आपमें भी प्यार है। मुझे वह प्यार चाहिए था। उसकी सख्त जरूरत थी। इसलिए मैं सब कुछ भूलकर...''

उसने उसे बात पूरी करने नहीं दी और उसे अपने सीने से लगा लिया। उसे रोना आ रहा था। उसके माथे को चूमते हुए उसने कहा, ''ऐसी बातें फिर मत कहना। मैं संभल नहीं पाऊंगा....''

चोट लगी हुई छोटी-सी चिड़िया के समान वह उसके सीने से लगी खड़ी रही। फिर वह रोने लगी और अपने आप कुछ कहने लगी, 'मेरी सुमी, मेरी सुमी, मेरी बच्ची। उससे मिलने के लिए मैं चोरों के समान चुपके से बोर्डिंग गई...'

उसे सांत्वना देने के लिए उसके पास शब्द नहीं थे। उसने फिर कहा, ''कहते हैं तलाक नहीं देंगे। इसके लिए तो मुझे कोर्ट में जाना पड़ेगा। अब तक मुझे सताते रहे और अब....मुझसे सहा नहीं जाएगा।''

वे दोनों कुछ कहे बिना वहां खड़े रहे। थोड़ी देर बाद उसने धीमे स्वर में कहा, ''आओ, सूरज को देखने के लिए हम इतनी दूर से इधर... बिल्कुल सवेरे ही, फिर....''

उसने मुस्कुराने की कोशिश की—''पता नहीं, क्या कह दिया।''

यह सब कहना नहीं था! लेकिन क्षण में मन पर जो काबू था वह छूट गया। वे समुद्र की ओर बढ़े और उसके पास आ गए, लेकिन सुबह की ओस में भीगकर धूसरित चित्र के समान अव्यक्त दिखाई देने वाली चट्टानों की ओर चलने पर वह अपनी पसंद की एक पुरानी कविता की दो पंक्तियों को गाने लगा :

''एक तारे को देखकर सुबह हुई
पहली वर्षा पाकर सूखा दुःख भूल गया।''

सूरज के उदित होने की प्रतीक्षा करते हुए वे चट्टानों के ऊपर से सागर को देखते बैठे रहे।

वे चुपचाप बैठे रहे थे। चुप्पी की दीवार को तोड़कर उसने पूछा, ''मैं एक कहानी सुनाऊं? मैं हमेशा सुनाना चाहता था, लेकिन सुना नहीं पाया। अब...''

गौरी ने शांत स्वर में कहा, "आपने मुझे आज तक कोई कहानी नहीं सुनाई। मैंने तो चाहा भी नहीं। फिर भी मुझे सुनने की इच्छा है, सुनाओ।" थोड़ी देर के बाद वह कहने लगा :

"पहले, बहुत पहले की बात है। एक नवयुवक था, वह एक लड़की को जानता था। उन दोनों के परिवार वाले भी एक-दूसरे को जानते थे....इन सबके कारण नवयुवक और युवती को मिलने और बात करने की सुविधा थी।

लड़की खुबसूरत थी। हमेशा वह मृदु स्वर में बात करती थी। उसके शब्द नवयुवक के लिए अमृत थे। लड़की नवयुवक को जी-जान से प्यार करती थी। नवयुवक भी लड़की से प्यार करता था।

एक बार नवयुवक के घर में एक घटना हुई। वे दोनों आलिंगनबद्ध कमरे में खड़े थे। तब उन्हें लगा कि कोई आ रहा है, और उसने युवती को हटा दिया और युवती हट गई। इस जल्दबाजी में युवती के कांच के कुछ कंगन टूट गए और उसके कोमल हाथ जख्मी हो गये।

वास्तव में उस वक्त कमरे में कोई भी नहीं आया। भय के कारण उन्हें ऐसा लगा। युवती के हाथों से रक्त बहने लगा। रक्त साफ कर टूटे कंगन लेकर उसके हाथ पकड़कर अपराध भरे भाव में नवजवान ने कहा, "मैं दूसरा खरीद दूंगा।"

युवती ने उसे ऐसे देखा मानो वह सारा जीवन उसका पीछा करेगी। उसने कहा, "दूसरा कंगन खरीदने की जरूरत नहीं। इस घटना को हमेशा याद रखना।" बाद में नवयुवक पढ़ाई के लिए कहीं और चला गया।

उन दिनों वे कभी-कभार ही मिलते थे। इसमें युवती की कोई गलती नहीं थी। वास्तव में युवक का आचरण कायरों के समान था।

फिर वक्त गुजरने के साथ-साथ युवती की शादी हुई और वह मां भी बन गई। उसका विवाह एक बिजनेसमैन के साथ हुआ। बीच-बीच में युवक को पश्चाताप होता था। लेकिन यह सोचने पर कि उसकी शादी अच्छे घराने में हुई, उसे अच्छा पति मिला, वह पारिवारिक जीवन बिता रही है, वह खुद को तसल्ली देता।

लेकिन सच्ची बात यह है कि युवती को कभी शांति नहीं मिली। युवती का जीवन दुःखों से भरा था। वह किसी भी प्रकार से खुश नहीं थी।

फिर कुछ ही दिनों में वह बीमार पड़ गई और मर गई। मरने से पहले एक बार युवक ने उसे देखा। वह एक मित्र से मिलने जा रहा था। उसे मालूम था कि युवती उसी रास्ते में कहीं पति के साथ रहती है। संकरे रास्ते से होते हुए अनेक बातें सोचते हुए वह चल रहा था कि ऊपर से एक आवाज सुनाई दी। उसने देखा कि वह पेड़ की आड़ में खड़ी है। युवती उसकी तरफ देख रही थी। वह स्तब्ध रह गया।

युवती रक्तहीन, विवर्ण और दुबली हो गई थी। क्षणभर के लिए दोनों ने एक-दूसरे को देखा। फिर इस छोटे से अंतराल में उसकी आंखों में वह पुराना प्यार और इंतजार उमड़ पड़ा।

लेकिन तब भी युवक कायरों के समान खड़ा रहा। फिर कई सालों के बीतने पर शिकारी कुत्तों के समान ये सब यादें उसका पीछा करती रहीं।

अब वह नवयुवक अधेड़ उम्र का हो गया था। अब वह अफसर बन गया था। उसके साथ में उसकी बड़ी बहन भी थी। कार को सड़क के एक तरफ कर आहिस्ता से मुड़ने पर अचानक एक लड़की, नहीं युवती उनकी कार के सामने से गुजरी।

वह स्तब्ध रह गया। उसे लगा कि क्षणभर के लिए दिल की धड़कन बंद हो गई हो। वह उस लड़की को देखता ही गया, ऐसा लगा मानो किसी अविश्वसनीय चीज को देख रहा हो। बड़ी बहन ने कहा, ''तुझे नहीं मालूम, वह तुम्हारी पुरानी प्रेमिका की बेटी है। कभी-कभी वह घर आती है। बेचारी बच्ची।''

वह स्तब्ध रह गया। कुछ सोचने के बाद बहन ने एक निश्वास के साथ कहा, ''उसकी मां....''

वह कुछ भी नहीं कह सका और चश्मा उतारकर रुमाल से चेहरा पोंछता रहा। रुमाल पसीने से भीग गया...

कहानी समाप्त कर वह चुप रहा।

गौरी ने भी कुछ नहीं कहा। फिर भी उसके हाथ स्नेहपूर्ण उसे....

गोपालपुर के सागर के ऊपर तब भी मेघ दिखाई दे रहे थे। ऐसा लग रहा था मानो सूरज बादलों के साथ आंखमिचौनी खेल रहा हो। वे बेसब्री से इंतजार कर रहे थे।

●

मंदिर के दीये

☆ पुनत्तिल कुंजअब्दुल्ला

दिन ढलने लगा और मैं हमेशा की तरह टहलने निकल पड़ा। सड़क पर भीड़ कम हो चुकी थी। रेलगाड़ी में यात्रा कर कोयिक्कोड और कन्नूर नामक जगह में नौकरी के लिए गई स्त्रियां तेजी से चली आ रही हैं। उनके कंधों पर थैलियां हैं। उन्हें पास की जगहों के लिए बस पकड़ना है जिसके लिए उन्हें कुछ और कष्ट उठाना है। माथे पर पसीना और चेहरे पर घबराहट है। उन्हें घर पर पहुंचकर कल जो काम है उन्हें आज ही निपटाना है।

''मरियुम्मा ऐंड सिस्टर्स'' की सिलाई की दुकान और डॉ. कुरूप की डिस्पेन्सरी पार कर मैं चौराहे पर पहुंचा। दर्जी की दुकान से नये कपड़े काटने की आवाज मेरे कानों में और डिस्पेंसरी की खिड़कियों से बाहर निकलती दवाओं की गंध मेरी नाक में आ बसी।

दाईं ओर की सड़क बस स्टैंड की ओर जाती है इसलिए इस सड़क पर हमेशा भीड़-भाड़ रहती है। शहर की सत्तर प्रतिशत दुर्घटनाएं यहां पर होती हैं। मैं उस सड़क को जिंदगी की पुस्तक कहता हूं। बाईं ओर की सड़क अरक्कीलोटक नामक जगह की ओर जाती है। उस ओर का रास्ता मंदिर की पहाड़ी की गहराइयों में समाप्त होता है, इसलिए मैं उस सड़क को भगवान का रास्ता कहता हूं। यूं किसी भी नाम से पुकारने में क्या रखा है? इस जमाने में मेघसंदेश में भी संदेश नहीं होता, वैसे ही पुकार में न पुकार का एहसास है, न सुनने का।

मैं भगवान के रास्ते से चलने लगा। कम-से-कम अब गाड़ियों की आवाज या धुएं से कोई परेशानी नहीं होगी। मेरे ठीक सामने से चार-पांच स्त्रियां काम करने के बाद लौट रही हैं। लेकिन उन्हें देखने पर ऐसा नहीं

लगता कि वे मजदूर हैं। वे काम करते समय पहनने वाले कपड़ों को कागज़ में लपेटकर एक पत्रिका के साथ अपने वक्ष में रखकर चली आ रही हैं। ये स्त्रियां साफ साड़ी, ब्लाउज़ और डबल डेकर हवाई चप्पल पहने हुए हैं। स्कूल से सेवानिवृत्त अध्यापक णानुकुरूप सड़क के किनारे गाय चरा रहा है।

मेरे सामने तीन-चार स्त्रियां और दो बच्चे बात करते हुए और हंसते हुए चले आ रहे हैं। सड़क के किनारे की चाय की दुकान में कुछ युवक भुना हुआ केला खाते और चाय पीते हुए राजनीतिक गतिविधियों पर बातें कर रहे हैं। उनमें में से एक युवक के हाथ में आधा खाया हुआ केला था जिस पर एक बड़ी मक्खी आ बैठी। वे लोग ऊंची आवाज में बात कर रहे थे जिससे यह स्पष्ट होता है कि वहां दो राजनीतिक पार्टियों के लोग शामिल थे। मेरे सामने दिखाई पड़े आह्लादपूर्ण लोगों का समूह अचानक मुझे पार कर गया। उनके पार होते ही रास्ते के ओर-छोर में चंदन की सुगंध फैल गई। शायद उन लोगों में से किसी का पति या भाई वयनाड[1] में नौकरी करता होगा।

इन लोगों के पार होते ही अचानक मेरे पीछे अट्टहास और ऊंची आवाज में बातचीत सुनाई दी। सामने से आ रही एक युवती के साथ कुछ लोग गप्पें मार रहे हैं। फिर मुझे ऐसा लगा मानो वे सब मेरे पीछे आ रहे हैं। मैं मुड़कर देखना चाहता था लेकिन मन नहीं हुआ। सारी-की-सारी स्त्रियां ही थीं। सामने से आए ये झुंड अचानक क्यों वापस आ रहे हैं? हंसते-खेलते हुए वे अपने लक्ष्य तक जा रहे थे। शायद इनका लक्ष्य पीछे आने वाली युवती थी।

वे ऊंची आवाज में बात कर रहे थे। उन सब के स्वरों के बीच युवती के स्वर को पहचाना। उस के शब्दों में तीक्ष्णता है पर दुख की पृष्ठभूमि आद्यंत गूंज रही थी। यह झुंड सिनेमा देखने निकला था। बहुत दिनों की तैयारी के बाद वे आज निकले होंगे। सबको इकट्ठा करने में बहुत परेशानी हुई होगी। लेकिन क्या फायदा, सिनेमाघर में शोक मनाया जा रहा है....। सिनेमा आपॅरेटर काटिले पुरयिल दामू मास्टर की अचानक मौत हो गई है। हमेशा की तरह काम पर निकलने

1. वयनाड : केरल का एक ज़िला जो प्रसाधन सामग्री के लिए मशहूर है।

से पहले वे भोजन करने बैठे थे। उन्होंने आलू की सब्जी के साथ दो चपातियां खाई थीं। उनकी पत्नी ने भुनी हुई गर्मागर्म मछली लाकर रखीं तो उन्होंने एक और गर्म चपाती मांगी। जब तक वह चपाती बनाकर लाई, उनके शरीर की गर्मी खत्म हो चुकी थी। मृत्यु कितनी यादृच्छिक और दुर्बोध होती है, है न?...

शाम ढलने लगी। अरलीकोट की ओर जाने वाली सड़क के दोनों ओर बड़े-बड़े मकान हैं। वहां बिजली की बत्तियां हैं, लेकिन बहुत से घरों के बरामदे में तेल के दीये नजर आए। दूर से कीर्तन करने वाली एक लड़की की आवाज़ सुनाई दी। एक मजदूर जो शराब पिये हुए था, सड़क के किनारे पानी के पाइप के पास बैठकर उल्टी कर रहा था। वह काले रंग का था। उसके कंधों और गले पर बहुत पसीने के कणों पर सांझ की रोशनी पड़ी। वह आदमी "तोरत" पहने हुए था। उसने उसे उतारा और चेहरा साफ किया। उसकी लाल लंगोटी का अग्र भाग अग्निशिखा के समान प्रज्वलित होने लगा।

अचानक मेरे पीछे किसी के चलने और हांफने की आवाज सुनाई दी। प्रत्येक आहट में मिट्टी की गंध फैली थी। हांफने के कारण उसकी बदबू भी फैली। मैंने सोचा, शायद कुत्ता होगा, लेकिन यह सोच गलत निकला। जिस युवती को मैंने पहले देखा वह अब मेरे समानांतर चल रही है। पार्श्व दृष्टि से मैंने उसको अच्छी तरह देखा।

उसके बालों में नारियल के तेल का लेपन हुआ था और उस पर धूल जमी थी। मैंने देखा कि उसके गाल पर मील के पत्थर के समान एक मुंहासा खड़ा था। मुझे समझ में आया कि जिस भाव से मैंने उसे देखा उससे भी तीक्ष्ण भाव से वह मुझे देख रही थी। मुझे लगा कि वह मुझसे त्रस्त है। मुझे कुछ अजीब-सा लगा।

उसने अचानक प्रश्न किया, 'आप कहां जा रहे हैं?' मैं रुक गया, वह भी। उसका शारीरिक ढांचा मोहित करने वाला था। वह ऐसे खड़ी थी मानो मुर्ग़ी लड़ाई के लिए खड़ी हो। अब हम उस जगह पर खड़े हैं जहां दोनों ओर छोटे-छोटे घर हैं। मंदिर के समीप पहुंचते ही ये घर आकार में और छोटे दिखाई देने लगे। वह झोंपड़ी जिसका छप्पर नारियल के पत्तों से बना है, उसके उत्तरी भाग में अंधेरा होने के बावजूद कोई पत्थर पर कपड़ा धो रहा है। पास की झोंपड़ी में लालटेन की रोशनी

दिखाई दे रही है। झोंपड़ी के उत्तरी भाग से चक्की पीसने की आवाज आ रही है। मिट्टी के तेल और प्याज की गंध हवा में फैली है जो हमें दौड़ने के लिए मजबूर कर रही है।

मैं पूरी आजादी से प्रतिदिन राजपथ पर चलता रहता था और मुझसे एक अपरिचित युवती मेरे अस्तित्व का प्रश्न कर रही है।

"मेरी बात को सुना नहीं, आप किधर जा रहे हैं?" उसने निर्भय होकर पूछा था। वह ऐसे खड़ी थी मानो इस बार प्रश्न का जवाब मिलना उसका मौलिक अधिकार है। मैं पूछने वाला था कि इससे तुम्हें क्या मतलब? लेकिन मैं भीरु व्यक्ति नहीं, एक सीधा-सादा आदमी हूं।

मैंने अपने आपको संभाला और कहा, "मैं टहलने के लिए निकला हूं।"

"सर, वह तो मैं समझ गई। मैं यही पूछ रही थी कि आप का घर कहां है?"

"ओह, मेरा घर? मेरा घर तो मुनसिपल पार्क के पास है।" मैंने निस्संग भाव से कहा।

"सर, पार्क के पास तो बहुत सारे घर हैं।" सही बात है, उसने तो ठीक ही कहा मुनसिपल पार्क के पास बहुत सारे घर हैं।

"पार्क के ठीक सामने ईंट से बना घर।"

"ईंट से बना घर?" वह आश्चर्यचकित हो गई। "मैं समझ गई। एम.वी. देवन[1] हमेशा इस घर की बात करते थे। मुझे वह बात याद आ गई जो इस घर के बारे में वे कहा करते थे। वह घर जिस पर सीमेंट नहीं लगाया गया, नहीं वह घर जिस पर चूना नहीं लगाया गया।" वह जोर-जोर से हंसने लगी।

'सर, किसी से थोड़े रुपये उधार लेकर उस घर पर क्यों सीमेंट नहीं लगा लेते?"

मुझे हंसना और रोना एक साथ आया।

"ठीक है सर, अच्छा बताइए, आप क्या काम करते हैं?"

अब बचकर निकलना मुश्किल है। शाम गहरी हो गई थी। देर हो रही थी। अब कपड़े धोने की आवाज़ सुनाई नहीं देती। एम.वी. देवन द्वारा

---

1. एम. पी. देवन : केरल का विख्यात चित्रकार।

बनाए घर पर किसी की नज़र नहीं पड़तीं। बच्चों का कीर्तन सुनाई नहीं पड़ता। टिम-टिम तारे ही आकाश में अकेले दिखाई दे रहे हैं। कितना सन्नाटा! मंदिर तक पहुंचने के लिए रास्ता अभी और तय करना है। शाम की पूजा हो चुकी होगी। पीपल के पेड़ पर सांप और बावल ही बाकी रहेंगे। कोई बात नहीं। मैं चलने लगा, वह भी। उसने पूछा, "तुम क्या करते हो?"

"मैं डाक्टर हूं।"

"आप और डाक्टर! शक्ल से तो ऐसा नहीं लगता।" वह ऐसे हंस पड़ी मानो चट्टानों पर बीज पड़ रहे हों।

सच, मैंने कहा—"शक्ल से पता नहीं चला तो बातों से क्या पता चलेगा?"

"आप का नाम?"

"कुंजअब्दुल्ला।"

"क्या कुंज्जावुल्ला?"

"कुंज्जावुल्ला नहीं। पुनत्तिल कुंजअब्दुल्ला।" वह ऐसे खड़ी हो गई मानो उसको झटका लग गया हो। लेकिन जल्दी ही अपने आप को उसने संभाल लिया।

"अच्छा, वह आप हो!" फिर सन्नाटा छा गया। "डॉक्टर, आप भले आदमी हैं। अपने अस्पताल में मुझे नौकरी दिला दें न!"

"तुम क्या काम कर सकती हो?" मैंने पूछा।

"चाय बनाऊंगी। खाना बनाऊंगी। जूठे बर्तन मांजूंगी।"

मुझे यह सुनकर आश्चर्य नहीं हुआ क्योंकि मैं समझ गया कि वह कुंजउण्णी मास्टर[1] की कविताओं को पसंद करती थी। फिर सन्नाटा छा गया। वह क्या बता रही थी। क्या वह गर्म मिजाज वाली है? वह लड़की समय पर दवाई लेती है क्या?

उसने क्षमा मांगते हुए कहा, "माफ करना डाक्टर! मैं सिलाई कर सकती हूं।"

मैंने कहा, 'वह तो मेरा काम है, मुझे भी सिलाई आती है।"

उसने पूछा, "आप भी कपड़ा सीने वालों में से हैं?"

---

1. कुंजउण्णी मास्टर : केरल के लोकप्रिय कवि जो छोटी, सीधी और सरल बातों पर कविता लिखते हैं।

''नहीं, मैं सर्जन हूं। मैं धागे से नहीं केट-गट से सीता हूं। तुम्हारे जैसे कपड़ों को नहीं।''

''डॉक्टर, मैं जो कपड़ा सीती हूं वह मनुष्य की अंतड़ी से भी महंगा है।''

''तुम और तुम्हारा कपड़ा?'' मुझे बुदबुदाना पड़ा। उसने भी कुछ कहा। जिंदगी में मैंने कभी पुस्तकें नहीं पढ़ीं। स्कूल में मेरा लक्ष्य प्रत्येक कक्षा को पार करना था। पढ़ाई समाप्त करते ही नौकरी भी मिल गई। इसलिए मानवीय रिश्तों के बारे में मैं अनजान ही था। वरना मैं ऐसे माहौल में नहीं आ पड़ता।

अरक्कीलोट पहाड़ी की तराइयों में सड़क समाप्त होती है। सूर्यास्त हो चुका लेकिन रात अभी नहीं हुई। बीमारी और मृत्यु के बीच की अवस्था के समान किसी की प्रतीक्षा कर रहा है।

मुझे उसका चेहरा साफ दिखाई दे रहा है। दिन की अपेक्षा रात को मैं उसके चेहरे का भाव समझ रहा हूं। मैंने उसे पहले कभी नहीं देखा, न मेरा उससे परिचय था। फिर भी जब उससे जुदा होने का समय आया तो दुख होने लगा।

मैंने कहा, ''मैं मंदिर की ओर जा रहा हूं, फिर मिलेंगे।''

''मैं भी उस ओर जा रही हूं।'' वह मेरे साथ ऐसे चली मानो हम दोनों बरसों से साथ रहे हों। पगडंडी पर हमारी परछाईं हमसे भी ऊपर नज़र आई।

हम सीढ़ी चढ़ कर मंदिर के प्रांगण में पहुंचे। मंदिर के इर्द-गिर्द झाड़ियों में अंधेरा छा रहा है। धीमे प्रकाश में यहां-वहां बिजली की चमक दिखाई पड़ी।

उसने मुड़ते हुए कहा, ''मैं जा रही हूं। रात हो चुकी है, मां इंतजार कर रही होंगी।''

मैंने उससे कहा, ''यहां तक तो आ ही गई हो, मंदिर भी देख लो।''

फिर थोड़ी देर के लिए हम चुप रहे। उसने अचानक पूछा, ''मेरे बारे में कुछ पूछते क्यों नहीं?''

मैंने कहा, ''ठीक है। अच्छा बताओ, तुम्हारे घर में कौन-कौन है? मां-पिताजी, भाई या छोटा भाई?''

उसने खुशी से कहा, ''मैंने शादी नहीं की।'' लेकिन उसने पूछे गए

प्रश्न का जवाब नहीं दिया।

"इसलिए मैंने तुम्हारे पति के बारे में कुछ नहीं पूछा।" मैंने कहा।

"आपको यह कैसे पता चला?"

"मैं डाक्टर हूं न, शारीरिक ढांचा देखकर हम सब कुछ समझ जाते हैं।"

पुजारी बाहर आया। उस की रोमहीन फूली छाती पर फैली जनेऊ पर दीये टिमटिमाए। यह जनेऊ दो ध्रुवों को जोड़ने वाले धागे के समान फैला था। पुजारी ने तीर्थ-कटोरा नीचे रखा और मंदिर का दरवाजा बंद किया।

भगवान भीतर और उसका प्रकाश बाहर रह गया। पुजारी चला गया। मंदिर के परिसर में कोई नज़र नहीं आया। पूजा के लिए आए लोग लौट गए होंगे। एक-एक कर दीये बुझ रहे हैं मंदिर के सामने खड़े हों तो जलते हुए इन दीयों की गिनती करना मेरी आदत-सी थी। कुछ-एक दिनों में बत्तीस दीयों को जलते हुए मैंने देखा। कभी-कभी मेरे आने पर चार या पांच दीये ही बाकी रह जाते हैं। लेकिन कितनी भी देर हो, एक दीया जरूर मेरा इंतज़ार करता मिलेगा।

सुहावनी हवा में हज़ारों बात करने वाले आरहटी के पास खड़े होकर उसका सहारा लेते हुए उसने पूछा, "आप क्या सोच रहे हैं?"

वह मुझसे ऐसे बातें कर रही है मानो हमारा परिचय बरसों से है, जबकि बीच रास्ते में मिले अभी कुछ मिनट ही हुए हैं।

"मैं तुम्हारे घर के बारे में सोच रहा हूं।"

"मेरे घर में मां के सिवा कोई नहीं है। मेरी राह देखती मां आंगन में बैठी होगी।"

मैंने मजाक में पूछा, "तुम्हारे पिताजी?"

उसकी बड़ी-बड़ी आंखों में मंदिर का प्रकाश फैल गया। "पिताजी ने नब्बू के विषू[1] में आत्महत्या कर ली।" अपने परिवार का हाल एक ही वाक्य में समाप्त करते हुए वह बोली, "दूसरे दिन बालन भैया ने भी आत्महत्या कर ली।"

मंदिर में घी के दीयों में कुछ और बुझ गए। दीये एक-एक कर

---

1. विषू : केरल में मनाया जानेवाला एक त्यौहार।

बुझते थे और पीपल के पेड़ के पत्ते ज्यादा साफ दिखाई देने लगते थे। आकाश से उतरते हुए ईश्वर के निःश्वास से पीपल के पत्ते डोलने लगे। एक तरफ से रोशनी और दूसरी ओर से अंधकार में पीपल के पत्ते कांपने लगे थे।

मैं अनजाने ही पूछ बैठा, "फिर?"

"फिर क्या, सारी परेशानियां हमें झेलनी पड़ीं। मुझे, मां को, बालन भैया और तियत्ती को पुलिस पकड़ कर ले गई।"

मैंने पूछा, "पुलिस ने तुम लोगों को क्यों पकड़ा?"

"इसके बारे में मुझे कुछ नहीं मालूम। लेकिन इतना मालूम है कि बालन भैया की तियत्ती चार महीने से गर्भ से थी।"

मैंने कहा, "उसमें क्या गलती है?"

"तियत्ती भैया की पत्नी थी न?' उसने कहा, "बाप रे, डाक्टर!" फिर चारों ओर नज़र डाल कर वह निश्चय किया कि वहां कोई नहीं है। तब वह आगे बोली, 'बालन भैया मद्रास में थे। उन्हें नौकरी नहीं मिली। घर पहुंचने का कोई उपाय नहीं था, इसलिए 'वैसेक्टॉमी' ऑपरेशन करवा लिया। मुझे अच्छी तरह वह दिन याद है जब दो सौ पचास रुपये और हरा प्लास्टिक बैग लेकर घर पहुंचे थे।

बहरे व्यक्ति के समान आश्चर्य के भाव से खड़े मेरी तरफ उंगलियों से इशारा करते हुए उसने कहा, "इस घटना के बाद एक साल बीता भी नहीं कि उन्होंने जानू से विवाह कर लिया।" एक मशाल उठाए हुए मंदिर के पीछे की पगडंडी से कोई आ रहा है। एक विरोधाभास-सी, मशाल से निकली लाल रोशनी मंदिर के मैले खपरैल पर प्रतिबिंबित हुई।

पास के घरों में बरामदे और मेज़ पर रखी बत्ती की रोशनी में बच्चे पाठ दोहराने लगे। "मैं तुम्हारे पास आ रहा हूं मां! मत रोओ प्यारे हृदय पीड़ित।"

एक-दो घरों से रेडियो पर समाचार सुनाई दे रहे हैं। एक व्यक्ति पूरे बदन में तेल लगाकर तौलिया पहने हुए मंदिर की सीढ़ियां उतर रहा है।

मैंने कहा, "अच्छा तो मैं चलता हूं।"

"ठीक है डाक्टर!"

"तो आप?"

"मेरा घर तो मंदिर के ठीक पीछे है। वहां!' मैंने उसे धीमे प्रकाश

में उंगलियों से इशारा करते हुए देखा। उसने बिना किसी संकोच के कहा, "वहां तो बिल्कुल अंधेरा है।" कुछ कहे बिना मैं चलने लगा।

"डाक्टर!' उसने पुकारा... "मैं जा रही हूं।"

मैं रुक गया। "अरे डॉक्टर!"

"डाक्टर, एक बात और।"

"हां बोलो।"

"कुछ नहीं, बस एक ही दीया बाकी रह गया।"

इस बार उस का हाथ मंदिर के ऊपरी भाग की ओर इशारा कर रहा था।

"उस दीये के बुझने के बाद चलेंगे, क्यों?"

हां, वहां बस एक ही दिया जल रहा था।

●

चांदनी को मालूम है

☆ सारा जोसफ

तंकमणि की नींद खुली तो बिस्तर पर उण्णीकृष्णन नहीं था। यह सोचकर कि वह गुसलख़ाने में होगा, तंकमणि करवट बदलकर लेट गई। थोड़ी देर के बाद भी उण्णीकृष्णन की आवाज सुनाई नहीं दी तो उसने उठकर बत्ती जलाई। तंकमणि ने देखा कि दरवाजा खुला पड़ा है। नीचे की ओर उतरने के लिए लकड़ी की सीढ़ियां थीं। उस ओर का दरवाजा भी खुला पड़ा था। तंकमणि जल्दी-जल्दी सीढ़ियां उतरी। जल्दबाजी में उसकी नाभि में दर्द होने लगा। वह ठीक से सांस नहीं ले पा रही थी।

पुरानी सीढ़ियों से किसी के उतरने की आवाज ने मामा की नींद तोड़ दी। 'तंकमणि !' सीढ़ियों के नीचे खड़े मामा ने पुकारा। ''वह कमरे में नहीं है,'' तंकमणि ने रुदन-भरी आवाज में कहा। सारे घर में बत्तियां जल उठीं। चंद्रन और शेखर भी उठ गए। बरामदे में खर्राटे भरते सोए गोविंदन भैया और मोयदूटटी भी उठे। मशाल और टॉर्च चमक उठे।

'तंकमणि !' दक्षिण दिशा के कमरे से उण्णीकृष्णन की मां टटोलती हुई आई और चुपचाप खड़ी रहीं। मोतियाबिंद के कारण उसकी आंखों की रोशनी लगभग नष्ट हो गई थी और वह ठीक से सुन भी नहीं सकती थी। तंकमणि गिर पड़ी क्या? मां ने सोचा कि शायद तंकमणि गिर गई होगी। तंकमणि नाभि पर हाथ रखकर सीढ़ियां उतरी। उण्णीकृष्णन रोते हुए नदी पर चल रहा था। चांदनी के कारण नदी चमक उठी थी। आज शाम को भी मैंने जिस बावड़ी में स्नान किया वह गायब हो गई लगती है। यह कोई मंत्र-तंत्र का फल है। झपकी लेकर उठते ही बावड़ी सूख गई। बस और नहीं होगा, पानी के बिना कुछ नहीं होगा। सब कुछ मैल भरा है।

मृगतृष्णा के समान वह चांदनी की चमक की ओर भागा। उसने

नदी में पानी के बजाय चमकती रेत को पाया। नदी सूखी हुई थी। वह थक गया। अंतहीन रेत से भरी नदी में वह अपने पैरों को घसीटते हुए भटकता रहा। भय उसको मगरमच्छ के समान काट रहा था।

'अरे...उण्णीकृष्णा!' उण्णीकृष्णन को ढूंढ़ने वालों की संख्या बढ़ गई।

"कुएं के पास ढूंढ़ो," शेखरन ने कहा। तंकमणि डर गई। कहीं उण्णीकृष्णन कुएं की तरफ तो नहीं चला गया। कुएं के चारों ओर मुंडेर भी नहीं है। कुछ भी नहीं है। कुआं तो बहुत गहरा भी है। टॉर्च और मशाल लेकर कुछ लोग कुएं में ढूंढ़ने लगे। तंकमणि कांप उठी। कुएं का पानी निश्चल था। चांदनी वहां पानी में दिखाई दी और वह हंस रही थी। "मुझे नहीं लगता कि उण्णीकृष्णा यहां आया होगा।" ढूंढ़नेवालों में से एक ने कहा। उण्णीकृष्णन को ढूंढ़ने वाले मशाल और रोशनी के साथ नदी की तरफ पहुंचे। "तंकमणि तू अंदर जा," मामा ने कहा। तंकमणि बरामदे की ओर चली गई।

"तंकमणि तू किधर है?" उण्णीकृष्णन की मां टटोलती हुई दरवाजे पर पहुची। उनकी अधखुली आंखों में तंकमणि की परछाईं हिलने लगी। उन्होंने कहा, "गर्भवती होकर आधी रात में बाहर निकलती है।"

बरामदे की दीवार का सहारा लेकर तंकमणि बैठ गई। उसने मशाल की रोशनी को नदी में फैलते हुए देखा। पहले यह रोशनी एक साथ दिखाई दी, फिर भिन्न दिशाओं में फैल गई। इस दृश्य को देखकर ऐसा लगता था मानो चमकती हुई लाल आंखों वाले भूत दौड़ रहे हैं।

जब वे मुंबई में रहते थे, उण्णीकृष्णन को बिस्तर पर न पाने से तंकमणि जान जाती थी कि वह जरूर गुसलख़ाने में होगा। तंकमणि को बंद पड़े कमरों और गुसलखाने में ही उसे ढूंढ़ना पड़ता। तंकमणि के अंदाजे के अनुसार वह गुसलखाने के पाइप के नीचे भीगा हुआ खड़ा रहता। तंकमणि को देखकर वह दोनों हाथों को फैलाकर पूछता, "देखो तंकमणि, अब मेरे हाथ साफ हो गए हैं?" तंकमणि उसे गुसलख़ाने से बाहर ले आती। उसका हाथ पानी में मरी पड़ी हुई मछली के समान मोटा और सफेद होता। "हमारे पूर्वज यहां घूमते फिरते हैं तुझे इसकी खबर है क्या? यहां आ जा।" उण्णीकृष्णन की मां ने कहा। टटोलती हुई अपने ठंडे हाथों से उसने तंकमणि को छुआ। तंकमणि डर गई। उसके पेट में उण्णीकृष्णन का बच्चा हिल रहा था।

उण्णीकृष्णन घर से चलकर बहुत दूर पहुंच गया। वह पानी की खोज में यात्रा कर रहा था। पानी चाहिए। सभी चीज़ों के लिए पानी की ज़रूरत है। पानी के बिना कोई काम नहीं होता। तपती हुई रेत में उण्णीकृष्णन के पांव जल रहे थे। प्यासे भगाए गए कुत्तों के समान उसका शरीर पानी के लिए तरस उठा। ढूंढ़ने वाले रोशनी के साथ उस ओर चलने लगे जहां वह नीचे की ओर बहती थी। "कोई शक नहीं। यह पानी में दिखाई देने वाला भूत है," ढूंढ़नेवालों में से एक ने कहा। यह सुनकर मामा बेचैन हो गए। "लेकिन उण्णीकृष्णन की उम्र तो कम है।" ढूंढ़ने वालों में से किसी और ने कहा।

"बुजुर्गों का कहना है कि सत्तर-नब्बे की आयु वालों को ही जलभूत पकड़ते हैं लेकिन उण्णीकृष्णन की आयु तो तीस के करीब है। पच्चीस साल की उम्र में वह नौकरी के लिए मुंबई गया। उसकी शादी तंकमणि से अट्ठाईसवें साल में हुई।" मामा ने कहा।

"मुंबई में रहते समय उण्णीकृष्णन को शायद कुछ हुआ होगा। कहीं कुछ देखकर डर तो नहीं गया।"

नहीं-नहीं, उण्णीकृष्णन डरपोक नहीं है। बचपन से वह किसी भी चीज़ से डरता नहीं था। कॉलेज में पढ़ते समय वह रातोंरात नदी पार कर घर पहुंच जाता। यह कहते हुए कि उसे नींद नहीं आती, वह अनेक बार अकेले सुबह तक इस नदी की रेत में लेटा रहता। उसके सिर के पास रात भर पी हुई बीड़ी के टुकड़े पड़े रहते। लेकिन...

तंकमणि ने याद किया कि उण्णीकृष्णन बहुत डरता था। घर से बाहर निकलने में वह डरता था। सड़क पर चलने से डरता था। वह कहता कि खून दिखाई दे रहा हैं सड़क पर, रेल में, रेलवे स्टेशन में, बस में और ट्राम में सभी जगह खून ही खून है। कदम रखना मुश्किल हो रहा है। नीचे देखने में डर लगता है।

मामा आगबबूला हो गए। मामा के तुंबा में हवा भर गई। गंगे च यमुने चैव गोदावरी सरस्वती/नर्मदा सिन्धु कावेरी/जलेस्मिन् सन्निधिं कुरु.../

नारायाण मेरा तुंबा कहां है जिससे मैं पानी लेता हूं। शंकुण्णी मामा परेशान हो गए और वे घर के आसपास घूमने लगे। बाएं हाथ में पकड़े ख़ाली तुंबे से पानी हाथ में लिए-लिए शंकुण्णी मामा थक गए। गंगे च यमुने...च एव...बुदबुदाते-बुदबुदाते शंकुण्णी मामा थक गए। तपती

दोपहर में रेत गर्म हो गई। दूर-दूर तक रेत ही रेत दिखाई देती थी। शंकुण्णी मामा पागलों के समान नदी में चलने लगे। गंगे च....हवा लू में बदलकर शंकुण्णी मामा को अपने बाहुपाश में कसने लगी। जलती हुई रेत में भटकते-भटकते शंकुण्णी मामा गिर पड़े। उड़ती हुई गर्म रेत ने उन्हें ढंक लिया। ढूंढ़ने वाले जब वहां पहुंचे तो उन्होंने देखा कि शंकुण्णी मामा का हाथ रेत के ऊपर दिखाई दे रहा था। नीचे पड़े तुंबे में हवा गूंज रही थी। गंगे च यमुने....सब लोग एक-दूसरे को देखने लगे।

उण्णीकृष्णन ऑफिस से आने के बाद गुसलख़ाने की ओर दौड़ता। वह घंटों पैर साफ करता। इसके बावजूद पैर साफ़ नहीं होते तो वह गुसलख़ाने में रखे पत्थर पर पैर रगड़ता और फलस्वरूप उसके पैरों का चमड़ा निकल आता।

"उण्णी क्या कर रहे हो? इधर आओ।" तंकमणि उसे गुसलखाने से खींचकर ले आती। वह निःसहाय भाव से भयभीत होकर तंकमणि को देखता। वह धीमी आवाज में बात करता।

"तंकमणि, खून की गंध से रहा नहीं जाता?"

"कुछ नहीं उण्णी, यह सब तुम्हारा भ्रम है।"

"भ्रम? तो क्या मैं झूठ बोल रहा हूं?" उण्णी पांच-छह मंजिलों वाले उस मकान से तंकमणि को लगभग घसीटते हुए मकान के निचले हिस्से की ओर ले गया—तब सीढ़ियों में, आंगन में, गली में या फिर चौराहे पर खून बरसते हुए देखकर तंकमणि को उल्टी आने लगी।

मशालें बुझ गईं। मामा ने कहा, "कोई बात नहीं, मेरे पास टॉर्च है न। वैसे चांदनी रात में सूखी रेत पर चलने के लिए रोशनी की जरूरत नहीं।" चांद की रोशनी में सूखे पत्ते चमक रहे थे। वहां दूर तक कोई आदमी नज़र नहीं आ रहा था। केवल कुछ झाड़ियां और गायें दिखाई दीं।

ढूंढ़ने वालों को शक हुआ। क्या उण्णीकृष्णन इतनी दूर आया होगा? उसका पागलपन तो पानी से जुड़ा हुआ है। ऐसे में सूखी नदी में वह नहीं घूमेगा। चलो, वापस चलकर कहीं और ढूंढेंगे। मामा नहीं माने। वह तेजी से बढ़ते गए। चलते हुए उन्होंने कहा, "तुम लोग नहीं जानते, यह नदी उसको जान से प्यारी थी। वह यहीं होगा।"

उण्णीकृष्णन की मां लालटेन लेकर बरामदे में आई। लालटेन के कांच के अंदर बत्ती रो पड़ी। "तंकमणि, यहां के लोग कहां चले गए?

किसी की आवाज सुनाई नहीं देती।'' जवाब न मिलने पर मां ने चारों ओर देखा। बरामदे में बैठी तंकमणि की परछाई ज़रा-सा हिली। ''अरे यह तो तंकमणि ही है।'' तंकमणि पैर पसारकर बैठी थी और ख्यालों में खो गई थी। खाना लेकर उण्णीकृष्णन पाइप की ओर गया था।

''अरे खाना कहां ले जा रहा है?''

उण्णीकृष्णन व्याकुल हो गया। वह धीमी आवाज में बोला, ''तंकमणि सब कुछ विषैला है। खाना और सब्ज़ी को किस भरोसे खाएं।''

''खाना तो मैंने बनाया है। मुझ पर भरोसा नहीं है क्या?''

''मुझे तुझ पर भरोसा है। चावल के दाने में विष भरा है। तंकमणि, अपना चावल भी यहां ले आओ। पानी में साफ करने के बाद ही खाना।''

गुसलखाने में चावल के दाने बिखर गए। बहुत समय से अंदर दबे आंसू अचानक आम के बौर के समान फूट पड़े। तंकमणि के खाने में आंसू की बूंदों को गिरते देख उण्णीकृष्णन को दुख हुआ।

उण्णीकृष्णन की मां अंधेरे में अपने बेटे की राह देख रही थी। उसकी आंखों में दर्द होने लगा। ''कितने बजे हैं?'' उसने तंकमणि के पास जाने की कोशिश की। फिर उठकर दक्षिण दिशा के कमरे की ओर गई।

चलते-चलते अचानक उण्णीकृष्णन को नदी का ठंडापन महसूस हुआ। गीली रेत में उसके सिर से एड़ी तक ठंड भर गई। वह नीचे बैठ गया। वह दोनों हाथों में रेत लेकर सूंघने लगा। नदी के पानी की-सी सुगंध।

अचानक उण्णीकृष्णन हाथ से रेत को खोदने लगा। रेत को खोदने के बाद भीतर पानी निकला। पानी को देखकर वह बच्चों के समान खेलने लगा। वह खड़ा हो गया और चिल्लाने लगा। उसकी आवाज सुनते ही साथियों ने नदी के उस पार से आवाज दी। उण्णीकृष्णन ने देखा कि वे लोग मशाल लेकर दौड़े आ रहे हैं। खुशी से वह रेत खोदने लगा। जल्दी ही उसके दोनों तरफ मिट्टी का टीला उठ खड़ा हुआ। रात्रिकालीन पक्षी सूखी चोंचें खोले उड़ते हुए नीचे आ गए। एक गाय उसके पास खड़ी थी।

अत्यंत खुशी से उण्णीकृष्णन ने अंजलि भर पानी लिया। उस पानी में चांद की रोशनी पड़ रही थी और वह हंस पड़ी। काली लालटेन को लेकर तंकमणि कुएं की ओर गई। चांद की रोशनी कुएं में पड़ रही थी। जलपिशाच के उपद्रव से मरे पूर्वजों के भूत चांद की रोशनी में उड़ते नज़र आए।

"मेरी परीक्षा ले रहे हो?" तंकमणि ने नीरस भाव से कहा।

"मुझे गांव जाना है। वहां जाकर मैं कुएं के पानी में नहाना चाहता हूं। हमारे कुएं में एक ऐसी चीज डाली गई है जो पानी को अंदर से और बाहर से शुद्ध करती है। तंकमणि चलो न!" उण्णीकृष्णन ने कहा। "तुम्हारे कहने पर मैं तुम्हें गांव लेकर आई। मुझे कुछ समझ में नहीं आता।" वह तंकमणि की परछाई ढूंढ़ रही थी। तंकमणि के हांफने की आवाज उसे चारों ओर सुनाई दी। ज्योतिषी ने सुझाव दिया कि पूर्वजों को और जलभूतों को काबू में लाना पड़ेगा। "इसके लिए जो भी प्रायश्चित करना है, वह कल ही कर लीजिए।" मामा ने कहा, "प्रायश्चित करने के लिए उण्णी का होना जरूरी है।" वह तो अभी तक नज़र नहीं आया। ढूंढ़ने वाले चल-चलकर थक गए।

"आखिर वह कहां गया होगा।" मामा की आवाज कठोर हो गई। उनको गुस्सा आ रहा था। पूर्वजों को काबू में लाना पड़ेगा, वरना मुश्किल है। पता नहीं उण्णीकृष्णन नदी में डूब गया हो या फिर कुएं में! ये पूर्वज मौका पाकर उसे पानी में खींच ले गए होंगे। आप लोग मेरी बात का विश्वास कीजिए।" मामा बोले।

उण्णीकृष्णन और तंकमणि जिस दिन मुंबई से आए उस दिन क्या हुआ? उण्णीकृष्णन पूजा के कमरे से श्रीरामचन्द्र की मूर्ति और अध्यात्म रामायण की पुस्तक को कुएं के पास ले गया। उसने मूर्ति को साफ़ किया और उस नग्न मूर्ति को सूखने के लिए रख दिया। उसने रामायण की पुस्तक को इतना साफ किया कि उसके पन्ने उड़ गए और कुएं के पानी में बिखर गए। घर में उण्णीकृष्णन को ढूंढ़ते-ढूंढ़ते तंकमणि थक गई। वह घर के बाहर आई तो देखा कि उण्णीकृष्णन कुएं के पास बैठकर अध्यात्म रामायण के उत्तर कांड को साफ कर रहा है। गलती करने के बाद जिस प्रकार छोटे बच्चे पेश आते हैं, उसी प्रकार उण्णी पेश आया। उसने तंकमणि की तरफ देखा। "इसे साफ़ करना था। पूरा मैल भरा था।"

उन दिनों चंद्रन और शेखर ने जिद की कि उण्णीकृष्णन का एक अच्छे मनोचिकित्सक से इलाज कराएं। मुंबई में तंकमणि ने उण्णीकृष्णन को एक मलयाली डॉक्टर को दिखाया था।

"परिस्थितियों से छुटकारा पाओ।" डॉक्टर ने कहा था। तंकमणि असमंजस में पड़ गई। परिस्थितियों से छुटकारा कैसे पाएं? उण्णीकृष्णन

के अवचेतन को किस पानी से साफ किया जा सकता है?

वेतन मिले रुपयों को उण्णीकृष्णन धोकर, साफ कर उसकी निगरानी करता। उसके चेहरे में व्यक्त बेचैनी को तंकमणि अपने हृदय में कई बार महसूस कर चुकी थी। तंकमणि का चुंबन लेते समय उण्णीकृष्णन मुंह साफ करने के लिए गुसलखाने की ओर दौड़ता। तब उण्णीकृष्णन में जो भय और बेचैनी नजर आती उसे केवल तंकमणि ही समझ सकती है। मां को खत लिखने पर यह कहते हुए कि शब्द खराब हो जाएंगे, वह घंटों कलम साफ करता रहता। उण्णीकृष्णन कहता कि सहलाती हुई हवा में गोली चलने की आवाज और बदबू आ रही है और वह दरवाजा, खिड़कियां और रोशनदान बंद कर देता। ऐसे में तंकमणि परिस्थितियों से कैसे छुटकारा पाएगी?

अपने साथ चल रहे लोगों को चौंकाते हुए अचानक मामा ने ऊंची आवाज में पुकारा, ''उण्णीकृष्णन...!'' नदी के उस पार वह आवाज गूंज उठी। मामा ने बार-बार पुकारा, मानो उण्णीकृष्णन को देखा हो। पहले वे तेजी से चलने लगे, बाद में दौड़ने लगे।

उण्णीकृष्णन ने जो गड्ढा खोदा उसमें पानी भर गया। उसका पैर भीग गया। वह खुशी के साथ पानी में खेलने लगा। उसने नम गड्ढे से रेत निकालकर ऊपर फेंकी। वहां खड़ी गाय और पक्षियों को पानी पिलाया। उसने नदी के स्तन को चूसा। अमृत का फव्वारा फूट पड़ा। उण्णीकृष्णन के घुटनों तक पानी पहुंच गया। गड्ढे की रेत ढहने लगी। गड्ढे का आकार बढ़ता गया। नदी के नीचे से मौन रूप से फूटा फव्वारा उण्णीकृष्णन के पैर की ओर बढ़ा। उसकी कमर तक पानी पहुंच गया। वह उसमें खेलने लगा। उसके पैरों के पास की रेत ढहने लगी। अब पानी उसकी छाती तक पहुंच गया। वह उसमें तैरते हुए स्नान करने लगा।

''उण्णीकृष्णन!'' दूर से बहुत सारे लोग और रोशनी दिखाई दे रही है। उण्णीकृष्णन डर गया। उसे लगा कि ये लोग फौव्वारे को नष्ट कर देंगे और करुणा को सुखा देंगे।

''इधर मत आओ!'' उण्णीकृष्णन ने ऊंची आवाज में कहा। उसने हाथ फैलाकर पानी को गले लगाया। गड्ढा और ढह गया। स्नेह प्रदान करने वाली नदी का कारुण्य उण्णीकृष्णन के पैरों की ओर बहा। अब पानी उसके गले तक पहुंच गया। ''बेटे, उण्णीकृष्णन...।'' कोई पुकार रहा है।

उण्णीकृष्णन ने सोचा कि शायद मां या तंकमणि पुकार रही होंगी।

"लोग शोर मचा रहे हैं। वे मशाल और रोशनी के साथ मेरी ओर दौड़ कर आ रहे हैं। नहीं, मैं उस पानी को नष्ट नहीं होने दूंगा।" उसने दोनों हाथों से पानी को छाती से लगा लिया। हवा बहने लगी। उसने नारियल के पानी के समान, मां के दूध के समान एक घूंट पानी पिया। एक बार, दो बार...उसने बार-बार पानी पिया!

ढूंढ़ते हुए लोग रोशनी के साथ जब वहां पहुंचे तो वहां कुछ भी दिखाई नहीं दिया। गड्ढे को देखकर उन्होंने सोचा, दिन में सूखी नदी में शायद कुछ बच्चों ने खेलते हुए यह गड्ढा बनाया होगा। गड्ढे के शांत जल में चांदनी पड़ रही थी और वह हंस रही थी।

●

संशोधन

☆ एन. एस. माधवन

बुझी हुई पाइप मुंह से निकाले बिना चुल्याट कार्यालय की खिड़की से बाहर को खड़े देखते रहे। उन्हें उस दिन की सड़क साधारण रात के दस बजे की सड़क से भिन्न नज़र आई। भीड़ कम हो चुकी थी। सोडियम वेपर की बत्तियों के पीले प्रकाश में सांझ के मुरझाये फूल की तरह मद्धिम चमक थी। पाइप के अग्र भाग पर ज्वर का खट्टा असर उमड़ आने पर चुल्याट पाइप को मेज पर रखने के लिए खिड़की से हटे। सभी ऐतिहासिक घटनाओं के वक्त चुल्याट ज्वर से पीड़ित रहे थे। गांधीजी को जब गोलियां लगीं तब भी वे ज्वर से पीड़ित थे।

चुल्याट ने इंटरकाम के जरिए कहा, ''मल्लीक, मैं जा रहा हूं, तेज बुखार है।''

'सर' थोड़ी देर के लिए शब्दों के न मिलने से असमंजस में पड़कर मल्लीक ने कहा ''सर, आज का संपादकीय?''

''संपादकीय?'' संपादकीय लिखने के लिए ही विश्वनाथन को वेतन देकर नौकरी पर रखा है।''

''सर वह बात नहीं, आज का संपादकीय आपको ही....''

चुल्याट बुखार में तप रहे थे अतः जरा जोर से बोले, ''विश्वनाथन ही काफी है।''

''पहले पृष्ठ पर आपको ही....नीचे नाम देकर...''

''उस सबकी जरूरत नहीं है। विश्वनाथन ही काफी है। वह भी हमेशा की तरह बीच के पन्ने में।''

फोन नीचे रखने के बाद मल्लीक ने धीमे प्रकाश में अपनी मेज के चारों ओर बैठे लोगों को देखा। सुहरा के सिवा नाइट शिफ्ट के सभी

सह-संपादक शाम से ही मल्लीक के सामने शरणार्थियों के समान बैठे थे। केवल सुहरा अपनी मेज पर रखे कम्प्यूटर को ताकती रही।

"सुना नहीं?' मल्लीक ने सभी को देखते हुए पूछा, "मुख्य संपादक के.के. चुल्याट घर जा रहा है। कहता है कि उसे बुखार है।"

चित्रा रामकृष्णन ने आत्मविश्वास के साथ पूछा, "आज?"

मल्लीक ने कहा, "हां, आज ही।"

सह-संपादकों में वरिष्ठ अभिजीत सन्याल ने कहा, "क्या आज, आज? अयोध्या में कुछ गुंबदों के गिरने के सिवाय आज का दिन के.के. चुल्याट के लिए खास महत्त्व का नहीं। पुराने टाईपराइटर के समान कम्प्यूटर पर सुहरा के जोर से दबाने की आवाज सुनकर अभिजीत चुप हो गया।

विजयन ने कहा, "कछुआ।"

"कछुआ?" नौकरी में नई-नई आई चित्रा आई रामकृष्णन चुल्याट के उस नाम से अपरिचित थी।

नकुल केलकर ने स्पष्ट किया, "उस दरवाजे को खोलकर बीच में वह अपना गंजा सिर बाहर निकालता है इसके सिवा चुल्याट का शरीर किसी ने देखा नहीं। इसलिए उसे कछुआ नाम से पुकारते हैं।"

मल्लीक इंटरकॉम के जरिए बात करने लगा, "विश्वनाथन जी, मैं समाचार संपादक मल्लीक बोल रहा हूं। मुख्य संपादक ने कहा कि आज भी संपादकीय आप ही लिखें।" मल्लीक ने चुल्याट की नकल करते हुए चिकनी आक्सफोर्ड शैली में बातें कीं, "संपादकीय को भावुक नहीं होना चाहिए। विवेकशीलता की लय को खोना नहीं चाहिए और किसी भी तरह यह नहीं लिखना चाहिए कि आज भारत के इतिहास का काला दिन है।"

जब मल्लीक ने फोन नीचे रखा तो विजयन ने आश्चर्य भाव से पूछा, "कछुए ने ऐसा क्यों कहा?"

मल्लीक ने कहा, "कल के सभी समाचार-पत्रों में ये ही पंक्तियां होंगी।"

नकुल कलेकर ने आराधना भरे भाव से कहा, "कछुए को भाषा से यह लगाव आक्सफोर्ड से प्राप्त हुआ होगा।"

"कछुआ" दरवाजा खोलकर सिर बाहर निकालते हुए चुल्याट को

देखकर विजयन ने कहा। विजयन और नकुल नीचे विखरे पड़े न्यूजप्रिंट के टुकड़ों को देखने के बहाने बैठे रहे। चित्रा ने अपनी हंसी रोकने की कोशिश की। अभिजीत ने घृणा भाव से चुल्याट की तरफ देखा।

''मल्लीक, मुख्य समाचार ठीक कर दो। उसके प्रिंट आउट देखने के बाद मैं जाऊंगा।'' चुल्याट ने सिर अंदर कर लिया। वह सीधे खिड़की के सामने गया जहां वह हमेशा खड़ा रहता था। सड़क पर भीड़ कम होते ही जोर से घंटी बजाते हुए एक फायर ईंजन तेजी से गया।

चुल्याट ने हथेली पर दीर्घ निःश्वास छोड़ते हुए बुखार का ताप मापने की कोशिश की। उन्होंने गुसलखाने की अल्मारी से दो गोलियां निकालीं और निगल डालीं। जब 'कमोड' पर पेशाब करते वक्त कमजोरी के कारण दीवार का सहारा लेना पड़ा, तब चुल्याट को अपनी सत्तर वर्ष की आयु का एहसास हुआ। गुसलखाने से वापस खिड़की की ओर चलते समय चुल्याट कम्प्यूटर के कमरे में एक क्षण के लिए रुके। उसमें अक्षरों का प्रवाह कम होता गया। एक कामातुर जुगनू के पीछे के भाग के समान हरे प्रकाश में करसर धड़क रहा था। अचानक पीछे से किसी की आवाज सुनकर चुल्याट ने मुड़कर देखा। चुल्याट ने देखा कि एक कर्मचारी मुख्य समाचार का प्रिंट आउट ध्यान से मेज पर रखने के बाद वापस जा रहा है। उस पर नज़र दौड़ाने के बाद चुल्याट ने इंटरकॉम से अपने सचिव से कहा, ''गाड़ी का इंतजाम करो, मैं जा रहा हूं।''

''चुल्याट चला गया।'' मल्लीक ने मेज के चारों ओर इकट्ठे सह-संपादकों को देखा। अभिजीत सन्याल ने सभी से कहा, ''चलो, चाय पी आते हैं। उसकी बात को पूरा सुने बिना विजयन, नकुल और चित्रा उठ खड़े हुए। चित्रा ने सुहरा के पास जाकर उसके कंधों पर हाथ रखकर पूछा, ''चाय पीने के लिए आ रही हो?''

अचानक उनके सुहरा के साथ जुड़ने से थोड़ी देर के लिए सब चुप रह गए। अकेले बैठने के भय से मल्लीक उठकर खेल संपादक की मेज की ओर चला। जमीन के नीचे के हिस्से के कैंटीन की सीढ़ियां उतरते वक्त शीत बढ़ने लगा था। कैंटीन के सीमेंट से बने हुए पक्के फर्श पर चाय के दाग और सिगरेट बुझाने के दाग इधर-उधर बिखरे पड़े थे। कांच की अल्मारी में पुराने समोसे रखे हुए थे। स्टील की मेज के चारों ओर चित्रा को छोड़कर बाकी सब बैठ गए। चित्रा पास की मेज से एक कुर्सी

लेकर सुहरा के पास बैठी थी। शीशे की मेज पर अभिजीत के एक-दो बार खटखटाने पर फूलचंद आया।

अभिजीत ने कहा, "फूलचंद पांच चाय, जल्दी।"

"बाबूजी, आज मैं अकेला हूं। कर्फ्यू की खबर पाते ही सभी लोग घर चले गए, ताकि जो भी चीज मिले खरीदकर रख लें।'

चित्रा ने कहा, "वह किसलिए?"

"बेटी, कर्फ्यू लग जाने से गरीबों को ही ज्यादा परेशानी होगी।"

"फूलचंद जी आप क्यों नहीं गए?"

"मैंने बनिये से कुछ रुपये उधार मांगकर रोकड़ विभाग के मेवाराम को दिए हैं, ताकि बीस किलो आटा और आधा बोरी आलू खरीदकर घर पर दे आएं। कैंटीन बंद होने से समाचार कक्ष में काम करने वाले मुश्किल में पड़ जाएंगे न? बाहर ढाबे बंद हो चुके हैं।"

फूलचंद के रसोईघर से लौटने के कुछ देर बाद गैस स्टोव की आवाज कैंटीन में फैली। अभिजीत ने अपने बालों पर, जो पकने लगे थे, हाथ फेरकर सुहरा से पूछा, "सुहरा, चुपचाप क्यों बैठी है? वह भी इतनी देर?"

सुहरा ने अभिजीत को तीक्ष्ण भाव से देखा। थोड़ी देर के सन्नाटे के बाद विजयन ने हंसने की कोशिश करते हुए कहा, "पता है, फूलचंद और दूसरे साथियों के सब्जियां खरीदने के लिए भटकते समय अभिजीत ने क्या किया? खबर सुनते ही स्कूटर पर जाकर तीन बोतल रम खरीदी। दुकान बंद हो जाए तो?"

केवल चित्रा उदारतापूर्वक हंसी, ताकि विजयन अकेला न हो जाए। अभिजीत मेज के ऊपर रखे शीशे को पकड़कर कहने लगा, "मैं अर्ध रात्रि का शिशु हूं। रशदी के अर्ध रात्रि के शिशुओं समान 1947 में कलकत्ता में जन्म लिया। धर्मों से दूर, विज्ञान की प्रगति में विश्वास रखने वाला नेहरूवादी बालक। मां अच्छी तरह रवींद्र संगीत अलापती थीं। उनका यह गुण थोड़ा मुझे भी मिला। साठ (1960) तक पहुंचते-पहुंचते टैगोर ने बीटल्स के लिए मार्ग प्रशस्त किया।

"बीटल्स?" चित्रा ने कहा, "अभिजीत तू प्राचीन है। बीटल्स हमारी पीढ़ी के लिए शास्त्रीय संगीत है।"

"चित्रा, तुम्हारी पीढ़ी का जन्म होने के पहले ही वियतनाम में हो ची मिन नाम का एक व्यक्ति था। सारेबोन में सार्त्र, लंदन में तारिक अली। बंगाल में चारु मजूमदार, कानू सान्याल और जंगल संताल। एक

ही चारपाई पर लेटकर ऑक्सीजन सिलेंडर से सांस लेते हुए चारु मजूमदार ने मेरे माथे पर बपतिस्मा का जल छिड़का। तब मैं आय.आय.टी. खड्गपुर में था, इसलिए कंधे पर थैली डालकर जातीय हड़ताल की खोज में मुझे ज्यादा दूर नहीं जाना पड़ा। बिहार के जंगल पास ही तो थे। फिर प्रतिक्रिया का समय था। कुछ दोस्त लापता हो गए। जो दोस्त मिले वे बात नहीं करते थे। उन्माद और मृत्यु के बीच थोड़ी-सी आत्मवंचना। थोड़ी-सी शराब। अंत में दिल्ली के लिए काल्का मेल पर चढ़ना....''

नकुल ने कहा, ''मेरा बचपन सरल था। बंबई के शिवाजी पार्क के सभी बच्चों को गावस्कर बनने की ललक थी।''

सभी ने विजयन की तरफ देखा। विजयन ने सिर झुकाकर बैठते हुए कहा, ''मुझे कुछ नहीं कहना। अब हमारी अवस्था प्लेग फैलने के कारण सराय में शरण लेने वालों के समान है। कान्टेनबरीस कहानियां कहने वाले।''

कार का शीशा थोड़ा-सा नीचा किया हुआ था, जिसकी दरार से बही हवा से चुल्याट के बुखार में थोड़ा फर्क आया। शीतोष्ण के अचानक बदलने के कारण उनके कानों की नसें फूलने लगीं। ड्राईवर के कंधों पर हाथ रखते हुए चुल्याट ने कहा, ''बहादुर, डाक्टर इकबाल के घर चलो। मेरी तबीयत ठीक नहीं है।''

जब चुल्याट इकबाल को देखते हैं तब उन्हें एक ही बात याद आती है। इंग्लैंड में साथ पढ़ा हुआ मसूद जो सुन्नत के बाद सफेद कपड़ों के छोटे से शिविर में लेटा है, इस दृश्य को पहली बार अपने बड़े बेटे इकबाल को दिखाने की याद। इकबाल के घर के बरामदे में रोशनी नहीं थी। अंदर प्रवेश करने के लिए चुल्याट द्वारा गेट खोलने की आवाज सुनते ही फरहा ने देहली पर आकर बत्ती जलाई।

चुल्याट ने कहा, ''बेटी, इकबाल घर पर है?'' फरहा कुछ कहे बिना अंदर चली गई। कुछ देर बाद हल्के रंग की सलवार सूट पहनकर अपने पिता के समान पूरी तरह पठानी वेश में इकबाल बाहर आया।

''इकबाल, मुझे बहुत बुखार है, तू ज़रा देख।'' इकबाल ने चुल्याट की जीभ के नीचे थरमामीटर रखा। हमेशा की तरह चुल्याट को उसके लोहे का खट्टापन अपरिचित-सा लगा। चुल्याट के हाथ की मांसपेशियों में रक्तप्रवाह-मापी यंत्र बांधकर इकबाल हवा भरने लगा तो उनका हाथ दर्द से कराह उठा। जांच करने के बाद इकबाल भीतर चला गया। वह सफेद द्रावक से भरा सिरींज लेकर आया। इंजेक्शन लगाते समय हमेशा

की तरह चुल्याट की आंखें बंद हुईं।

इकबाल ने कहा, "कल तक सब ठीक हो जाएगा।" इकबाल और फरहा चुपचाप बैठे रहे। जब चुल्याट को समझ में आया कि उनके इस तरह बैठने का कोई मकसद नहीं है, तो वे उठ गए।

फरहा ने कहा, "अंकल, शुक्रिया।"

"शुक्रिया?"

"अंकल आप ही हमारे एकमात्र हिन्दू मित्र हैं, जिन्होंने आज की घटना के बारे में हमें सूचित नहीं किया। बाकी हमसे नाता रखने वाले सारे हिन्दू मित्रों ने फोन के जरिए या खुद आकर हमें सांत्वना देने की कोशिश की। जैसे मृत्यु की खबर पाकर लोग सम्मान के साथ पेश आते हैं।"

चुल्याट ने इकबाल और फरहा की ओर मुड़कर देखा और कहा, "बच्चों, मैं कब से तुम लोगों के लिए हिन्दू बना?"

इकबाल ने कार का दरवाजा खोला। सर्दी का मौसम होने के कारण बहादुर ने पहले से कार चालू कर रखी थी। इकबाल और फरहा से विदा होते ही चुल्याट ने बहादुर से कहा, "गाड़ी कार्यालय की ओर ले चलो।"

समाचार कक्ष नींद छोड़कर समाचार पत्र निकालने के अंतिम दौर में था। मल्लीक कई बार प्रेस जाकर वापस लौटा था। सुहरा के सिवा तीन सह-संपादक अंतिम समाचार इकट्ठा करने के लिए टेलेक्स और फैक्स के सामने इकट्ठा खड़े थे। विजयन ने पूछा, "विश्वनाथन के संपादकीय में जोर नहीं है?"

अभिजीत ने कहा, "कछुआ को वैसा संपादकीय नहीं चाहिए। उन्हें विवेक की लय चाहिए।"

चित्रा ने हंसते हुए कहा, "कछुआ अब तक गहरी नींद में होगा।"

"मल्लीक!" समाचार कक्ष में अचानक चुल्याट की आवाज गूंज उठी। चित्रा को विश्वास नहीं हुआ कि चुल्याट ऊंचे कद का सूट पहने वृद्ध व्यक्ति है, जिनके होठों में पाइप है और ऐसा चलते हैं मानो वे समाचार कक्ष को नाप रहे हों।

मुख्य संपादक को पहली बार समाचार कक्ष में देख खेल संपादक और आर्थिक संवाददाता आश्चर्य से उठकर खड़े हो गए। दूसरे दिन के समाचार पत्र में औचित्यपूर्ण कार्टून बनाने में नाकामयाब कार्टूनिस्ट द्वारा थकी हुई आंखों से फेंके गए कागज के टुकड़ों को लेकर अपनी ओर आने वाले चुल्याट को मल्लीक ने घूरकर देखा। सुहरा अपनी जगह पर ही रही।

नीचे प्रेस की मशीनें ऐसे कुड़बुड़ाने लगीं जैसे दूर के पहाड़ों से पावस ऋतु के आगमन में आवाज आती है।

मल्लीक की मेज पर प्रिंट आउट रखते हुए चुल्याट ने पूछा, "मल्लीक, मुख्य समाचार का शीर्षक किसने दिया?" सुहरा के अलावा बाकी सभी सह-संपादक मल्लीक की मेज के चारों ओर इकट्ठे हो गए।

"मल्लीक कुछ कहते क्यों नहीं? यह शीर्षक किसने दिया?"

मल्लीक घबराहट में बिना कुछ कहे खड़ा रहा।

"वह जो भी हो, आगे से इस समाचार पत्र के लिए काम न करे।" चुल्याट के होंठ क्रोध से कांप रहे थे। इतने में सुहरा और समाचार कक्ष में काम करने वाले सभी मल्लीक की मेज के चारों ओर इकट्ठे हो गए। सुहरा ने सिर झुकाते हुए कहा, "मैंने लिखा सर!"

थोड़ी देर के लिए चुल्याट चुप रहे। एक-दो बार पाईप को जोर से पीने के बाद उन्होंने विजयन से मेज पर पड़े हुए समाचार देने का इशारा किया। चुल्याट ने सुहरा के माथे पर हाथ फेरते हुए कहा, "सुहरा पेंसिल दो।"

मल्लीक ने चुल्याट को मेज पर पड़ा हुआ बोलपॉयंट पेन दिया। चुल्याट ने सभी से कहा, "मैंने जब मांचेस्टर गार्डियन में पत्रकारिता शुरू की थी तब वेल्स का वयोवृद्ध पत्रकार हमेशा कहा करता था—नीली पेंसिल संपादकों का हथियार है। नीली पेंसिलों का समय अब नहीं रहा, फिर भी इसका आज मैं उचित प्रयोग करूंगा।"

चुल्याट ने झुककर मेज पर रखे मुख्य समाचार, जिसका शीर्षक सुहरा ने कम्प्यूटर पर टाईप कर रखा था 'विवादास्पद पूजा-स्थल नष्ट भ्रष्ट' का पहला शब्द रुखानी के समान कलम को पकड़कर बार-बार काटा। फिर कांपते हाथों से मोटे अक्षरों में काटे हुए शब्द के ऊपर लिखा, 'बाबरी मस्जिद।'

सुहरा की बड़ी आंखों से आंसू बहे। उसने चुल्याट को देखकर कहा, "शुक्रिया, सर।" बुखार के फिर से चढ़ने से सिर नीचा किए अपने कमरे में प्रवेश कर दरवाजा बंद करने तक चुल्याट को समाचार कक्ष में मौजूद सभी एकटक ताकते रहे।

लौटते हुए

☆ सी. वी. श्रीरामन

उस जमाने में किसी को यह मालूम भी नहीं था कि निजामुद्दीन नाम का कोई स्टेशन भी होता है। तब केवल एक ही रेलगाड़ी थी, ग्रांड ट्रंक एक्सप्रेस। ग्रांड ट्रंक कहने से कोई मजा नहीं आता। जी.टी. कहना पड़ता है। आजकल तो दिल्ली से रवाना होने पर घर के पास ही उतर सकते हैं, बीच में कहीं ठहरने की जरूरत नहीं पड़ती। उन दिनों मद्रास-कोचिन एक्सप्रेस चढ़कर मद्रास पहुंचा जा सकता था। सूर्योदय देखकर सात बजे से पहले वापस होटल पहुंचा जा सकता था। केरला भवन में पेसेंजर चार्ज में ठहर सकते थे। आठ आने में ही स्नान करना, पाखाना जाना, दांत साफ करना, सब कुछ हो जाता था। बाद में केरला भवन होटल से दोसा और अंडा खाना। फिर कमरे में लेटना। जी.टी. एक्सप्रेस का समय साढ़े दस बजे का है। कहीं पर पढ़ा था कि यूरोप में कहीं पर ही स्लीपर क्लास रिजर्वेशन था। भारत में इस प्रकार के रिजर्वेशन को कार्यान्वित करना मुश्किल है क्योंकि सत्तर प्रतिशत यात्रीगण विद आउट टिकट वाले होते हैं। वे एक टोली में आकर स्लीपर पर चढ़कर बर्थ पर कब्जा करते हैं। हरेक सीट में एक-एक आर्म्ड पुलिस के होने पर भी इनको मैनेज करना मुश्किल होता है।

आज तो निजामुद्दीन से कोंकण से होकर घर के निकट पहुंचने वाली मंगला रेलगाड़ी है। इसकी तो उम्मीद नहीं थी।

एक बात तो याद है। नई दिल्ली से रवाना होने वाली जी.टी. की शान किसी और गाड़ी में नहीं थी। उसके पास बैठे यात्री भी अलग थे। बुद्धिजीवी लोग दिल्ली से बुद्धिजीवियों से भरे केरल में जा रहे हैं। निजामुद्दीन स्टेशन से चढ़ने वाले केजुअल यात्रीगण थे। पूछने पर वे जवाब देते हैं नहीं तो नहीं। एक बार बात करते हैं फिर चुप रह जाते हैं। वे यात्रा पर ध्यान देते हैं, साथ यात्रा करने वालों पर नहीं। लेकिन दिल्ली से यात्रा करने वाले

सोफिस्टिकेटड होते हैं। ज्यादातर सेल्फसेंटर्ड। कुछ पूछो तो वे लोगों को आंकते हैं। जवाब देने से यदि उनको कोई फायदा न हो तो वे जवाब नहीं देते। वे ऐसे बैठे रहते मानो उन्होंने कुछ सुना ही नहीं।

वह टू-टायर कोच में चढ़ गया। पास की बर्थ के यात्रियों का इंतजार कर वह बैठा रहा। थोड़ी देर बाद एक बूढ़ा और बूढ़ी आए। वह चौंक गया क्योंकि बूढ़ी दिन में भी टार्च की सहायता से बर्थ का नंबर ढूंढ़ रही थी। नंबर प्लेट के पास तक टॉर्च जलाकर बूढ़ी ने नंबर ढूंढ़ा।

"नौ, दस, ये दोनों हैं।" बूढ़े ने बर्थ की ओर इशारा करते हुए कहा। बूढ़ी बर्थ में लेट गई। उनके हाथ कांप रहे थे। बीच-बीच में होंठ पलट जाते। जोर से दबाकर वह अपना होंठ ठीक करती थी। बीच-बीच में आवाज भी करती। वह सोचने लगा, पता नहीं ये लोग कहां जा रहे हैं। उसे यह यात्री पसंद नहीं आया। अब तो झेलना ही पड़ेगा। इसी कोच में कितनी ही बार शराबियों और झगड़ालुओं के साथ उसने यात्रा की। बूढ़ा और बूढ़ी से इतना तंग तो नहीं होगा।

बूढ़ा सामने वाले बर्थ में बैठ गया। बूढ़ा और बूढ़ी सफेद खादी के वस्त्र पहने थे। रिटायर्ड भाषा अध्यापकों की वेशभूषा। रेलगाड़ी चलने लगी। स्टेशन पर विदा करने आए लोगों की संख्या कम है। निजामुद्दीन स्टेशन उतना लंबा भी नहीं है। रेलगाड़ी स्टेशन से जल्दी ही बाहर निकली। दोनों ओर छोटे-छोटे मकान हैं। इन घरों का पिछला भाग रेल की पटरियों की ओर तथा सामने का भाग सड़क की तरफ है। सबको तसल्ली पहुंचाते हुए टिकट एक्जामिनर आ गया। सीट बांट-बांटकर उन्होंने बर्थ दिखाया।

'यूवर्स द अप्पर बर्थ' टिकट एक्जामिनर ने उस नवजवान से कहा। फिर भी वह वहीं पर बैठा रहा। उसने सोचा कि शायद उस बर्थ का यात्री बहुत देर बाद ही चढ़ेगा। टिकट एक्जामिनर के आते ही बूढ़ी उठ गई। बैग से हल्का सा रेलवे पास निकालकर दिखाया। नवजवान टिकट एक्जामिनर ने बूढ़ी के पैर छूकर नमस्कार किया। वह स्वतंत्रता संग्राम के सेनानियों को दिया गया रेलवे पास था। बूढ़े के जूबे में चार जेब थे। उसने चारों जेबों को टटोला। अंत में ऊपर की जेब से मिला। उनके पास भी स्वतंत्रता संग्राम के सेनानियों का रेलवे पास था। टिकट एक्जामिनर ने बूढ़े को भी पैर छूकर नमस्कार किया। उसे उनके प्रति आदर भाव था। दोनों वृद्ध स्वतंत्रता संग्राम सेनानी थे। इनसे बात करते-करते समय कट सकता है। बीते जमाने के बारे में फस्ट हैंड इन्फरमेशन मिल सकती है।

उसने वृद्ध दंपतियों को बार-बार देखा।

"सर आर यू ट्रावलिंग अप टू केरला?"

"नोट दिस टाइम....ओफकोर्स देयर वाज ए टाईम....आई यूज्ड टू गो टू केरला एटलीस्ट इन टू मन्थस असवेल। व्हेन मै फ्रेंड बेरिस्टर पिल्लै वाज अलैव। यू नो मिस्टर पिल्लै, ही वाज विद मी इन योरवेद सेंट्रल जेल...."

"सर हाउ मेनी इयर्स यू वेर इन जेल....?"

"फोर इयर्स इन नोरथ इंडियन जेल्स। टू इयर्स इन पोर्ट ब्लेयर सेल्लूलार जेल...।"

"सेल्लूलार जेल, वाज इट लाइफ इंप्रिसेन्मेंट?"

"ऑफटर फोर इयर्स ऑफ इंप्रिसेनमेंट ए वाज रिलीज्ड। स्ट्रेट एवे आई वेन टू पतानकोड, रीमूव्ड ऐ रेलवे फिश प्लेट एंड अमृतसर-पतानकोड एक्सप्रेस वाज डीरेल्ड। दिस टाईम आई वाज संटन्सड फार ट्रान्सपोरटेशन टू सेल्लूलार जेल।"

"वाट वाज यूवर फस्ट चार्ज?"

"डू यू नो राष्ट्रभाषा। इफ सो, प्लीज टाल्क इन राष्ट्रभाषा।"

"आई नो राष्ट्रभाषा....फोर मैं बी.ए. इट वाज मै सेकंड लैंगवेज।" फिर वृद्ध ने हिंदी में बात की। उनकी बातें सुनने में मजा आता था। वह वाचाल हो गया। "हम लोग पटियाला राजा के हिन्दू प्रजा थे। मैं पाटियाला के किंग महेंद्र कॉलेज में इंग्लिश लिटरेचर एम.ए, फाइनल ईयर का छात्र था। अचानक राष्ट्रभाषा की चाह मुझे हुई। कोट, टाई, पेंट, अंग्रेजी किताब सब कुछ कॉलेज के सामने जला डाला और राष्ट्रभाषा की क्लास में भर्ती हुआ। फिर 'क्विट इंडिया' संग्राम में भाग लिया।"

उसने बूढ़ी से पूछा, "केन यू टाक इंगलिश?"

"वाय नॉट। आई डिड मै एम.ए. इन इंग्लिश लिटरेचर। आई पाजड मै एम.ए. विथ फस्ट क्लास। ओफ कोर्स द ब्रिटिश गवर्नमेंट कोनफिस्केटड मै डिग्री सर्टिफिकेट। एनी हाउ यू नो हिंदी प्लीज टाक इन हिंदी। वी आर इंडियन्स, वी मस्ट हैव ए कॉमन लैंगवेज।" फिर बूढी भी हिंदी में बात करने लगी।

उसने पूछा, "मैडम।"

"मुझे मैडम मत कहो। माता या माताजी कहकर पुकारो।" उसने भी अपनी भाषा बदली।

"माताजी आप कितने साल जेल में थीं? कौन-कौन से जेल में।"

"एक ही जेल में। अंदमान सेलूलार जेल....।"

"किस जुर्म में?"

"सर फरगुस्तन भयूरो मेट्रोपोलिटन कमीशन ऑफ पुलिस-दिल्ली को गोली मारने के जुर्म में। सुबह से मैं उनका पीछा कर रही थी। उन दिनों कनॉट प्लेस में स्पेनसरस इंडिया का एक रेस्टोरेंट था। मैंने कमिश्नर को वहां जाते देखा। उनके बाहर आने का इंतजार किया।'

बूढ़ी मुश्किल से उठ खड़ी हुई। उनके हाथ ही नहीं शरीर भी कांप रहा था। बीच-बीच में उनका होंठ सिकुड जाता था। वह होंठ रगड़कर बात करने लगी, "मैंने एक गोली चलाई।"

"सर फरगुस्तन म्यूरों का घोड़ा बाहर खड़ा था। मैं उस पर चढ़कर निकल गई।"

"आप घुड़सवारी जानती थीं?"

"हमारे रिपब्लिकन आर्मी में सबसे पहले घुड़सवारी सिखाई जाती थी। उन दिनों ब्रिटिश केवनरी फोसर्स लाठी चार्ज और बयरनेट चार्ज आदि करते थे। रिपब्लिकेन आर्मी की ट्रेनिग में घुड़सवारी भी शामिल थी।"

बूढ़ी होंठ को दबाती रही और फिर लेट गई। उसकी हिचकियां सुनाई पड़ती थीं। मुझे यह देखकर दुःख हुआ। श्री गौतम बुद्ध मनुष्य के बुढ़ापे से चिंतित थे।

बूढ़ा बात करने लगा। "माउंट बैटन मिशन का पहला हुकुम अंदमान के पोलिटिकल प्रिसनर्स को रिहा करना था। हम दोनों ने जेल से छूटकर एक ही जहाज में यात्रा की।"

"शायद आप दोनों वहीं मिले और प्यार हुआ।"

"श चुप। उन दिनों हमको प्यार करने के लिए समय ही नहीं था।" बूढ़ा ने बूढ़ी से पूछा कि गांव जाकर क्या करने का इरादा है। उसने कहा, "राजनीति में तो उतरना नहीं चाहती। बच्चों को पढ़ाना चाहती हूं।" बूढ़े ने भी कहा कि राजनीति छोड़ने का इरादा है। उनकी भी इच्छा बच्चों को पढ़ाकर जीने की थी। इस प्रकार ट्यूशन क्लास शुरू किया। उन दिनों दिल्ली में मेरा एक घर था। मैं और मेरा भाई दोनों इस घर के हकदार थे। भाई रंगून में बहुत बड़ा डाक्टर था। वह कभी वापस नहीं आया। आज भी हम उसी घर में रहते हैं। अभी भी ट्यूशन क्लास चलाते हैं।"

"आप लोगों ने यह नहीं बताया कि आप कहां जा रहे हैं?"

"हम भोपाल जा रहे हैं। हमारा एकमात्र बेटा वहां रहता है। वहां पर एक कम्प्यूटर इन्स्टीटूयूट चलाता है।"

तब वहां एक औरत बच्चे के साथ आई। उसने सोचा कि शायद वे गलत कोच में आ गए होंगे। औरत के बाल लड़कों की स्टाईल में काटे गए थे। वह बनियान जैसे कपड़े से बना शर्ट और जीन्स पहने हुए थी। बनियान के लिए उपयुक्त कपड़े से बना शर्ट पहनने के कारण उनकी छाती स्पष्ट दिखाई पड़ती थी। बायीं ओर की छाती छिपी हुई थी। वहां पर पॉकेट था। उसमें एक पैकेट केपस्टेन सिगरेट था।

बूढ़ी ने परिचय करवाया। "यह मेरे बेटे की पत्नी और पोता है। वे अब तक बगल के बर्थ में थे।" औरत ने होंठ में लाल रंग की लिपस्टिक लगाई हुई थी। संकोच के बिना उसने पूछा, "यू मस्ट भी फ्राम केरला?"

"हाउ डू यू नो?"

"आय आम वर्किंग इन ए स्काटिश एडवरटाईसिंग कंपनी, ऑफ कोर्स ए मल्टीनेशनेल व्हेयर असिसटेंट मैनेजर टू चपरासी ऑल फ्राम केरला।" उसने होंठ से कुछ हरकत की। इस प्रकार उसने केरल के लोगों के प्रति अपना कंटेप्ट व्यक्त किया।

बूढ़ी ने पोते को पास बुलाकर परिचय करवाया। "यह मेरा पोता है संपूर्णानंद..."

उसने बच्चे से पूछा।

"वेर डू यू स्टडी?"

"हिंदू वैदिक इंग्लिश मीडियम स्कूल..."

"विच क्लास?"

"तीन से क्लास।"

औरत ने हाथों से बच्चे का मुंह बंद किया।

"यू आर स्टडियिंग इन हिंदू वैदिक इंग्लिश मीडियम स्कूल अफलिएटेड टू ओक्सफोर्ड। टाक इन इंगलिश मैंड यू।"

औरत ने बच्चे के मुंह से हाथ हटाया।

बच्चे ने कहा, "तीन से क्लास में..."

औरत के हाथ कांप रहे थे। उसने बच्चे को मारा और धक्का भी दिया। बच्चे के होंठ और माथे से खून निकला और वह दौड़ा....तब भी वह चीख रही थी।

"यू इंडियन डेविल टॉक इन इंग्लिश..." ●

ऊंचाइयां

☆ सेतु

पांचवीं मंजिल की बालकोनी में खड़ा लोकनाथन चारों ओर दहकती दुनिया को देख रहा है। शाम होने लगी थी। कुछ ही देर पहले सड़क की बत्तियां जलीं। लोकनाथन ठंडा बीयर पी रहा था। वह गर्मी से शिकायत कर रहा है कि इस बार गर्मी ज्यादा थी। इस बार तापमान 45 के ऊपर था। कमरे की दहकती चारदीवारी के बाहर इस छोटी-सी बालकोनी में गर्म हवा बह रही है।

गली में शराबियों का एक झुंड जा रहा है। वे एक-दूसरे के कंधों पर हाथ डालकर गुनगुनाते हुए जा रहे हैं। गली के एक कोने में सस्ते दाम की शराब की छोटी-सी दुकान थी। शाम होते ही वहां दूध की डिपो से भी ज्यादा भीड़ रहती थी। दिन की मजदूरी से मिले रुपयों का बड़ा हिस्सा वे यहां सौंपकर जाते थे। उनके काले बदन से पसीना निकलता था। साथी के कंधों पर हाथ डालकर, शोर मचाते हुए, कभी-कभी झगड़ा कर और गाना गाते हुए यह झुंड जाता है। कभी उनमें से कोई लड़खड़ाकर गिर जाता है तो साथी उसे कंधों पर डालकर शोर मचाते हुए इस एहसास के साथ चलते हैं कि मानो एक व्यक्ति को पहिए के नीचे आने से बचा लिया है।

बालकोनी की रेलिंग पकड़कर लोकनाथन नीचे बगीचे की हरियाली निहार रहा है। वहां रबड़ की पाईप से पानी छिड़ककर माली घास भिगो रहा है। "उस रेलिंग की ऊंचाई कम है, वहां संभलकर खड़े रहना।" पार्वती ने एक बार कहा, "तुम तो कई बार रेलिंग के बहुत पास खड़े रहते हो, यहां-वहां देखते हो। शराबियों के लिए यह अच्छी जगह नहीं है, खासकर दिवास्वप्न देखने वालों के लिए।"

तब लोकनाथन यूं ही हंस पड़ा। वह बहुत देर तक नीचे की ओर

देखकर खड़ा नहीं रह सकता था। ऊंचाई से उसे डर लगता है। रेलिंग के बिना सीढ़ियां चढ़ते वक्त, खुले टेरस पर आधा दीवार का सहारा लेकर नीचे की ओर देखते समय, उसे अपने पर विश्वास नहीं था। एड़ियों से मानो कोई कंपन उठ रहा है। सिर में दर्द होने लगा।

यह देखकर पार्वती को आश्चर्य हुआ। लोकनाथन को इस ऊंचाई से डर? वह बुदबुदाई। उसके बुदबुदाने में आश्चर्य कम और परिहास ज्यादा था। कर्ज में पैसा लेकर लोकनाथन फ्लैट खरीदने के लिए सोसाईटी वालों के पास गया। तब उस पांचवीं मंजिल के फ्लैट को पार्वती ने चुना। हमेशा की तरह खास निर्णय उसी ने लिया।

"निचली मंजिल में मकान लेंगे।" उसने कहा, "इससे हम मिट्टी से दूर नहीं हो रहे हैं। इन ऊंचाईयों से मिट्टी और हरापन हमारी आंखों से ओझल भी नहीं हो रहा है न?"

"ऊपरी मंजिल में मकान लेंगे।" पार्वती ने कहा, "इस मिट्टी से, धूल भरी सड़क से और तेजी से जा रही गाड़ियों की आवाज से दूर रहेंगे। यही नहीं, इन ऊंचाइयों से जो नजारा देखने को मिलता है। वह कहीं ओर से नहीं मिलता।"

लोकनाथन ने हठ किया। पार्वती ने भी हठ की। उनके झगड़े को सुनकर सोसाइटी के सचिव ने कहा, "बीच की मंजिल में एक फ्लैट खाली है जो दक्षिण की ओर स्थित है। लेकिन इसके लिए डिमांड ज्यादा है। वह हवादार है।"

डाइनिंग हॉल में बैठी पार्वती ने देखा कि लोकनाथन गिलास में बीयर भर रहा है। यह देखकर उसका चेहरा हमेशा की तरह गुस्से से भर उठा। चाहे विह्स्की हो, बीयर या फिर पानी की ही बात क्यों न हो? लोकनाथन निजीपन दिखा रहा है।

बिना किसी साथी के व ऊपर बताए गए किसी भी चीज को अकेले में पीने की बात को लेकर उसे घृणा थी। आजकल लोकनाथन हमेशा अकेले रहना पसंद करता है। वैसे भी साथ-साथ बैठने पर भी वह बहुत दूर ही था।

लोकनाथन ने एक बार कहा कि उसकी अपनी एक दुनिया है। वह घंटों खुद से बातें कर सकता था। दूसरों से बात किए बगैर बहुत दिनों तक रह सकता है। अपनी दुनिया का मालिक वह खुद ही था।

एक दिन वह सड़क पर साईकिल से गिर पड़ा और उनके घुटनों पर

चोट लगी। उनके घर आने पर पार्वती ने कहा, "आपको किसी भी चीज में आत्मविश्वास नहीं है। वास्तव में आप जो अकेलेपन को चाह रहे हैं उससे मुझे नफरत है। भीड़ में क्या आप किसी लड़की को छेड़ सकते हैं। आपको थप्पड़ मिले तो भी आपको परवाह नहीं। मैं समझूंगी कि आप मर्द हैं। मैं यदि ऐसी बातें कर रही हूं तो समझिए कि आप मुझे कितने प्रोवोक कर रहे हैं।"

लोकनाथन को उसकी बातें समझ में नहीं आती। इसलिए उसको तंग करने का तरीका वह ढूंढ़ता रहता। वह फ्रिड्ज की ओर गया। फिर से एक बीयर बोतल खोलकर गिलास में भरा। यह दूसरा बोतल था।

पार्वती एक बड़ा-सा तरबूजा काटने की कोशिश कर रही है। धारदार चाकू के पार होते ही तरबूजे के पेट से काले बीज बिखर गए और लाल रस गिरने लगा। तरबूजे को काटते वक्त वह गुनगुनाने लगी। चाकू से वह बीजों को अलग कर तरबूजे को छोटे-छोटे टुकड़ों में काटा। एक टुकड़ा चखकर देखा। पका हुआ तरबूजा था। अच्छा स्वाद भी था। लोकनाथन को तरबूजा पसंद नहीं था।

बीयर के ठंडेपन में, लोकनाथन अपने इर्द-गिर्द की दुनिया के बारे में सोच रहा है। कालोनी के उत्तरी भाग की बस्ती को खाली करवा दिया जा रहा है। लगभग बीस साल से यह बस्ती वहां थी। छोटी-छोटी बस्तियां जिनमें काले मनुष्य बड़ी तादाद में रहते थे।

घर में बेकार बैठे मर्दों को उनकी औरतें मजदूरी करके रुपये लाकर देती थीं। वरना ये मर्द औरतों को पीटते थे। ये औरतें हर साल बच्चों को जन्म देतीं और उन्हें गली में छोड़ देतीं। इस महानगर के चोर, पॉकेटमार और नशीली दवाइयों की बिक्री करने वाले इसी बस्ती की देन हैं। नौकरानी उस बस्ती में रहती थीं। पार्वती के डर से वह रोज स्नान करती थी। वह जो लाल कपड़ा पहनती उससे उसका पूरा बदन ढक नहीं पाता। पार्वती की नजर नौकरानी की नाभि पर पड़ती है।

नौकरानी हर साल गर्भवती होती थी, इससे पार्वती को गुस्सा आता था। "इन लोगों को कोई और काम नहीं है।" पार्वती ने बुदबुदाया। लोकनाथन हंस पड़ा।

नौकरानी के पास केबल टी.वी. नहीं है। लोकनाथन ने आंख मारी। हमारे सामाजिक जीवन में केबल टी.वी. के स्थान के बारे में तुम्हें क्या मालूम ? तब पार्वती की आंखें ज्वलित हो उठीं। उसकी नजरों से बचने

के लिए उसने पत्रिका में अपने चेहरे को छिपाया। कई डाक्टरों के कहने के बाद भी उसको विश्वास नहीं आया। नहीं, ऐसा नहीं हो सकता, कभी नहीं। हमारा परिवार तो बच्चों से भरा है। मां, छोटी अम्मा, दादी और छोटी बहन सबके औलाद हैं। केवल मेरे साथ ऐसा क्यों हुआ?

गली से निकला शोर सुनकर लोकनाथन ने नीचे की ओर देखा। बत्तियों के पास दो लड़के झगड़ रहे थे। दोनों में हुई खींचातानी में एक लड़का गिर पड़ा। दूसरा उसके सीने पर बैठकर कोई फिल्मी डायलोग बोल रहा था। कुछ लोगों ने आकर उनको हटाया, फिर भी उसका गुस्सा कम नहीं हुआ। दोनों एक-दूसरे को गाली दे रहे थे।

स्टील के बर्तन में पड़े तरबूजे के टुकड़ों को देखकर पार्वती बैठी रही। लाल तरबूजे से रस टपक रहा था जिसे देखने पर ऐसा लगता था मानो गोश से खून टपक रहा हो। अचानक पार्वती कांप उठी। उसने चाकू उठाया। उसकी धार से लाल बूंद अब भी गिर रही थी।

बर्तन को ढककर वह रसोईघर की ओर गई। चाकू साफ करत समय उसकी उंगलियां कांप रही थीं। वापस शयन कक्ष की ओर जाते समय उसने बालकोनी का सहारा लिया। लोकनाथन वैसे ही खड़ा था, उनके पीछे के बाल पकने लगे थे, उनके बाल बकरी के समान लंबे थे। वह वहीं खड़ी रही और सोचने लगी। क्या यही वह पुरुष है जिसने अठ्ठारह साल पहले मेरा हाथ थामा था। ज्यादातर उनकी पीठ ही देखने को मिलती। आमने-सामने आने का मौका वह देता नहीं था।

दो कदम आगे रखकर उसने सोफा पर हाथ रखा तब भी लोकनाथन वैसे ही खड़ा था। पार्वती को लगा कि हल्के पीले रंग की दीवारों के बीच वह एक भट्टी के समान है। आवाज करता हुआ पंखा चलने लगा। पंखा ठीक उसके सिर के ऊपर चल रहा था। गर्म हवा उसके सिर पर पड़ रही थी। हल्के बालों के भीतर हवा के लगने से खोपड़ी सूज रही थी। खोपड़ी अब अंगीठी के समान थी। गर्म हवा से अंगारे जल रहे हैं। उसने फिर दो कदम आगे रखे।

अब पार्वती बेडरूम में खड़ी थी। जहां से बॉलकोनी की ओर रास्ता था। लोकनाथन का सिर उसे साफ दिखाई पड़ता था। उसको उनका सिर खरबूजे के समान लगा। कसाई द्वारा काटकर फेंका गया बकरी के सिर सा लगा। उसकी नाभि से कुछ निकलने लगा, मुंह में लार भर आई। उसने दो कदम रखे।

लोकनाथन अब भी वैसे ही खड़ा था। अंधेरे में ऐसा लगा मानो उसका सिर वहां चिपकाया गया है। उनके पीछे जो हुआ उसके बारे में वह अनजान था। शायद वह अपने पुराने निजीपन में गली की छोटी-मोटी घटनाओं का समावेश कर रहा है। तब पहली बार पार्वती को लगा कि वह ऐसे पीठ दिखाकर क्यों खड़ा था, शायद उसका उत्तर उसे मिलेगा। रहने दो, वैसे ही खड़े रहने दो....पार्वती ने बुदबुदाया।

पता नहीं वह कितनी देर यूं ही खड़ा रहा। शायद इस बीच पार्वती बेहोश हो गई होगी या फिर उस बेहोशी में अनजानी घटनाओं का समावेश हुआ हो। बाद में उसकी आंख खुलने पर लोकनाथन बालकोनी में दिखाई नहीं दिया। लोकनाथन बालकोनी की रेलिंग को पकड़कर झूल रहा था। वह रेलिंग को जोर से पकड़कर ऊपर उठने की कोशिश कर रहा था, लेकिन पांव फिसलता जा रहा था। ऐसे में वह रेलिंग को कसकर पकड़ता। किसी भी समय उसके थके हाथ खंभे से छूट सकते हैं। फिर नीचे, नीचे....पार्वती ने देखा कि उनकी आंखें लाल हो गई हैं, गर्दन की नसें फूल गई हैं और उनके हाथ रेलिंग से छूटने वाले हैं। पार्वती....वह चीख उठा। रात के अंधेरे में वह आवाज़ तेजी से गुजरी। उसने उनकी उंगलियों को देखा जिन्होंने लोकनाथन को इस दुनिया से जोड़े रखा। उसके शरीर को पहली बार छूकर उत्तेजित होने वाली उंगलियां ये ही थीं। यह उंगलियां अब थक चुकी थीं। उनका हाथ कभी भी छूट सकता था। एक कलाबाज के समान वह छलांग मारकर फिर से पहले जैसा बॉलकोनी में नहीं आ सकता था।

पार्वती को आश्चर्य हुआ कि पति की इस हालत को देखकर वह चीखती क्यों नहीं, उसने कभी नहीं सोचा कि हर दिन शाम को इसी रेलिंग को पकड़कर नीचे की ओर देखकर खड़े रहने वाले लोकनाथन का अंत ऐसा होगा। शोर मचाकर आसपास के फ्लैट के लोगों को इक्ट्ठा करने से शायद कोई हल निकल सकता था न?

अचानक उसके मन में ख्याल आया। क्या लोकनाथन फिसलकर नीचे गिर गया? या वह कूद पड़ा? वरना। उसके सिर में दर्द होने लगा। उस वक्त उसकी आंखें बंद हो गईं और अनजाने ही वह आगे बढ़ी और लोकनाथन को जाकर धक्का मारा। अनजाने से लगे धक्के से फिसलकर, उलटकर, बाप-रे वह चीख उठी। लोकनाथन कुछ कहना चाहता है, उसकी आंखें इशारा कर रही हैं। पार्वती को लगा कि वह रो रहा है।

बचने के लिए कोई रास्ता निकल आए तो—पार्वती ने हाथ बढ़ाया। रेलिंग से हाथ छोड़कर पार्वती के हाथों को वह पकड़ नहीं पा रहा था। पार्वती चाहती तो उसके हाथों को पकड़ सकती थी लेकिन डर था कि कहीं इस बीच वह खुद न गिर जाए। उसके गले में चीख अटक गई थी। अचानक उसने हाथ खींच लिया। नहीं अब यह दृश्य मुझसे और देखा नहीं जाता। वह रो पड़ी। उसने आंखें बंद कीं। उस अंधेरे में उसने लोकनाथन को गिरते देखा। यह दृश्य बार-बार दिखाई दिया। गिरते वक्त वह रो रहा था। अंत में पांचों मंजिल पार कर वह धमाके के साथ नीचे गिर पड़ा। वह मैले कपड़ों की गठरी के समान गिर पड़ा। ऊंचाई से गिर वह तरबूजा फट गया। बत्तियों के प्रकाश में उसके काले बीज बिखर गए, लाल रस गिरने लगा। हरी घास पर लाल रंग गाढ़ा हो गया। वह एक क्षण के लिए नतमस्तक खड़ी रही। उस हादसे को भूलने की कोशिश की।

फिर कमरे में आकर उसने बत्ती जलाई। जम्हाई लेकर, हाथ और पांवों को झकोरा। लंबे नाखूनों से सिर को खुजलाया। तब दीवार पर टंगे शीशे के फ्रेम में उसने मुस्कुराते हुए लोकनाथन को देखा। इतनी जल्दी याद बनकर तू इस शीशे में घुस सका। पार्वती बुदबुदाई। लोकनाथन यूं ही मुस्कुराता रहा। लोकनाथन तुमको मुझ पर गुस्सा आ रहा है क्या? उसने लोकनाथन से पूछा। तब भी वह हंस रहा था। फिर वह मेज के पास बैठकर हल्के लाल रंग के कागज पर लिखने लगी।

प्यारे लोकनाथन,

मुझे मालूम था कि इस बार भी गर्मियों की छुट्टियों में तुम नहीं आओगे। गर्मी खत्म होने लगी हैं। बिजली और बादलों की गड़गड़ाहट ऊपर कहीं छिपकर बैठी है। यह मुझे दिखाई दे रहा है। तुम्हारे इंतजार के अंतिम चरण के रूप में मैं इनको पाती हूं। इस बार के लिए या फिर अगली गर्मियों तक मैं इस इंतज़ार को खत्म कर रही हूं। इसलिए तुम्हारे सिर के सामने बड़ा तरबूजा खरीदकर मैंने बालकोनी से नीचे फेंका। तब मुझे चैन आया। फिर भी मैं क्यों रो पड़ी?

इसका जवाब तुम मुझे कब दे पाओगे?

आपकी अपनी पार्वती

पागलपन

☆ माधवीकुट्टी

कई लोगों से सुनने के बाद ही मैं यकीन कर सकी कि अरुणा पागल हो गई है। दिल्ली से आने के दूसरे ही दिन मैं उसके घर गई। अरुणा की सुन्दर नेपाली नौकरानी ने दरवाजा खोला। वह हंसी और उसके दांतों में पान चबाने के कारण लगे दाग दिखाई दिए।

"तुम्हारी मालकिन कहां है?" मैंने पूछा।

"मालकिन बीमार हैं," उसने कहा, "पांच-छः महीने हो गए।"

उसके बताए कमरे में मैंने देखा कि अरुणा लाल साड़ी पहने हुई थी और चारपाई पर बैठकर छत की ओर देख रही थी।

"अरुणा तुझे क्या हुआ? तू इतनी दुबली कैसे हो गई?" मैंने पूछा।

"तू इतने दिनों से मुझे मिलने क्यों नहीं आई?" उसने पूछा, "क्या तू मुझे नापसन्द करने लगी?"

"बता तुझे कौन नापसन्द करने लगा।"

"वो...मेरे पति।"

"मुझे विश्वास नहीं होता। तुझे गलतफहमी हो गई है। तुझसे नफरत करने का कोई कारण ही नहीं है।"

अरुणा बिस्तर पर लेट गई। वह बोली, "वह सब तू विश्वास नहीं करेगी विमला," उसने कहा, "आजकल मेरी बातों पर कोई विश्वास नहीं करता। वे कहते हैं कि मैं पागल हूं। मैं बच्चे को सताती हूं। चाकू से लोगों को डराती हूं। तूने यह सब सुना होगा।"

"यह सब बातें कौन फैलाता है?" मैंने पूछा।

"मेरे पति और बाकी सब। अब बच्ची भी मेरे पास नहीं आती। मेरी सास उसको ले गई। पिछले महीने जब मैंने रोकर हल्ला मचाया, तब

वे बच्ची को लेकर आए। लेकिन बच्ची ने दरवाजे पर ही खड़ी होकर कहा, "मां तू पागल है।"

"यह सब कब शुरू हुआ?" मैंने पूछा।

"मुझे याद नहीं है," अरुणा ने कहा, "मुझे समय का कोई ज्ञान नहीं है। वे कहते हैं कि एक दिन मैंने पति की हत्या करने की कोशिशें की। चाकू लेकर उनका पीछा किया। विमला ! तू ही बता, क्या मैं यह सब कर सकती हूं?"

मैंने केवल सिर हिलाया।

"पड़ोसी मुझसे डरते हैं। उन्होंने मेरी नौकरानी से पूछा कि मेरे पति मुझे पागलखाने क्यों नहीं ले जाते?"

"किसने कहा?" मैंने पूछा।

"वही फूलमती। तू उसे जानती है न। अब वह इस घर की रानी है। अब मेरे पति के साथ बिस्तर भी बांटने लगी है।"

"नहीं, अरुणा, यह सब गलत है, तुझे गलतफहमी हो गई होगी।" मैंने कहा।

"मेरी बातों पर कोई विश्वास नहीं करता।" वह बुदबुदाई।

"तू यहां से चली क्यों नहीं जाती?" मैंने पूछा, "अगर तेरी बात सही है तो तू अपमानित होकर यहां क्यों रहती है? तू अपने पिताजी के साथ जा सकती है न?"

"यह नहीं हो सकता," अरुणा ने कहा, "बीच-बीच में बत्ती जलाकर देखती हूं तो पति को सोया पाती हूं। दोनों हाथों के नीचे सिर रखकर छोटे बच्चे के समान सोते हैं। विमला, मेरे पति कितने सुंदर लगते हैं सोते हुए। उन्हें देखकर मैं सारा दुःख भूल जाती हूं। नहीं, मैं उनको छोड़कर कभी नहीं जाऊंगी। विमला तू समझ रही है न!"

•

भिन्न संख्या

☆ ग्रेसी

उसे लगा कि उसके सिर में गुब्बारे के समान कुछ फूल रहा है। उसको ऐसा लगा मानो कि स्वयं वह फटने जा रही है। हल्के गर्म पानी में नहाने से थोड़ी सी राहत मिलेगी, यह सोचकर वह गुसलखाने गई।

तीन दिन पहले उसे बुखार हुआ। उसका सिर फटा जा रहा था, आंखें जल रही थीं और शरीर कांप रहा था। इस हालत में वह कार्यालय से निकली और वह चाह रही थी कि, कहीं लेट जाए।

पति के घर आते ही उसने कहा कि मेरी तबीयत ठीक नहीं है, चाय बना लीजिए।

वह बुदबुदाते हुए रसोईघर की तरफ गया। कुछ देर बाद उसने पत्नी को एक कप चाय भी दी। चाय में मिली दवाई को पीते ही उसे उल्टी हुई। पति ने असंतृप्त भाव से उसे घूरकर देखा। सुबह एक बार नजर दौड़ाकर रखे समाचार पत्र को लेकर वह आराम कुर्सी पर बैठ गया। जब पत्नी को समझ में आया कि शाम होने के बावजूद भी पति वहां से उठने का नाम नहीं लेता, तब वह अपने शरीर को घसीटते हुए रसोईघर पहुंची और खाने के लिए हल्का-सा कुछ बनाकर मेज पर रखा और वह बुदबुदाई, "मरने पर भी इस घर में चैन नहीं मिलेगी। ऐसा कोई आदमी है जो आज के जमाने में जरूरत पड़ने पर पत्नी का हाथ नहीं बंटाता।"

पति ने उसकी बात पर ध्यान नहीं दिया। तीन दिन के लिए उसे कार्यालय के काम से छुटकारा मिला लेकिन घर के कामकाज से नहीं।

गुसलखाने से बाहर निकलते ही बेटी किताब लेकर आई। "मां, इस भिन्न संख्या का हिसाब बताओ न।" उसको गुस्सा आया लेकिन उसने अपने आप को नियंत्रित किया और पिताजी से पूछने के लिए कहा।

"पिताजी तो यूं ही बैठ रहेंगे। कुछ बताएंगे नहीं।" बेटी ने कहा। उसने किताब में एक बार नजर दौड़ाई और कागज में कुछ लिखकर बेटी को सिखाने लगी। लेकिन बेटी इससे खुश नहीं थी।

"मुझे कुछ भी समझ में नहीं आया।" बेटी ने कहा।

उसके सिर में दर्द होने लगा। माथे पर हाथ रखते हुए वह पति की ओर मुड़ी, "क्या आप बेटी को सिखा सकते हैं?"

उन्होंने पैरों को टी पॉय पर रखकर कहीं देखते हुए कहा कि उन्हें पुराने गणित याद नहीं हैं।

पत्नी को गुस्सा आया। उसने कहा, "हां, आप तो पुरानी बातों को भूल गए हैं।"

वह बीती बातों को याद करने लगी। शादी के दिनों में वे एक-दूसरे को बहुत प्यार करते थे। उसकी हरकतें देखकर पति कहता था कि वह पागल है। लेकिन अब तो वह सचमुच पागल हो चुकी थी। जमीन पर पालथी मारकर वह बैठी और रो पड़ी।

अच्छा तो यह बात है। तो मैं पहले आपको सिखाऊंगी। दो-तीन बार समझाने पर भी वह पुराने पाठों को याद कर नहीं पाया। उसे लगा कि शायद पति उसकी बातों की ओर ध्यान नहीं दे रहा था। उसके सपनों के बौर बिजली के गिरने पर जल गए। वह सिर पीटकर रो पड़ी। यह मेरी नियति है।

उसने पत्नी की बातों की ओर ध्यान नहीं दिया और पहले की तरह उसे घूरकर देखते हुए बैठा रहा।

एक असाधारण सी चमक उसकी आंखों में छा गई और वह शयन कक्ष की ओर दौड़ी। उसने दरवाजा बंद कर कुंडी डाली और एक पुरानी साड़ी ढूंढ़ निकाली। एक स्टूल निकालकर उस पर चढ़ी और बत्ती की खूंटी पर साड़ी का एक सिरा बांध दिया। साड़ी के दूसरे सिरे से एक फंदा बनाकर उसे गले में पहनकर वह आवाज लगाई–

"इधर आओ।' मैं अच्छी तरह समझाऊंगी।" खुली हुई खिड़की से

देख रहे लोगों को देखकर वह हंस पड़ी। उसके हंसी को देखकर लोग आश्चर्य में पड़ गए।

तर्जनी से सिर को छूकर उसने कहा, ''यह अंश (न्यूमरेटर) है।'' फिर उसने जिस्म को छुआ और कहा, ''यह हर (डिनोमिनेटर) है।'' वह हांफ रही थी। हंसते हुए उसने कहा, ''दो भिन्न संख्याओं को जोड़ने पर ऐसे।'' उसने पैरों से स्टूल को गिरा दिया।

●

कौन जानता है

☆ पॉल ज़करिया

कि यहूदियों का राजा जिसका जन्म हुआ है, कहां है? क्योंकि हमने पूर्व में उसका तारा देखा है और उसको प्रणाम करने आए हैं। यह सुन कर हेरोदेस राजा और उसके साथ सारा यरूशलेम घबरा गया। (2 : 2-4) उनके चले जाने के बाद देखो, प्रभु के एक दूत ने स्वप्न में युसुफ को दिखाई देकर कहा, उस, उस बालक को उसकी माता को लेकर मिस्र देश को भाग जा और जब तक मैं तुझसे न कहूं तब तक वहीं रहना, क्योंकि हेरोदेस इस बालक को ढूंढ़ने पर है कि उसे मरवा डाले। (2 : 13) जब हेरोदेस ने यह देखा कि ज्योतिषियों ने मेरे साथ ठट्ठा किया है, तब वह क्रोध से भर गया और लोगों को भेजकर ज्योतिषियों से ठीक-ठीक पूछे हुए समय के अनुसार बेतलहम और उसके आस-पास की सब लड़कों को जो दो वर्ष के व उससे छोटे थे, मरवा डाला। (2 : 16)

(बाइबिल का अध्याय : मत्ती)

धक्का देकर दरवाजा खोलते हुए सैनिकों ने प्रवेश किया। वह थका हुआ था। लड़खड़ाते हुए वह चापरपाई पर गिर पड़ा। उसने आंखें बंद कर लीं।

अंदर एक और दरवाजा था जो थोड़ा-सा खुला हुआ था। बाद में किसी ने उसे बंद कर दिया। सैनिक की चप्पल पर सूखे खून पर मक्खियां उड़ रही थीं। किसी एक कोने से झींगुर की आवाज सुनाई दी। आंगन में धूप सेंकती मुर्गियों की आवाज सुनाई दी। खुली खिड़की से लोगों के एक साथ रोने की आवाज अशरीरी-सी अंदर आई। थोड़ी देर बाद मुर्गियां कहीं चली गईं। झींगुर की आवाज अब सुनाई नहीं देती। सैनिक को अब केवल

रोने की हल्की आवाज सुनाई दी। उसके जागने पर धूप कम हो चुकी थी। वह बैठ गया। अपने हाथों और कपड़ों को देखकर उसने कहा, "मुझे स्नान करना है।"

वेश्यालय की मालकिन ने कहा, "पानी गर्म कर दूंगी, उसमें कौन-सी औषध डालूं?" सैनिक ने सिर पर दोनों हाथ रखते हुए कहा, "कुछ भी डालो, खून की गंध इतनी जल्दी नहीं जाएगी।"

वेश्यालय की मालकिन की उम्र पचास साल थी फिर भी वह जवान दिखती थी। सैनिक ने उसकी ओर देखा तो उसके चेहरे का भाव बदल गया। उसने कहा, "खास कर शिशुओं के खून की गंध।"

सैनिक अपने हाथों को देखता बैठा रहा।

औरत ने पूछा, "आप किस गली में थे?"

सैनिक ने कोई जवाब नहीं दिया।

मालकिन सैनिक के पास आकर बैठ गई। उसने पूछा, "आपने जिन शिशुओं को मार डाला, क्या वे जानते थे कि आप उन्हें मारने जा रहे हैं?"

सैनिक ने सामने की दीवार की ओर देखा। वह उसके जवाब की प्रतीक्षा में बैठी थी।

"मुझे नहाना है।" सैनिक ने कहा।

मालकिन उसकी ओर देखती बैठी रही।

उसने कहा, "मुझे नहीं मालूम, क्या शिशुओं की मृत्यु होती है ? क्या वे मृत्यु के बारे में सोच सकते हैं?" वह चुप रही।

उसने कहा, "मैंने माताओं के रोने की आवाज सुनी।" मालकिन अंदर की ओर चली गई। सैनिक ने अपनी कमर में लगी म्यान से तलवार निकाली जिस पर खून लग़ा था। उसने म्यान भी उतार दी। फिर हाथ के सूखे खून को नाखून से निकालने लगा। मालकिन वापस आकर उसके सामने बैठ गई। "पानी गर्म करने के लिए रख दिया है। आपने कितने शिशुओं की हत्या की?" मालकिन ने पूछा।

सैनिक चुप रहा।

"आप तो गजब के बादमी हो। क्या पचासों शिशुओं की हत्या और उतने ही सैनिकों की हत्या में कोई फर्क नहीं है?"

सैनिक चुप बैठा रहा।

मालकिन ने कहा, "बच्चों का किससे युद्ध?"

सैनिक ने कहा, "सैनिकों का किससे युद्ध?"

मालकिन का ध्यान तलवार की तरफ गया। उसने पूछा, "इस तलवार का किससे युद्ध?" फिर सैनिक के बिलकुल पास जाकर धीमी आवाज में प्रश्न किया, "हेरोदेस का शत्रु कौन है? किसका जन्म हुआ है? हेरोदेस कौन से शिशु से डर रहा है?"

सैनिक ने पूछा, "तुझे अभी तक नहीं मालूम?"

मालकिन ने कहा, "नहीं।"

सैनिक ने कहा, "यहूदियों के राजा ने बेतलहेम में जन्म लिया है। उसकी खोज में आए विद्वानों ने यह सूचना हेरोदेस को दी। हेरोदेस डर गया। गुपचुप शिशु की आराधना कर विद्वान भाग गए। हम उसी शिशु को ढूंढ़ रहे हैं। उसकी हत्या में लगे हैं।"

अपने दोनों हाथों को देखते हुए सैनिक ने कहा, "कौन जानता है कि मेरे हाथों से यहूदियों के उद्धारक की मृत्यु आज हुई या नहीं?"

मालकिन ने कहा, "हां, किसे मालूम !"

सैनिक ने कहा, "क्या इतने हजारों के खून के बाद ही उद्धारक का आगमन होगा?"

मालकिन चुप रही।

सैनिक ने उंगलियों से चेहरा ढंकते हुए कहा, "तुम नहीं समझोगी। तुम्हारे तो बच्चे नहीं हैं। मैंने जिन नन्हों की हत्या की उनकी घबराहट तुमने तो देखी नहीं न?"

थोड़ी देर के लिए दोनों चुप रहे। फिर मालकिन ने कहा, "बेचारा!" सैनिक ने चौंकते हुए पूछा, "कौन? कौन?"

उसने कहा, "वह शिशु। यहूदियों का मसीहा। इस तरह का निर्णय कौन देता है? मेरा वेश्या बनना, उसका जन्म लेना और बच्चों की हत्या की नियति का एक ही कारण है।"

थोड़ी देर बाद औरत ने कहा, "उद्धारक का आगमन पूरे ज्ञान और महिमा के साथ होना चाहिए। क्या वह शिशु इस खून का जवाब देगा? वह यह ऋण कैसे चुकाएगा?"

सैनिक ने कहा, "वह बच निकले तभी न?"

सैनिक और मालकिन चुप हो गए।

"कौन जानता है!" सैनिक ने फिर से कहा, "यदि मैं उस शिशु को

पहचानता...। तो उस की हत्या नहीं करता।''

मालकिन ने कहा, ''बच्चे की मृत्यु हो गई और यदि तुम पहचान लेते कि पहली हत्या उसी शिशु की थी, तो बाकी शिशु बच जाते।''

''लेकिन तब'', सैनिक ने कहा, ''ऐसे में उद्धारक नहीं आएगा। आगे देखते हैं, शायद आ भी सकता है। है कि नहीं?''

मालकिन ने कहा, ''सही बात है।''

उसने सैनिक के घुटनों को छूते हुए कहा, ''हमें उद्धारकों की जरूरत है। चाहे खून बहाकर हो या फिर प्रताप के साथ, लेकिन उद्धारक को आने दो। सैनिकों और वेश्याओं को उद्धारकों की जरूरत है।''

''सही है।'' सैनिक ने कहा।

''पानी अभी तक गर्म नहीं हुआ?'' सैनिक ने पूछा।

भीतर बंद कमरे से एक बच्चे के रोने की आवाज सुनाई दी। किसी ने बच्चे को चुप किया। सैनिक के चेहरे पर थकी मुस्कुराहट दिखाई दी। ''उद्धारक को ढूंढ़ते हुए कोई वेश्यालय नहीं आया? क्यों? बच्चे की मां कौन है?'' क्या वह लड़का है? क्या अभी तक उसे भिखारियों को नहीं बेचा?'' सैनिक ने पूछा।

मालकिन ने कहा, ''वह तो मेरी बिल्ली का बच्चा है। उसकी आवाज बिल्कुल मनुष्य के बच्चों जैसी ही है न?''

सैनिक ने हंसते हुए कहा, ''तुम झूठ मत बोलो। यदि वह बच्चा यहूदियों का रक्षक ही है तो भी मुझे कोई फर्क नहीं पड़ता। मैं स्नान करने आया हूं। मैं अपना काम पूरा कर विश्राम करने आया हूं। क्या पानी अभी तक गर्म नहीं हुआ?'' उसने जूता उतारा। मालकिन ने मुस्कुराते हुए पूछा, ''क्या आपके स्नान कर आने के बाद मैं ताजे माल को आप के पास भिजवाऊं?''

''नहीं'', सैनिक ने कहा, ''तुम मुझे स्नान करने के लिए गर्म पानी और पहनने के लिए एक नई कमीज दे दो, यही काफी है।'' सैनिक बुदबुदाया, ''स्नान करना है।''

मालकिन अंदर की ओर चली गई।

सैनिक ने खून भरी कमीज उतारी। गुसलखाने से लोटे की आवाज और पानी गिरने की आवाज सुनाई दी। वह गुसलखाने की ओर गया।

उसके वस्त्र, चप्पल और चादर नौकरानी ले गई।

आधी रात के बाद सैनिक चारपाई पर खर्राटे भरता सो रहा था। अंदर कोई बुदबुदा रहा था। किसी ने अंदर से आहिस्ता से दरवाजा खोला। अंधेरे से दो औरत और एक आदमी सैनिक की चारपाई को पार कर बाहर निकले। एक औरत छाती में कुछ दबाए हुए थी। वे दरवाजा खोल कर बाहर तारों की रोशनी की ओर निकले। वहां एक गधा खड़ा था।

वेश्यालय की मालकिन के साथ आई औरत से बच्चे को इस तरह उठाया कि उसके चेहरे पर तारों का प्रकाश न पड़े। बच्चे को ऊपर उठाकर उसने कहा, "बेचारा राजा!" फिर झुककर उसके माथे और पांव को चुंबित किया। साथ में आई औरत तब तक गधे पर बैठ चुकी थी। मालकिन ने बच्चे को वापस औरत के हाथ में दे दिया। उसने बच्चे को फिर से छाती से लगा लिया। तीन-चार औरतें चुपचाप घर से बाहर निकल पड़ीं। आदमी ने गधे की डोरी पकड़ी। गधे पर सवार औरत ने सबको देख कर कहा, "धन्यवाद ! हमें आश्रय देने के लिए धन्यवाद। मेरे बच्चे का भी धन्यवाद स्वीकार करो। हम बदले में आपकी कोई सहायता नहीं कर सकते।"

मालकिन ने कहा, "जब तुम्हारा बेटा बड़ा होकर राजा बनेगा, हमारी रक्षा करने के लिए कहना। हम तो वेश्या हैं। लेकिन, मां की बातों को वह मानेगा।"

गधा चलने लगा। मालकिन दौड़ते हुए कहने लगी, "उस सैनिक की और आप दोनों की भलाई हो।" पास के मोड़ पर संकरे रास्ते से होकर वह आदमी, गधा, मां और बच्चा अंधेरे में ओझल हो गए।

सैनिक को पार कर जब वेश्या अंदर की ओर जा रही थी तभी वह नींद में बुदबुदा रहा था, "पानी गर्म नहीं हुआ क्या?"

●

विपरीत दृश्य

☆ सी. वी. बालकृष्णन

रेलवे स्टेशन के एक नंबर प्लेटफार्म पर एक दिन रात को गाड़ी रवाना होने के लिए तैयार खड़ी थी। वहीं लगे चार-पांच टेलीविजन सेटों में एक सुंदर युवती प्रकट हुई जो यात्रियों को ताजा सूचना दे रही थी। सफेद पोशाक पहने गार्ड सिग्नल देने के लिए तैयार खड़ा था। इंजन से ड्राइवर गार्ड की तरफ ध्यान से देख रहा है। ड्यूटी पर आए टी.टी.ई. रिजर्वेशन चार्ट के साथ अपने-अपने निर्धारित कंपार्टमेंट में चढ़ रहे थे। अंधकार में फैली पटरियों पर बारिश हो रही थी। राईफल थामकर खड़ा एक पुलिस कान्स्टेबल जंभाई ले रहा था। पुल से होकर लोग इधर-उधर आ-जा रहे थे। विश्राम-गृह में कुछ लोग अलस रूप में झुककर बैठे थे। अंतिम प्लेटफार्म पर खड़ी मालगाड़ी में एक औरत और उसके पीछे-पीछे एक आदमी घुसता है। मृत्यु आ रही थी।

क्या एक कहानी अंत होने के पहले मृत्यु संभव है ? साहब मृत्यु माने क्या है ? यह एक कर्ज है जो हमको चुकाना है। इस व्यक्ति की ही बात कीजिए। यह एक्सप्रेस गाड़ी में 'एस-7' डिब्बे में पत्नी और बेटे के साथ यात्रा कर रहा है। बेटे को एंट्रेन्स परीक्षा में चार हजार के करीब रैंक मिला। हाइअर सैकेंड्री के बाद एक साल के लिए शहर के जाने-माने कोचिंग सेंटर में पढ़ाई की। इलैक्ट्रिकल इंजीनियरिंग में उसकी रुचि है। यदि इस कोर्स के लिए सीट नहीं मिलती तो इलैक्ट्रॉनिक्स एंड इन्स्ट्रमेंटेशन, इलैक्ट्रिकल एंड इलैक्ट्रानिक्स और अपलाईड इलैक्ट्रॉनिक्स आदि किसी में सीट पाना है। कम्प्यूटर साइंस एंड इंजीनियरिंग या इनफोरमेशन टेक्नॉलाजी में उसकी दिलचस्पी नहीं है। सीटों का केन्द्रीकृत आबंटन शुरू हो गया है। इसके बारे में दैनिक में हर दिन खबर रहती है। काउंसिलिंग जारी है। कल बेटे की बारी है। उसे किसी प्रकार का संदेह नहीं है। वह आशावादी

है। उसे दृढ़ विश्वास है कि उसके पसंद के कोर्स में उसे एडमिशन मिलेगा। आजकल वह तरह-तरह के सपने देखता है। भविष्य उसे रंगीन दृश्य दिखा रहा है।

मां बड़े प्यार से पूछती है, "बेटा, भूख लगी है क्या?" वह वाकमेन में गाना सुन रहा है। संगीत के नशे में वह कभी आंखें खोलता है तो कभी बंद करता है। वह मजे में संगीत सुन रहा है। रात के भोजन के लिए मां ने उसके लिए चपाती, चिकन करी, भूना हुआ झींगा और आम का आचार का इंतजाम किया था। पानी?

पिताजी अचानक उठ जाते हैं। गाड़ी से जल्दी निकलकर मिनरल वाटर के स्टॉल की ओर जाते हैं। बेटे को भूना हुआ झींगा बहुत पसंद था। मां ने झींगा का डिब्बा खोला और वह उसमें से निकालकर खाने लगा।

"मिनरल वाटर!" पिताजी ने स्टॉल के पास पहुंचकर हांफते हुए कहा।

"पहले रुपया दो।" मालगाड़ी के डिब्बे के अंधेरे में खड़ी औरत ने कहा।

चपाती और झींगा को मिलाकर चबाते हुए बेटे ने मां को इशारा किया "पानी!"

"कहां चले गए?" मां ने खुद से पूछा। वे भीड़ में खड़े थे।

"मिस्टर, दो बोतल मिनरल वाटर देना।"

"पैसेंजर्स यूवर अटेंशन प्लीज।"

"तुम कैसे आदमी हो जी, ज़रा संभाल के।"

"मुफ्त में नहीं न, रुपये तो दिए हैं तुझे।"

"स्टाप स्टाप!"

दो बोतल मिनरल वाटर लेकर वह ट्रेन के साथ दौड़ रहा है। ट्रेन निकलने की सारी सूचनाएं खत्म हो चुकी हैं। वह बेचैन होकर दौड़ रहा है, यहां-वहां दूसरों से टकराता है। उसका रक्तचाप बढ़ रहा है। खुले दरवाजे वाले किसी डिब्बे में वह चढ़ने की कोशिश करता है। मृत्यु उसे वापस भेज देती है। मिनरल वाटर की बोतल टूट जाती है, जल और खून मिल जाते हैं। एक चीख जो पूरी न हो सकी। रेलगाड़ी नहीं रुकती। बारिश हो रही है।

मालगाड़ी में चढ़ा आदमी इधर-उधर देखता है। डिब्बे से कूदकर वह तेजी से चला जाता है। उसकी ओर देखकर थूकते हुए वह औरत कहती है—"बेशरम!"

ईश्वर ओवन्स से हाथ मिला रहा है

☆ सुभाष चंद्रन

सड़सठ सालों के इंतजार के बाद 1980 में जेसी ओवन्स नामक काले आदमी की मुलाकात ईश्वर नामक तानाशाह से हुई। तंबाकू के विष व ज़िंदगी की परेशानियों के संग धरती से धकेलकर निकाले गए जेसी ओवन्स से मिलने के लिए स्वर्ग की रेलिंग को पकड़कर ईश्वर इंतज़ार में खड़ा रहा। ज़िंदगी की लंबी दौड़ के बाद की थकान को प्रकट किए बगैर जेसी ईश्वर को देखकर हंसा। उसके सफेद दांतों की सुंदरता का मजा लेते हुए ईश्वर ने उससे हाथ मिलाया।

क्षणभर के लिए ओवन्स को शक हुआ कि वाकई में ईश्वर हाथ मिलाने जा रहा है या नहीं। उसे छियालिस साल पहले की घटना याद आई। बेर्लिन ओलंपिक्स में विक्टरी पोडियम पर जेसी ओवन्स खड़ा था। चार स्वर्ण पदक पाकर आर्यों के गर्व को चकनाचूर कर खड़े जेसी से हाथ मिलाने के लिए धरती के तानाशाह अडोल्फ हिटलर ने हाथ बढ़ाकर वापस खींच लिया। उस वक्त जीतने के बाद भी जेसी से हाथ नहीं मिलाया गया। लेकिन अब मृत्यु के बाद हाथ कैसे मिलाया जा रहा है?

जेसी ओवन्स को देखकर ईश्वर पादरी के सामने मुस्कराया। "शाबाश बेटा!" ईश्वर ने कहा, "हजारों की हत्या कर प्रथम स्थान पर पहुंचने की कोशिश करने वाले हिटलर को हराने के लिए तुम्हें बर्लिन मैदान की कुछ मीटरों की ही जरूरत पड़ी।"

फिर बड़े प्यार के साथ ईश्वर ने जेसी ओवन्स के काले हाथों को पकड़ा। तब सड़सठ सालों में कई तरह के लोगों के हाथ मिलाने की याद ने उसकी आत्मा को झकझोरा।

डालविला के गिरजाघर की घंटियां बजते समय उसकी आंखें नम हो

जाती हैं। बड़ी मात्रा में केवल काले रंगवालों की उस कालोनी में एक पुराना गिरजाघर है। वहां फटा और पुराना परिधान पहना हुआ एक पादरी था। एक दिन गिरजाघर में यीशु की तस्वीर के आगे ज्यादा देर खड़े रहने पर पादरी ने उसे डांटा।

"घर जा रे!" पारी चिल्लाया, "तुम जैसे लोगों का गिरजाघर में प्रार्थना करने से कोई फायदा नहीं है। जा, जाकर एक बोरी रुई बेचने की कोशिश कर।"

रुई की बोरी लादना इतना नीच काम तो नहीं है। उसके पिताजी और परिवार के सात लोगों का गुजारा रुई बेचकर मिले रुपयों से होता है। वह सबसे छोटी बोरी उठाता था। कारण यही कि वह सात साल का ही था!

सात साल वाला गिरजाघर में प्रार्थना नहीं कर सकना, लेकिन रुई की बोरी उठा सकता है। यह सोचकर उस बालक के मन में दुःख हुआ।

"जेसी!" बड़ा भाई गुस्से से बोला, "सपने देखना बंद करो और बोरी उठाओ।"

उस दिन उसे तीन बोरी रुई ले जाना था। तीन भाई एक साथ बीमार पड़ गए। सात भाई और पिताजी मिलकर एक साथ शाम ढलने तक काम करने पर भी पेट भर खाना नहीं जुटा पाते। ऐसे में तीन लोग बीमार हो जाएं तो क्या कहना?

"जेसी तू इसे उठा पाएगा?" बड़े भाई ने पूछा।

"देखो इतनी रुई एक साथ बांधी गई है। पैंतालीस किलो होगी। बीच-बीच में मैं भी उठाऊंगा।"

जेसी के बड़े भाई को पता था कि जेसी सात साल का होने के बावजूद ताकतवर और दृढ़ संकल्प वाला था।

पीठ दिखाते हुए जेसी ने कहा, "लो, यहां पर रखो।"

जब पिताजी को पता चला कि बड़े जद्दोजहद के बाद कई किलोमीटर पार कर जेसी ने रुई की बोरियों को लक्ष्य-स्थान तक पहुंचा दिया तो उस दिन रात को पिताजी ने उसके नन्हे हाथों को सहलाते हुए कहा, "मेरा जेसी ताकतवर है।"

पिताजी ने अपने हिस्से की डबल रोटी में से आधी जेसी को दी।

"यहां हवा स्वस्तिक आकार में बहती।" बर्लिन के ओलंपिक

स्टेडियम में सुबह टहलने पर मित्र ने याद दिलाया।

" 'जेसी' एक बात याद रखो। यहां पर कोई भी काला अव्वल बने, यह हिटलर सह नहीं पाता।"

जेसी ने मित्र की बातों पर ध्यान नहीं दिया। आज सौ मीटर और दो सौ मीटर की दौड़ है। वह अमरीका से इतनी दूर हिटलर के पराक्रमों को सुनकर वापस लौट जाने के लिए नहीं आया था।

"क्रिस्टी, लंबी कूद कहां पर होगा?" जेसी ने पूछा। मित्र ने मैदान के उस भाग की ओर इशारा किया जहां पर लंबी कूद होने वाली थी। दोनों उस ओर चले।

वह दिन जेसी का था। सौ मीटर, दो सौ मीटर और चार सौ मीटर के रिले में भी उसे स्वर्ण पदक मिला। एक, दो, तीन !

चौथे स्वर्ण पदक की भी संभावना थी। जेसी को मालूम था कि जर्मनी का लसलांग, लंबी कूद में उससे भी माहिर था। जेसी को लगा कि उसने सिर पर जरूरत से ज्यादा भार चढ़ा रखा था!

क्वालिफाइंग राउंड में लसलांग बहुत लंबी दूरी कूद चुका था। जेसी का तीसरा अवसर था जिसमें उसे क्वालिफाई करना ही था। वह अपने मन को प्रार्थना के लिए बहुत दूर डालविल्ला के गिरजाघर भेजकर कूदने के लिए तैयार खड़ा था। तब उसके सामने लसलांग आकर खड़ा हुआ।

"जेसी, कूदने के लिए तुमने जो निशान लगाया उसे थोड़ा-सा बदल देने से तुम आसानी से क्वालिफाई कर पाओगे।' लसलांग ने कहा।

आत्मविश्वास बढ़ाने के लिए यह काफी था। छब्बीस फुट सवा पांच इंच कूदकर स्वर्ण पदक हासिल करने पर लसलांग ने बधाई देने के लिए हाथ बढ़ाया, "तुम बहादुर हो मित्र। काले वर्ग की दृढ़ता को तुमने हिटलर के आगे साबित कर दिया।" लसलांग ने जेसी से हाथ मिलाया। काला और सफेद हाथ बिना भेदभाव के चिपक गया।

जेसी ने अपने हाथों को देखा। हाथों में असाधारण सा कुछ नहीं था। फिर? हिटलर ने विक्टरी पोडियम पर खड़े बाकी धावकों से हाथ मिलाया। लेकिन उन्होंने मुझसे हाथ नहीं मिलाया।

जेसी को मालूम था कि नाजी लोग काले जात के लोगों को हीन मानते हैं। मित्र क्रिस्टी ने कई बार कहा कि बेरेलिन ओलंपिक्स का मकसद आर्यों की शक्ति को दर्शाना था।

आर्यों की शक्ति भला क्या है? यही कि विजेता को बधाई तक नहीं देना।

बहुत सारी चिंताएं भरे मन से जेसी सोने गया। ठंडी हवा बह रही है, इसमें कोई खतरा नहीं है। लेकिन नाजियों पर ध्यान रखना पड़ेगा। वे मेरे ऊपर हमला....

अंधेरे में कुछ लोग अचानक जेसी की तरफ आए। एक क्षण के लिए जेसी डर गया!

''ऑटोग्राफ प्लीज।'' वे नाजी उसके प्रशंसक थे।

जेसी ने सभी को ऑटोग्राफ दिया। कइयों ने जेसी को छूकर देखा। कुछ ने बड़े ही आदर के साथ हाथ मिलाया। एक जर्मन ने हाथ मिलाने से इंकार किया, लेकिन अब कितने ही जर्मन हाथ मिला रहे हैं।

''यह तुमने अच्छा नहीं किया।'' मित्र ने गुस्से में जेसी को देखा। फिर कहा, ''ओलंपिक चैम्पियन ने घोड़े के साथ बाजी लगाई, शर्म की बात है। तुमने अपने यश को केवल दो हजार डॉलरों के लिए गंवा दिया।''

जेसी ने चुपचाप सारी बातें सुनीं। एक के बाद एक सिगरेट पी। बर्लिन ओलंपिक्स में मिले मेडल खाने से भूख तो नहीं मिटेगी। लेकिन, उसने किसी से यह नहीं कहा।

''बुरी बात है'' बार-बार लोग भला-बुरा कह रहे हैं। ''कैसी बुरी बात है?'' अंत में जेसी ने पूछा। ''मित्र, तुझे मालूम है कि सबसे बेहतर धावक के लिए दिए जाने वाला सल्लीवन अवार्ड अभी तक मुझे नहीं मिला। मुझे यकीन है कि तुम यह नहीं कहोगे कि मुझे इसका हक नहीं है। अमरीका में अभी तक मेरी वकालत करने वाला कोई नहीं था। ऐसे में भूख मिटाने के लिए मैं चीते से भी लड़ूंगा।''

''अच्छा सुनो। अगले हफ्ते मैं एक प्रतियोगिता में भाग ले रहा हूं। कुत्तों के संग दौड़! आप जरूर आइएगा।''

जेसी का मित्र चौंक गया। तब तक उपदेश दे रहे मित्र ने उससे हाथ मिलाते हुए कहा, ''ठीक है ओवन्स। अलविदा! हमारी दोस्ती यहां पर खत्म होती है।''

बिछुड़ने पर भी हाथ मिलाना।

स्वर्ग की ओर के रास्ते से होकर जेसी ईश्वर के साथ चला। जेसी को बीती हुई सारी बातें याद हो आईं और वह चुपचाप चलने लगा।

चीतों और घोड़ों की सृष्टि करने वाला ईश्वर जेसी के लिए आहिस्ता चला रहा है।

"ओवन्स तुम क्या सोच रहे हो?" ईश्वर ने पूछा।

"आपको सब कुछ मालूम है न!" जेसी ने ईश्वर से पूछा।

"हिटलर को भूलने के लिए मैं एक कहानी सुनाऊंगा। सुनना चाहोगे।" ईश्वर ने पूछा। जेसी खुश हुआ कि उसका गुलाम दादा या फिर बेचारे, पिताजी ने कभी उसे एक कहानी नहीं सुनाई।

जेसी कहानी सुनने के लिए तैयार हो गया।

एक बार जहाज के दुर्घटनाग्रस्त होने पर एक गोरा समुद्र में फंस गया। रात-दिन तैरकर अंत में वह एक द्वीप में पहुंचा। उस द्वीप में काले आदिवासी रहते थे। गोरा डर गया कि शायद आदमखोर थे।

लेकिन द्वीपवासियों ने वहां पहुंचे अतिथि को प्यार से स्वीकारा। उसकी खातिरदारी की। बहुत समय साथ रहकर काले और गोरों ने आपस में बातचीत करना शुरू किया। ऐसे में गोरे को ढूंढ़ता हुआ एक जहाज वहां आया और द्वीप में लंगर डाला।

जाते समय गोरे ने धन्यवाद दिया और आदिवासियों के मुखिया से कहा, "धन्यवाद मित्र, भले ही आप काले रंगवाले हैं, लेकिन आपका दिल सफेद है।"

लेकिन आदिवासी मुखिया ने उसकी प्रशंसा को नकारते हुए कहा, "कहो कि शरीर के रंग जैसा हमारा दिल भी काला है क्योंकि हमारे द्वीप में सबसे विशिष्ट रंग काला है।"

नतमसस्तक होकर गोरा जहाज पर चढ़ा। कालों ने उसको विदाई की।

"इस कहानी से तुम्हें क्या समझ में आया?" ईश्वर ने ओवन्स से पूछा। ओवन्स चकित होकर खड़ा रहा और कहा, "सब कुछ।"

धरती पर यश प्राप्त लोगों के रहने की जगह पहुंचने पर ईश्वर रुक गया। एक बार फिर ओवन्स से हाथ मिलाते हुए कहा, "यह लो, हमेशा के लिए तुम्हें रहने के लिए जगह। यहां से भलाई की कहानियां सुनकर, बोलकर, तुम अपनी आत्मा की परवरिश करो, ज्यादा ऊंचाई पर, ज्यादा दूरी पर, ज्यादा तेजी से।"

•

बेचारा गांववासी

☆ ई. हरिकुमार

अंत में बहुत दिनों की नीरसता के बाद पड़ोस में एक घटना हुई। वहां अकेला रहने वाले बूढ़े ने आत्महत्या की। उस बंगले में अस्सी साल का एक बूढ़ा अकेला रहता था। उसकी बेटी मंगलापुरम में पति के साथ रहती थी। पोती बीस किलोमीटर की दूरी पर स्थित कॉलेज में पढ़ रही है। वह होस्टल में रहती है। दो हफ्ते में एक बार या महीने में एक बार वह दादा के यहां आती थी जब उसे अकेले बैठकर पढ़ने को मन करता था।

सुबह खबर पाकर जब हम वहां पहुंचे तो बूढ़ा चारपाई पर लेटा हुआ था। बाएं हाथ के घाव से बिस्तर पर गिरा खून सूखने लगा था। उसके चेहरे पर कोई गम नहीं, वह संतृप्त लग रहा था।

कई सालों से हमारे गांव में घटनाओं की पुनरावृत्ति होती आ रही है। हम लोग आपस में मिलने पर हंसते नहीं थे। यह इसलिए था कि मिलने पर पुरानी यादें ताजी हो जाएं तो, इसलिए हम मुंह मोड़ लेते थे। गपशप के लिए कुछ नहीं था क्योंकि कोई घटना होती ही नहीं थी। हम उन बातों से डरते थे जिसमें कोई नयापन नहीं था। सुबह उठकर नहा-धोकर नाश्ता करके दुकान या कार्यालय जाने वाले पति, पीठ पर भारी बैग लेकर उतरे हुए चेहरे के साथ स्कूल जाते बच्चे, उसके बाद बुदबुदाकर घर का काम-काज निपटाकर दोपहर के लिए खाना पकाने में लगी औरतें। हर दिन यही दिनचर्या, इसलिए हम किसी से संपर्क नहीं रखते थे। गांव में साईकिल दुर्घटना में किसी का हाथ-पांव टूटना तो दूर, किसी की उंगली कट जाए तो भी बड़ी सी घटना होती। हमें कभी-कभी चौंकाने वाले चोर भी ज्यादा लाभ के लिए गांव छोड़कर कब का ही चले गए।

मीडिया को शुक्रिया कि हमें दूसरे देशों में होने वाली घटनाओं की जानकारी मिलती है। रेलयात्रियों को आलू भूनने की सरलता से भूनना, घर में घुस लोगों को बाहर निकालकर हत्या करना, फिर उनके घरों को जलाना तथा मानव बम के रूप में कई लोगों की हत्या की जानकारी हमें मिलती है। टी.वी. के दृश्य हमें नशा पहुंचाते हैं। वहां के लोग भाग्यशाली हैं। केवल हमारे गांव के लोग....इंतजार में हैं....ऐसे में....

पुलिस के आने में देरी होगी। तब तक हम इस दुर्घटना को लेकर खुश हो सकेंगे। आज हम कार्यालय नहीं जाएंगे, दुकानें नहीं खुलेंगी। कम-से-कम पुलिस आकर शव को एम्बूलेन्स में ले जाने तक हमें खुशी मनाने की आज़ादी है।

बूढ़े के रिश्तेदार एक-एक कर आने लगे। उन लोगों ने अंदर चारपाई के पास जाकर एक बार देखा, फिर बाहर आकर अपने अन्य रिश्तेदारों को ढूंढ़ निकालकर बनावटी गंभीरता में बातें करने लगे। जो रिश्तेदार नहीं पहुंचे उनको खबर देने के लिए युवकों को भेजा। यह भी पता लगाया कि बेटी को खबर की है या नहीं। फिर बेटी को संपर्क करने की कोशिश हुई। आधे घंटे की कोशिश के बाद अंत में मोबाइल कनेक्ट हुआ और जैसे ही बात पूरी हुई डिस्कनेक्ट भी हो गया।....बड़ा ही विचित्र दृश्य था। इस प्रकार के दृश्य के लिए गांववालों को कितना समय इंतजार करना पड़ा।

रोती हुई सीढ़ियां पार कर पोती आई। रो-रोकर उसकी आंखें लाल हो गई थीं। जैसे ही वह सीढ़ियां चढ़ आई, रिश्तेदार उसे अंदर ले गए। अंदर से उसकी सिसकियां सुनाई दे रही थीं। दस मिनट में गवाह बाहर निकले। अपनी खुशी को छिपाकर नकली सांत्वना में वे यह समझाने लगे कि कैसे पोती दादा के ऊपर गिर रो पड़ी, दूसरों ने उसको कैसे समझाया वगैरह-वगैरह। पहला व्यक्ति जब बता रहा था तो बीच-बीच में वह रुक जाता था। यही नहीं, वह सही बात नहीं बता पा रहा था। यह देखकर दूसरे ने आंखों देखा हाल सुनाने का जिम्मा उठा लिया। बात करते-करते वे अंदर की ओर गए।

अब तो जैसे समाचारों का प्रलय ही था। पोती कल ही वापस होस्टल लौटी। दादा भूखे थे। ऐसा नहीं कि उनके पास रुपये नहीं थे; या तो उनसे खाना बनाना वगैरह नहीं होता था या फिर जीने की

निरर्थकता के कारण। सुबह खाना बनाकर, घर की सफाई करनेवाली नौकरानी बीमार हो गई। इसलिए एक हफ्ते से वह नहीं आई। दादा की हालत देखकर होस्टल छोड़ हर दिन भीड़ भरी बस में चालीस किलोमीटर की यात्रा करने के बजाय दादा जी के पास से ही आना पोती की त्यागशीलता थी। सालों से हमें किसी प्रकार की खुशी नहीं मिली, ऐसे में आज जो खुशी मिली उसे बीस साल वाली की त्यागशीलता के आगे ठुकराना नहीं चाहते थे। एक दूसरा पहलू भी था। शायद पोती की त्यागशीलता से डरकर कई महीनों और सालों तक जी सकने वाले दादा ने अपनी जिंदगी खत्म कर ली। अपनी मृत्यु से उन्होंने पोती की त्यागशीलता को करारा जवाब दिया।

नौकरानी रसोईघर के बरामदे में बैठी रो रही है। उसको बहुत बड़ा धक्का लगा। रोते हुए उसने कहा, "बाहर के कमरे में पड़ी हुई चारपाई ले जाने की अनुमति दादा ने दी थी। उसी दिन ले जाना था। पति को बताया तो कहें कि व्यस्त हैं, बाद में ले जाएंगे। उनकी व्यस्तता की ऐसी की तैसी! अब मेरी बातों पर कौन विश्वास करेगा...मेरी नियति है।

पुलिस जीप पहुंच गई। लोग दोनों छोरों पर खड़े हो गए। अब मजा आएगा। हम लोग टी.वी. में प्रसारित एक भी धारावाहिक नहीं छोड़ते, सब देखते थे। हमारी नीरसता एक हद तक टी.वी. धारावाहिकों से दूर होती थी जो जिंदगी से किसी प्रकार की भी निकटता नहीं रखते फिर भी दर्शकों को अंत तक बांधे रखती थी। हम यह जानते हैं कि एक व्यक्ति की आत्महत्या करने पर पुलिस आएगी और आस-पड़ोस के लोगों से पूछताछ करेगी। पुलिस के आने से माहौल बदल जाता है। पूछताछ के दौरान हाथापाई होगी। लेकिन हमें निराशा हाथ लगी। ऐसा कुछ नहीं हुआ। पुलिस को मा़लूम था कि लोगों का ध्यान उन पर है, इसलिए वे बड़े शान से चले। वे रसोई या अन्य कमरे में न जाएं इसलिए रिश्तेदार उन्हें 'आइए, आइए' कहकर कमरे में ले गए। हमको यह समझ लेना चाहिए था कि धारावाहिकों में जिंदगी की सच्चाइयों को नहीं दिखाया जाता। अब कहकर भी क्या फायदा?

फिर एम्बूलेंस और साथ में दो पुलिस वाले आए। रिश्तेदारों की सहायता से बूढ़े के शरीर को सूखी लकड़ी-सा उठाकर एम्बूलेंस में रखा गया। एम्बूलेंस गेट पार कर जाने पर हमने सोचा, बस इतना ही। इतने

सालों से हम लोग इंतजार किए यही देखने के लिए?

कमरे से बाहर निकले लोगों ने ज्यादा विवरण दिए। बूढ़े के बारे में, परिवार के बारे में, उनकी पत्नी का देहांत छह साल पहले हुआ आदि। यह तो हमें मालूम है। हमने तो उनकी पत्नी को देखा है। वह औरत हमेशा आंगन में या अहाते में दिखाई देती थी। नारियल के पेड़ का सूखा पत्ता गिरने पर उसे उठाकर रसोईघर ले जाती थी। बाड़े के उस पार झोंपड़ी में रहने वाले उसे उठाकर ले जाने के पहले ही उठा ले जाती थी। रसोई में कूकिंग गैस की सुविधा है। बेटी लकड़ी जलाकर खाना पकाना पसंद नहीं करती। मंगलापूरम से छुट्टियों में आने पर रसोई से लकड़ी का गंध आने पर वह मां को डांटती। मां तुम इतना कंजूसीपन किसके लिए कर रही हो....। फिर वह सूखी टहनियों को नारियल के पेड़ के नीचे जमाकर जला देती। जो भी हो, पड़ोस के गरीबों को फायदा नहीं मिलता। उनका कहना है कि गरीबों की सहायता कर उसे स्वर्ग नहीं सिधारना है। वह औरत एक दिन सूखी डाली की तरह आंगन में गिर पड़ी। सूखी लकड़ियों के जलने जैसा उसका शरीर भी अहाते में....

पत्नी की मृत्यु के बाद बूढ़ा अकेला हो गया। 'सुना कि दादा कुछ खाता-पीता नहीं था' एक ने कहा। इकट्ठे हुए लोगों में एक इतिहासकार भी था जिसके चारों ओर भीड़ जमा थी। उसने ऐसी जानकारी दी जो कि दूसरों के पास नहीं थी। वह यह चाहता था कि दूसरे लोग उसकी बातों को नहीं समझें, इसलिए वह एक वाक्य या छोटे अक्षरों में कहता, 'परसों वह लड़की कॉलेज से....' बाकी की बात कहने के लिए वह ओंठ हिलाता ....'तब पता चला।' शायद उसका मतलब यही था। नौकरानी एक हफ्ते से छुट्टी पर होने के कारण खाना नहीं बना। बूढ़ा बिना भोजन के एक हफ्ता रहा। सभी सुविधाओं के होते....

"अरे, हम सब पड़ोस में होते हुए भी बूढ़ा....।" इतिहासकार का नजरिया बदला। हमारी खुशी में बाधा पहुंचाने वाला यह आदमी हमारे गांव का नहीं लगता। शायद किसी दूसरे गांव का होगा। साले की हमदर्दी! मन में सोचा कि उससे निपटूं कि इतने में एक कार गेट के पास आ रुकी। बूढ़े की बेटी और पति बाहर निकले।

पीले रंग की साड़ी और स्लीवलेस ब्लाउज पहने चालीस साल की औरत। उसके पीछे सफारी सूट पहने हुए पति। बाएं हाथ की तर्जनी में

चाबियों को घुमाते हुए वह सबको देखकर हंसा। लोगों की भीड़ देखकर पत्नी में किसी प्रकार की प्रतिक्रिया नहीं हुई। न दुख, न आंसू। रिश्तेदार उन्हें लेने गेट पर गए।

"हम नॉन स्टॉप ड्राइव कर आए।" पति ने कहा, "सुबह साढ़े सात बजे रवाना हुए। अब एक बज गया है।"

"साढ़े पांच घंटा।" एक आदमी ने कहा, "मतलब आपने बहुत बढ़िया ड्राइविंग की है।" पति के चेहरे पर गर्वीला भाव था। पत्नी आगे चली।

"ले गए....इस प्रकार की मृत्यु का बिना पोस्टमार्टम के...."

हम लोगों पर नीरसता छाने लगी। ऐसा ही रहा तो....? अब पोस्टमार्टम के बाद शव लाने पर जो सीन होगा उसी की प्रतीक्षा है। अंतिम सीन। बूढ़े की बेटी और पति सुरक्षा दल के सहारे अंदर गए। अचानक पोती के रोने की आवाज सुनाई दी, क्षणभर के लिए। हम लोग इंतजार कर रहे थे, लाइव रिपोर्ट के लिए। इतिहासकार जो हमारा रिपोर्टर भी था अंदर हो रही बातों की ताजा खबर लेकर आया।

"बेचारी लड़की रो रही है। मां उसे डांट रही है। दादा को अकेला छोड़ बैंगलूर जाने पर...."

हम लोग बिना किसी रोमांच के जीने के लिए मजबूर हैं। अब इंतजार करने से कोई फायदा नहीं है। एम्बूलेंस आएगी, सफेद कपड़ों में लिपटे शव को चार-पांच लोग उतारेंगे, आंगन में उसे लिटाया जाएगा, फिर...

कुछ नहीं हुआ। दुखी मन से हम गांव वाले उस घर की सीढ़ियां उतरे।

•

कोमाला

☆ संतोष एचिकानम

कूंडूर विश्वन ने अपने घर के सामने एक बोर्ड लगाया। उस पर लिखा था, 'कर्ज के कारण आगामी अगस्त 15 तारीख की सुबह बारह बजे परिवार समेत मैं आत्महत्या करूंगा।' इसके चलते कूंडूर विश्वन संचार माध्यमों में चर्चा में रहे। सार्वजनिक रूप में की गई यह घोषणा वर्तमान केरल की आर्थिक, सामाजिक और मानसिक असमानताओं की ओर इशारा करता है। विश्वन सपरिवार मरेगा या नहीं....? हमारे इस प्रश्न का जवाब देने के लिए विश्वन टेलीफोन लाईन पर मौजूद है। भारत के उनसठवें स्वतंत्रता दिवस पर यह विचित्र धमकी सच होगी तो इसका क्या नतीजा निकलेगा? कसूर किसका है? वेल्लूर सेवा सहकारिता बैंक या पूर्वी वेल्लूर में नंबर 1256/82 में रहने वाला विश्वन का या प्रिय मित्र सुधाकरन का, जो बैंक से 50,000 रुपये का उधार लेकर फरार हो गया जिसके लिए विश्वन को जामिन रहना पड़ा। केरल के सारे लोग इस समस्या पर ध्यान दे रहे हैं। ऐसे में इस समस्या के भिन्न पहलुओं पर बात करने के लिए प्रसिद्ध मनोवैज्ञानिक, सामाजिक कार्यकर्ता व लेखक डॉ. नंदकुमार, वेल्लूर सहकारिता बैंक के सचिव माधवन नायर, नेशनल क्राइम रेकार्डस रिसर्च ब्यूरो में कार्यरत अलेक्स पुन्नूस आदि हमारे साथ स्टूडियो में व विश्वन कूंडूर, अड्वकेट फातीमा बीगम आदि टेलीफोन लाइन पर मौजूद हैं। न्यूज टाइम जारी है। इसके पहले एक छोटा-सा ब्रेक।

आपके घर के स्वप्नों को साकार बनाने के लिए
हमेशा आपके संग, मयूर टवर्स एंड रेसिडेंसी
बेटर लोकेशन...बेटर लाइफ स्टाइल
क्रिएशन्स फोर जेनरेशन्स

न्यूज टाईम जारी है....श्री विश्वन कूंडूर....सुनाई देता है....वास्तव में क्या हुआ ? आपके पारिवारिक स्थिति के बारे में कुछ बताइए।

"मैं विश्वन....कूंडूर से बोल रहा हूं। मेरे परिवार में पत्नी और दो बच्चे हैं....कभी भूखा रहा, कभी प्यासा, बहुत मेहनत करने के बाद साढ़े सात सेंट जमीन खरीदा और उसमें एक घर बनाया। घर के बाहरी इलाके पर सीमेंट नहीं किया गया है। जैसे-तैसे घर बना दिया और पिछले अक्तूबर से रहने लगा। यदि बैंक वाले घर और जमीन पर कब्जा करेंगे तो फिर आत्महत्या के सिवा कोई रास्ता नहीं दिखता।"

"विश्वन तुम कर्ज में डूबे कैसे?"

"डूबा नहीं। मुझे डुबोया गया...मित्र सुधाकरन ने। दो साल पहले की बात है मैं सपरिवार कूंडूर पहुंचा। सुधाकरन और मैंने आठवीं कक्षा तक एक ही बेंच में वेल्लूर के सरकारी स्कूल की पढ़ाई की। मुझे अब भी पोदुवाल मास्टर की बात याद है, 'परोपकार ही पुण्य है।' एक दिन सुधाकरन मेरे घर आया। रो-धोकर पहले जामिन के रूप में मेरा हस्ताक्षर लिया। मेरी हथेली को दबाते हुए सुधाकरन ने भी यही कहा, "परोपकार ही पुण्य है। पाप दूसरों को पीड़ा पहुंचाता है। विश्वन, मैं यह मदद नहीं भूलूंगा।" वह रो पड़ा और कहा, "कोई जरूरत पड़े तो मुझे जरूर बताना।" तीन साल बाद पचास हजार रुपया और ब्याज का रकम मिलाकर बैंक का नोटिस मिला तो मैंने सुधाकरन से कहा, "मेरी दो बेटियां हैं, तू हमें बर्बाद तो नहीं करेगा?"

"ठीक है विश्वन, फिर बात करेंगे।" इस समस्या पर बात करने के लिए वेल्लूर सहकारिता बैंक का सचिव माधवन नायर हमारे साथ है। "मिस्टर नायर, आप जिस बैंक के सचिव हैं, उस बैंक के कारण एक बेकसूर इंसान आत्महत्या करने जा रहा है। आपकी प्रतिक्रिया क्या है?"

"हम सहकारिता बैंक अधिनियम के अनुसार ही काम कर सकते हैं। लोन सुधाकरन ने लिया। वह लोन नहीं भरेगा तो लोन और ब्याज मिलाकर छियानवे हजार तीन सौ पैंतालिस रुपया पहला जामिन को भरना पड़ेगा। वरना विश्वन के जमीन जायदाद पर बैंक कब्जा करेगा। बैंक के पास दूसरा कोई रास्ता नहीं है।"

"क्या इसकी गंभीरता के बारे में विश्वन को बताया था?"

"हां, रजिस्टर्ड नोटिस भेजा था और बैंक के सारे प्रोसीडयूर का

पालन किया। रुपया जुटाने के लिए विश्वन को पर्याप्त समय दिया गया। लेकिन उसने केवल सात हजार रुपया ही भरा। अब यह रकम ब्याज मिलाकर छियानवे हजार तक पहुंच गया है।"

वापस विश्वन से बात करते हैं...."हैलो....विश्वन....बैंक के सचिव की बात आपने सुना?"

"हां सर, उन्होंने ठीक ही कहा। उनके लिए सात हजार रुपया मोटी रकम नहीं है। मगर तीन साल सिलाई करके मेरी पत्नी राधा ने कितनी मेहनत की, यह किसी को नहीं पता। अंत में उसके घुटनों में दर्द हुआ। पोलेक्कड़ा वैद्य के यहां से दवाई ली। मेरे अंदर एक सच्चा इंसान है। वरना मैं सात हजार रुपया बैंक में जमा कर दया की भीख क्यों मांगता?"

"दूसरों के आगे दया की भीख मांगने से ज्यादा शर्म की बात और क्या हो सकती है? सुधाकरन के लिए मैंने यह भी सहा। अब मेरे पास घर और जमीन के सिवा और कुछ नहीं है।"

"श्री माधवन नायर। इतना ईमानदार और ऊपर से धोखा खाए इस जामिन के मामले में कृषि से संबंधित उधारों की माफ किए जाने के समान बैंक की तरफ से इनको दया दिखाई जा सकती है न?"

"दूसरों के रोने-धाने के आधार पर उधार माफ किए जाने लगे तो बैंक बंद कर ताला लगाना पड़ेगा। आदमी की जिदंगी की सुरक्षा की जिम्मेदारी हमारा काम नहीं है। बैंक का काम रुपया देना व लेना है। लोन वापस न किया तो हम विश्वन के घर को जब्त करेंगे।"

"इस मामले में मिस्टर नायर ने बैंक का रवैया साफ बता दिया है। लेकिन विश्वन कूडूर की जिंदगी तराजू में लटकी हुई है। प्रसिद्ध मनोवैज्ञानिक व सामाजिक कार्यकर्ता श्री नंदकुमार आपका क्या कहना है? विश्वन आत्महत्या करेगा?"

"कर सकता है और नहीं भी। जो भी हो यह समझा जा सकता है कि विश्वन अपने मन में आत्महत्या करने की योजना बना रहा है। लेकिन मृत्यु के बारे में सोचने वाले व्यक्ति को उससे मुड़ने के लिए प्रेरित करें तो जिंदगी खूबसूरत लगने लगेगी। यह ज्यादा डरावना है। उदाहरण के लिए फांसी पर चढ़नेवाले से उसकी अंतिम इच्छा के बारे में पूछा जाता है..."

"हां, बताओ डाक्टर।"

वह फंदा द्वारा होने वाली निश्चित मृत्यु के आगे विरक्त नहीं होता

....अच्छा खाना....पहनावा...फोन कॉल....मरने पर भी मनुष्य की इच्छाओं का अंत नहीं होता। विश्वन के मामले में भी यही हुआ। उसे आत्महत्या करनी ही है। लेकिन मृत्यु से भी भयंकर डर उसके अंदर है। जिंदगी का लालच भयंकर होता है। वह हमें इच्छाओं की खाई में उतारेगा। मिट्टी से बने घड़े जैसी हम उसके गहराइयों में उतरकर जल-जंतुओं का स्पर्श पाकर स्वप्न में तबदील हो जाएंगे। कभी यह घनिष्ठ मित्र-सा कंधों पर थपथपाकर हमें कहीं ले जाएगा और फिर एक घने जंगल में हमारा साथ छोड़ देगा। अब तक किसी व्यक्ति द्वारा न छुआ गया पौधा और मिट्टी की तीक्ष्ण गंध हमें एक तितली बना देगी। वृद्ध पेड़ों की खामोशी के ऊपर बाण-से हम गुजरेंगे। इन सारी चीजों को पार कर वेल्लूर सहकारिता बैंक का उधार चुकाने वाला या राधा नामक सिलाई करने वाली के पति के रूप में विश्वन अभी भी जी रहा है तो वह आत्महत्या करेगा, पक्का..."

"डाक्टर नंदकुमार, समस्या पर आते हैं।"

"एस एस आई एम कमिंग टू देट एस्पेक्ट, मरने के लिए जिस व्यक्ति ने निर्णय लिया वह मरेगा? लेकिन विश्वन की बात वैसी नहीं है। मरने के लिए उसने स्वतंत्रता दिवस को चुना। घर के सामने बड़े अक्षरों में तख्ते पर धमकी लिखी हुई है। मरने के लिए नहीं, जिंदा रहने के लिए उसने ऐसा किया। जैसे मैंने पहले सूचित किया, वह जिंदगी को मृत्यु-सा प्यार करता है। वाटएवर इट ईज, द प्रोबलेम ईज वेरी सीरियज, राईट टू लिव विथ पर्सनल लिबरटी ईज फनडेमेंटल, अगर यह भी इंकार किया जाए तो...."

विश्वन ने हमारे सामने यहां के सोशियल सेट अप के विकृत रूप को प्रस्तुत किया है। यह केवल वेल्लूर सहकारिता बैंक तक सीमित समस्या नहीं है।

"डॉक्टर, विश्वन के बारे में आपकी क्या राय है? उसे मरना चाहिए या नहीं?"

"यह बताना मेरा काम नहीं है। अच्छा, एक और सच्चाई भी है। समाज में किसी समस्या पर चर्चा के लिए एक शहीद की जरूरत है.."

"ओ.के. सर, चर्चा जारी रखें....इससे पहले आज की सुर्खियां।

अम्यूजमेंट पार्क से वसूल किए जानेवाले एंटरटेनमेंट टैक्स को विधानसभा ने पारित किया।

शबेरीमलै कल से बंद होगी।

आशेश टेस्ट में आस्ट्रेलिया पहली इनिंग्स में 196 पर आलआउट।

'विश्वन कोंडूर की समस्या को मनोवैज्ञानिक आधार पर चर्चा करते हुए डॉ. नंदकुमार ने चर्चा को एक नई मोड़ दी है। आत्महत्या के कानूनी कोणों के बारे में बताने के लिए हाइकोर्ट की वकील फातीमा बेगम हमारे साथ टेलीफोन लाईन पर मौजूद हैं।"

"हेलो....एडवोकेट फातिमा बेगम...."

"यस!"

"न्यूजटाईम में आपका स्वागत है। उम्मीद है कि अब तक हुई चर्चा पर आपने ध्यान दिया होगा।"

"हां, बिल्कुल।"

"विश्वन आत्महत्या करेगा या नहीं। इस बात को रहने दीजिए। आपसे हम आत्महत्या से संबंधित कानूनी कारवाई के बारे में जानेंगे। आत्महत्या करने वाले व्यक्ति को कानूनी तौर पर कौन-सी परेशानियों का सामना करना पड़ेगा....?"

"हेलो....हेलो....हेलो.....क्षमा कीजिए। तकनीकी खराबी के कारण लाईन नहीं मिल रहा है। उनसे फिर से संपर्क करेंगे। इससे पहले केरल में साल दर साल बढ़ती हुई आत्महत्या की प्रवृत्ति के बारे में बात करने के लिए नेशनल क्राइम रेकाडर्स रिसर्च ब्यूरो के सीनियर कर्मचारी श्री अलेक्स पुन्नूस हमारे साथ हैं। "सर....क्या यह बात सही है?"

"बिलकुल सही है। केरल हैज द हाइएस्ट रेट आफ सूईसाइड्स इन द कंट्री। नेशनल एवरेज देखें तो केरल बहुत ही खतरनाक स्थिति की ओर जा रहा है। मद्यपान, अपराध आदि की स्थिति भी भिन्न नहीं है। 2004 के आंकड़ों के अनुसार केरल में 1,13,000 लोगों ने आत्महत्या की। हर साल सूईसाइडस के रेट बढ़ रहे हैं। और एक बात....यह सुनकर आप चौंक जाएंगे। हाल ही में किए गए सर्वे के अनुसार ग्यारह हजार स्कूली छात्र....कितना ? इलेवन थाउजेंड ! इसमें 27% ऐसे हैं जो निरंतर आत्महत्या के बारे में सोचते रहते हैं, 16% ने आत्महत्या की कोशिश की। यदि ऐसा ही होता रहा तो दस-बीस सालों के बाद केरल दिवंगत लोगों का राज्य बन जाएगा। केरल तो चर्चित लेखक हूवान रुल्फा के 'पेद्रोपरामो' नामक उपन्यास में बताए गए कोमाला नामक शहर जैसे बन

जाएगी। हम तुम सब दिवंगत....ह ह ह....केरल कोमाला, कोमाला केरल ....ह ह ह...''

''सर, लोग आत्महत्या क्यों करना चाहते हैं?''

''यह प्रश्न डॉ. नंदकुमार से करें तो बेहतर होगा। हमारे पास केवल कुछ आंकड़े हैं। फिर भी बताऊंगा। बीमारी, उधार, प्यार में धोखा, निराशा आदि अनेक कारण हैं। जहां तक विश्वन की बात है वह उधार की थी। लेकिन इसे पूरी तरह उधार भी नहीं कहा जा सकता। इसके पहले उन सामाजिक हालातों को जानना होगा जिनके चलते वह कर्जदार बन गया। तब यह व्यक्त हो जाता है कि यथार्थ कारण कर्ज नहीं। देश का संविधान उसे कर्जदार बनाता है। उदाहरण के लिए....;;

''सर, वापस आते हैं। अब एडवोकेट फातिमा बीबी लाइन पर हैं। हेलो मैडम, कुछ देर पहले आत्महत्या के कानूनी तौर-तरीकों के बारे में मैंने सूचित किया था। क्या इस पर विस्तार से बताएंगी?''

''आई.पी.सी. 307 दफे के अनुसार आत्महत्या की कोशिश करना अपराध है। इस मामले में न्यायालय दस साल तक की सज़ा सुना सकता है। आत्महत्या करना ही नहीं आत्महत्या के लिए प्रेरित करना भी अपराध है। विश्वन, जिसने परिवार समेत आत्महत्या करने की बात को तख्ते पर लिखकर प्रदर्शित किया है, यदि वह पंद्रह अगस्त को आत्महत्या नहीं करता तो पहले बताई गई दोनों सजा उसे भुगतनी ही पड़ेगी। एक तरह से देखा जाए तो वह पत्नी और बच्चे को भी मार रहा है...''

''बहुत पहले न्यायालय का एक फैसला आया कि आत्महत्या अपराध नहीं है।''

''वह फैसला महाराष्ट्र के न्यायालय का था। बाद में सुप्रीम कोर्ट ने उस फैसले को रद्द कर दिया।''

''इसका मतलब यह निकलता है कि विश्वन कूड्डूर को परिवार समेत आत्महत्या करना ही पड़ेगा।''

''ऐसा मैं नहीं कहूंगी। यदि वह इस प्रयास में पराजित होता है तो उसको जरूर सज़ा मिलेगी।''

''ठीक है मैडम, फिर से विश्वन कूड्डूर के पास चलें....''

''विश्वन....हेलो।''

''हां, मैं....विश्वन बोल रहा हूं....''

''तुम्हारी समस्या के बारे में एक विस्तृत चर्चा हुई है। इसके बारे

में आप कुछ बताना चाहेंगे तो संक्षिप्त रूप में बताइए। न्यूज टाईम का निर्धारित समय समाप्त होने जा रहा है...ओ.के. विश्वन बताइए....''

''मैं, ज्यादा पढ़ा-लिखा नहीं हूं, मन की बातों को पूरी तरह व्यक्त करने की क्षमता भी मुझमें नहीं है। जब्ती और मृत्यु के बीच में और परिवार वास्तव में एक धागे पर चल रहे हैं। तीस-पैंतीस सालों में मैंने बहुत कुछ अनुभव किया। मनुष्य अनुभवों से ही तो सीखता है। कल जामिन के कारण दूसरा कोई धोखा न खाए, इसलिए मैं दो-एक बात बताना चाहता हूं।''

''जल्दी बताओ, समय कम....''

''जो भी हो, इस दुनिया में हरेक व्यक्ति अकेला है। मलयालम में एक कहावत है कि ''भले ही तुम रुपया फेंक दो, लेकिन गिनती करके।'' इसलिए चाहे मां ही क्यों न हो, रुपयों के मामले में हिसाब-किताब होना चाहिए। कल दूसरों को दिखाने के लिए सबूत तो होना चाहिए....''

''दूसरा, आत्महत्या करने वाले कभी रुपयों के मामले में न फंसे। तीसरा, किसी को भी पांच हजार से ज्यादा रुपया उधार न दें। अथवा दे भी दें तो पोस्टडेटेड चेक और दस्तावेज ले लें। वरना कल को रुपयों के मामले में गहमागहमी होगी। 'घनिष्ठ मित्रता' आदि बातें कहने व सुनने के लिए अच्छा लगती हैं। कोई भी रिश्ता साधारण सी बहस से टूट सकता है।''

''चौथा, पहले अपने को आर्थिक रूप से सुरक्षित रखें फिर दूसरे की मदद करें। शुरू-शुरू में लोग कहेंगे कि वह स्वार्थी है। लेकिन बाद में पता चलेगा कि इस निर्णय के कारण अंत में दोस्ती तो सही सलामत रहेगी। उधार के कारण जीना दुश्वार होने की अवस्था में तुम्हें दारु पिलाने वाले बहुत मिल जाएंगे। लेकिन एक किलो चावल खरीदने के लिए कोई भी एक पाई भी नहीं देगा।''

''विश्वन समय कम है।''

''सर, अंत में एक बात और। यदि नया दोस्त आपके पीछे पड़ा हो तो एक प्रयोग के तौर पर उससे कुछ रुपया उधार मांगो। दूसरे दिन से उसका अता-पता नहीं रहेगा।''

''ठीक है विश्वन, जामिन के कारण आपने बहुत कुछ सीखा। डाक्टर नंदकुमार, श्री माधवन नायर, एडवोकेट फातिमा बेगम, श्री अलेक्स पुन्नूस और विश्वन, इस चर्चा में भाग लेने के लिए धन्यवाद।''

"विश्वन कूंडूर की आत्महत्या अनिवार्य है कि नहीं? एस.एम.एस. पोल में भाग लेने में इच्छुक लोग अपनी सुझावों को, खाड़ी के राज्यों से 6798 नंबर में और भारत से 2354 नंबर में हमें एस.एम.एस भेजें।"

अपनी आत्महया के बारे में दर्शकों की राय जानने के लिए विश्वन न्यूजटाईम शुरू होने के आधा घंटा पहले घर से निकला। बारिश की छींटें गिर रही थीं। सिर पर हाथ रखते हुए—पुस्तकालय में घुसा तो वहां हमेशा से ज्यादा भीड़ दिखाई दी। लेकिन किसी ने भी पिछले दिन की चर्चा के बारे में विश्वन से नहीं पूछा, जिसकी उसे उम्मीद थी। बदले में वे बंगाल की खाड़ी में रूपायित बवंडर की गति को लेकर परेशान होकर सिगरेट पी रहे थे।

न्यूज टाईम शुरू हुआ।

"विश्वन कूंडूर की आत्महत्या की धमकी के बारे में कल हुई चर्चा में विश्वन को आत्महत्या करना चाहिए या नहीं? हमारे इस प्रश्न पर दर्शकों की ओर से कोई प्रतिक्रिया नहीं मिली। न्यूज टाईम के लिए यह एक नया अनुभव है। आज क़ी चर्चा शुरू करेंगे? डिस्कवरी प्रक्षेपण कोलंबिया की पुनरावृत्ति होगी या नहीं? लेकिन इसके पहले एक छोटा ब्रेक।"

दीमक खाए लकड़ी से बनी पुरानी अल्मारी से रमेशन ने किताब निकाली। उस प्रसिद्ध मेक्सिकन उपन्यास को विश्वन को देते हुए उसने कहा, "विश्वन भैया, आप मरने जा रहे हैं....यह तो दिवंगतों की पुस्तक है।"

अलेक्स पुन्नूस ने पिछले दिन चर्चा के दौरान, 'कोमाला' नामक गांव का जिक्र किया था। इसके बारे में अधिक जानने के लिए वह उत्सुक था। रात में सब लोगों के सो जाने पर हरीकेन लैंप की रोशनी में उन्होंने उपन्यास पढ़ना शुरू किया। विश्वन रसिक नहीं है, फिर भी उसे जल्दी समझ में आया कि कोमाला ऐसा गांव है जहां मरे हुए लोगों की आत्माएं बसती हैं। उपन्यास की शुरूआत हूवान प्रसियादो नामक युवक से होती है। वह अपने पिताजी पेद्रोपरामोव की खोज में कोमाला पहुंचता है। सूखे गांव में सब कहीं मृत लोगों की आवाजें गूंज रही हैं। वहां पहुंचकर कुछ दिनों बाद प्रसियादो की मृत्यु होती है।

उपन्यास में एक जगह बरतीलोमा नामक पात्र कोमाला के बारे में बताता है, वहां विश्वन श्याही से रेखांकित करता है' यहां दुर्गंध के सिवा कुछ नहीं है, यह गांव दुर्भाग्यपूर्ण, केवल दुर्भाग्यपूर्ण।'

विश्वन ने एक ही रात में उस उपन्यास को पढ़ लिया। उपन्यास के

शिल्प और कथ्य को वह समझ नहीं पाया और अपने को कोहरे के बीचोंबीच सा महसूस किया। विश्वन को समझ में आया कि उसकी जिंदगी कोमाला की तरह सूखी और कठिन थी। खिड़कियों पर गिर रही बारिश को देखकर वह बहुत देर तक रोया। फिर उसने बत्ती की दियासलाई कम किया।

सुबह जागने पर वह मृत्यु व जिंदगी के बीच कहीं खो गया था। पत्नी चाय लेकर आई तो उसे लगा कि वह डारोथी' थी जिसकी मृत्यु हो चुकी थी।

पिछले दिन रात को बंगाल की खाड़ी में रूपायित दबाव ने काली मिर्च के पत्तों को बिखेर दिया। उन्होंने मन ही मन कहा। किसी न किसी प्रकार सुधाकरन को ढूंढ़ना है। छिपे व्यक्ति को कहां जाकर ढूंढ़ें?

''सुधाकरन को आप कभी ढूंढ़ नहीं पाओगे?'' विश्वन के घर से निकलने पर पत्नी ने कहा।

''सही है।'' उसने चप्पल पर गिर पड़े बारिश के पानी को छिड़का। पंद्रह अगस्त के लिए और हफ्ता बाकी है। मरने का निर्णय लेने के कारण बोरियत हो रही है। बाकी के सात दिनों के लिए सात सालों की एकांतता का अनुभव करना पड़ेगा। इसलिए सुधाकरन को पाने की उम्मीद में एक यात्रा। न मिला तो भी निराशा नहीं होगी। दुनिया तो उम्मीदों पर टिकी है?

पत्नी को लगा कि विश्वन रातोंरात बदल गया है। आत्महत्या के बारे में लिखा गया बोर्ड टेड़ा पड़ा हुआ है। उसने बोर्ड को ठीक से रखा। फिर घर की तरफ देखकर कहा, ''डरो मत, मरने का समय निकट आने पर मैं घर आ जाऊंगा।'' पत्नी ने सिर हिलाया और दरवाजा बंद कर दिया। सुधाकरन की खोज में विश्वन कई जगह घूमा। वास्तव में विश्वन के लिए सुधाकरन मृत्यु के पहले की शून्यता को दूर करने का केवल कल्पना भरा लक्ष्य था। उसने कई लोगों से सुधाकरन के बारे में पूछा। किसी ने भी सही जवाब नहीं दिया।

यात्रा के पांचवें दिन विश्वन देर रात को नेशनल हाइवे पहुंचा और आते-जाते लोरियों को हाथ दिखाकर रोकने का प्रयत्न किया ताकि उसमें चढ़कर घर पहुंचे। किसी ने भी उस पर ध्यान नहीं दिया। लंबी यात्रा के कारण उसके कालर में बहुत मैल जम गया था। वह एक चौराहे पर खड़ा था जहां पर कई इमारतें थीं। वहां पर एक ढाबा चालू था और चारों ओर

कई लोग खड़े थे। स्टोव की आवाज छोड़ दें तो वहां मरे हुए लोगों से भी ज्यादा खामोशी थी। तेल में भूने जा रहे मांस के लिए लोग प्लेट दे रहे थे। कोमाला के लोग भी लगभग इसी प्रकार के हैं। बुल्जआई खाने वाला अबुनदियोव[2] होगा। हाथ साफ कर बिल चुकाने वाला डोनया एदूहेस[3] होगा।

उसे भूख लग रही थी। लोरी का भाड़ा चुकाने के बाद उसके पास छुट्टे पैसे ही थे।

'एक ब्लैक टी।' उसने कहा।

गर्म पानी में टी पाउडर डालकर चम्मच से हिलाते हुए ढाबे वाले ने विश्वन को ब्लैक टी दी। वह गिलास को होंठो तक अभी ले ही गया था कि सड़क पर ब्रेक दबाने की आवाज तथा विस्फोट सुनाई दिया। उसने मुड़कर देखा। एक आदमी हवा में उछलकर सड़क पर सिर के बल गिर पड़ा। चकनाचूर हो गए मोटरबाईक का पहिया सड़क के गंदे पानी में घूमता घूमता आहिस्ता से रुक गया। यह सब देखकर वह यूं ही खड़ा रहा। यदि बहुत साल पहले यह घटना होती तो वह ब्लैक टी छोड़कर उनकी मदद करता।

उसने सोचा कि शायद कोई जाकर जख्मी को उठाकर अस्पताल पहुंचाने के लिए कोशिश करेगा। वह आहिस्ता से फूंक-फूंककर ब्लैक टी पीने लगा। ढाबे में भोजन करनेवालों में किसी ने भी सहायता नहीं की। वे मृत शरीरों के समान भोजन करने में मग्न थे।

वास्तव में क्या यह कोमाला है? विश्वन ने सोचा क्या वह मृत्यु के बारे में एक लघु सिनेमा देख रहा है? ढाबे में भोजन करने वाले सारे लोगों ने क्या उसके समान एक दिन मरने का निर्णय लिया होगा। क्या मृत्यु के कीड़े ने भीतर के पत्तों को खा लिया होगा? क्या उनमें से हरेक व्यक्ति का पेड़ होगा? एक लोरी तेजी से गई और विश्वन के पैरों पर कुछ गीली हुई चीज गिरी।

खून!

दुर्घटनाग्रस्त युवक का खून सड़क पर गिरा हुआ था। आती-जाती गाड़ियां उस पर से गुजर रही थीं। खून में रेत लग सड़क पर घिसने की आवाज सुनकर उससे रहा नहीं गया। विश्वन ने दौड़कर उस युवक को खून से अलग किया। आते-जाते गाड़ियों के हेड लाइट के सामने बड़ी-सी परछाई के रूप में खड़ा होकर ऊंची आवाज में आकाश की ओर हाथ

उठाकर पुकारा, "बचाओ....बचाओ....ठहरो, सहायता करो....गिलास और बोनट से टकराया।

ढाबेवाले ने पानी से स्टोव की सतह साफ की और उस पानी को फेंका और फिर ढाबा बंद कर दिया। उसने विश्वन के पास आकर हंसते हुए कहा, "ऐसे दृश्य यहां पर साधारण हैं....आपको जरूरत है तो मेडिकल कॉलेज जाने के लिए एक गाड़ी का इंतजाम कर सकता हूं। किराया देना पड़ेगा।" यह कहते हुए कि वह उनके साथ आ नहीं सकता दुकानदार गाड़ी धकेलकर अंधेरे में ओझल हो गया।

दस मिनट बाद एक जीप आई। ड्राइवर ने घायल युवक को जीप में चढ़ाने के लिए मदद नहीं की। वह बहुत जल्दी में था। विश्वन ने कई बार मन में कहा यह जगह कोमाला है....नरक का मुंह। अचानक एक अधेड़ उम्र वाला वक्षों में एक काला बैग ले जीप के पास पहुंचा।

"मैं भी आऊंगा...." उसने कहा। विश्वन को विश्वास नहीं हुआ। उसके मन में ठंडक महसूस हुई। इस कोमाला में कुछ जगह ऐसी भी हैं जो अभी सूखी नहीं है। जख्मी युवक के पैर को सरकाकर विश्वन की अनुमति के बिना वह आदमी अपने लिए थोड़ी-सी जगह बनाकर जीप में बैठ गया। जीप आगे बढ़ी।

रास्ते में अधेड़ उम्र वाले ने दुर्घटना का कारण, युवक का पता आदि के बारे में बताया। इस बीच में उसने विश्वन का हाल पूछ लिया। पिछले दिनों उसने न्यूज टाईम में विश्वन को देखा था! उसके बारे में उसने बात नहीं की। विश्वन जिए या मरे इस पर उनको कोई व्याकुलता नहीं थी।

सांस लेने की कोशिश में युवक थोड़ा सा हिला। विश्वन ने उसकी छाती को दबाया। एड़ी को रगड़कर गर्मी पहुंचाई। उसका शरीर मृत्यु के ऊपर डुल रहा है। वह कुछ कहना चाहता है।

अचानक अधेड़ उम्र वाले ने ड्राइवर को छूकर कहा, "जरा रोक दो ...उतरना है। वहां जो रोशनी दिख रही है वही मेरा घर है। हाईवे पर गाड़ी का इंतजार करते-करते मैं चिंतित होने लगा था। तभी यह जीप मिली। आप लोगों ने इजाजत दी इसलिए आराम से पहुंच पाया। थैंक्यू, गुडनाइट।"

वह अंधेरे में चला गया। जीप आगे बढ़ी। हमारे सोच-विचार कितनी जल्दी टूट जाते हैं। विश्वन ने सोचा कि मन एक निष्कलंक है जो पत्थर की नक्काशी करता है। मिनटों के पहले जिस व्यक्ति से परिचय हुआ उसके बारे में हमने भलाई का एक मकान तैयार किया। लेकिन

उसके सौंदर्य को आस्वादित करने के पहले ही वह मलबे में तबदील हो गया। मनुष्य के जैसा वह हँस सकता है या रो सकता है। लेकिन विश्वन को हंसी आई। खामोश होकर वह आंखों से आंसू निकलने तक हंस पड़ा।

युवक के होंठ थोड़े-से खुले। मुंह के कोण में लार चिपकी हुई थी। उसके दांत दिखाई दे रहे थे। आंखों की पुतलियां अंदर की ओर धंस गई थीं। मृत्यु की सफेदी ने उस पर कब्जा कर लिया।

"गाड़ी रोको।" विश्वन ने ड्राइवर के कंधों को छूकर आहिस्ता से कहा। ब्रेक पर पैर रखते हुए ड्राइवर ने उसको देखा।

"युवक का अंतिम समय आ गया है। इनको पानी पिलाना है।" विश्वन जीप से बाहर निकला। गाड़ी में रखा हुआ बोतल उलटकर ड्राइवर ने बताया कि बोतल खाली है। बोतल लेकर विश्वन पानी की खोज में चला। ड्राइवर ने गाड़ी को सड़क के किनारे खड़ा किया।

विश्वन को अंधेरे में कई पेड़ दिखाई दिए। अचानक उनके ऊपर चांदनी गिरी। ठंडी हवा चली। जैसे-तैसे वह नीचे उतरता गया। पेड़ों के बीच कहीं वह पानी का प्रवाह जान पाया। जंगली लताओं को पार कर पत्तों के छोरों को भिगोकर चमकीले कंकड़ों के ऊपर एक शीशे सा वह बह रही है। मर रहे युवक के लिए।

विश्वन के जैसा वह युवक भी बहुत जगह घूमा। पता नहीं लोगों से बात किया, लड़ा, हारा, रोया, जीता और खुश हुआ। प्यार किया, नफरत की, गिर पड़ा और उठा। उनके बारे में कितनों ने चर्चा की.... ओपिनियन पोल किया। तब वह अनजाने में जो दो बूंद पानी को ढूंढ़ रहा था बहते पानी में उसे मैंने पैरों में डुबोकर रखा था।

युवक की सभी प्रकार की प्यास यहां खत्म होती है। विश्वन ने उसे पानी पिलाया। उसके हाथों को छाती पर रखा। वह मर गया।

ड्राइवर जो तब तक मजे में था युवक के मरते ही डर गया। विश्वन ने बोतल का बाकी पानी पी लिया।

मेरा उधार दो बूंद पानी था...इसे मैं थोड़ी देर पहले चुका दिया। तब उसको लगा कि घर के आगे प्रदर्शित किया गया आत्महत्या का तख्ता बेवकूफी था। जल्दी से जल्दी उसे हटाना है।

1-2-3. पेद्रोपरामो नामक उपन्यास के पात्र - दिवंगत।

पांचवीं का आगमन

☆ चंद्रमती

रेत के कण व छोटे-छोटे पत्थर, हिम की चादर के उठने की प्रतीक्षा में हैं। उनके ऊपर सूरज की किरणें चमक रही थीं। उनकी छाती पर बिछाई लोहे की पटरी को झकझोरती हुई चार रेलगाड़ियों को गुजरना है। पांचवीं का इंतजार तो करना ही है।

दिन की शुरूआत।

सावित्री डायरी लिख रही थी। कल मैं, उसने लिखा। 'कल, बार-बार देखे उस स्वप्न में एक अजगर था। सांप के बिल में मुर्गी धान चुग रही थी। मुर्गी को यह नहीं मालूम कि वह सांप का चारा है। बेचारी उसको क्या मालूम कि किसी भी समय सांप उस पर हमला कर सकता था। वास्तव में हम भी उस मुर्गी के समान हैं, मौत निकट होते हुए भी धान के लिए लालची होकर दौड़ते हैं....'

सावित्री साहित्यिक रूप में डायरी लिख रही है जिससे यह स्पष्ट होता है कि इसके पीछे कोई खास बात है। उस दिन 12.30 बजे को नदी के पुल से होकर आने वाली रेलगाड़ी के नीचे आकर अपनी जिंदगी को खत्म करने का निर्णय उसने लिया। आत्महत्या नामक अपवाद से बचने के लिए उसने योजना बना ली।

11.15 सावित्री घर से निकलती है।

11.30 सावित्री बाजार पहुंचती है।

11.31-12.10 सावित्री मोल-तोल कर चीजें खरीदती है।

इन चीजों को शव के साथ बिखरी पड़ी रहना चाहिए। हादसे में होने वाली मौत के लिए इस प्रकार के छोटे-मोटे मेकअप की चीजें जरूरी हैं।

12.20 पर सावित्री नदी को पार कर पटरी पर चलने लगती है। रास्ते में यदि परिचित लोग मिल जाएं तो मृत्यु से पहले उन लोगों से क्षमा मांगने के लिए भी वह तैयार थी, ऐसे में ट्रेन आ गई।

उसकी मृत्यु इस प्रकार हो जाए तो किसी भी समाचार पत्र का रिपोर्टर उसके घर पहुंचेगा और डायरी पढ़ेगा, सावित्री ऐसा मानती है। उसके छठे इंद्रिय से मृत्यु का पता चला, यह बात रिपोर्टर को समझ में आ जाए इसलिए उसने डायरी में अजगर और मुर्गी के बारे में लिखा।

सावित्री आत्महत्या क्यों कर रही है?....एक सवाल उठता है। इस लोकतांत्रिक देश में कोई भी व्यक्ति आत्महत्या कर सकता है। लेकिन कोशिश सफल होनी चाहिए। यदि कोशिश निन्यानवे प्रतिशत हो जाए तो जेल जाना पड़ेगा। अब समझ में आ गया होगा कि भारत में काम कितनी निपुणता से करना पड़ता है। यदि कोशिश सफल न रही तो आत्महत्या के लिए कोई कारण ढूंढ़ निकालना मुश्किल बात नहीं है। ऐसे में कोई भी स्त्री बच निकलने से आसानी से कारण बता पाएगी।

फिर भी सावित्री ने आत्महत्या करने का निश्चय क्यों किया यह उसकी साधारण पंक्तियां बताएंगी।

एक जगह एक लड़की रहती थी।

उसने कई ख्वाब देखे....

पहली

पहली रेलगाड़ी गुजर गई तो हवा चली। लहर हिल उठे। जानवर पानी को देखकर खड़े हो गए। उनके गले में सूखा भूसा अटक गया। जिंदगी मौत को देखने के समान वे पानी को देखकर ललचा गए। मौत छिपे रेल की पटरी में जान नहीं थी।

सुबह हुई।

दूधवाले की घंटी की आवाज सुनकर सावित्री डायरी को मेज के दराज में रखकर उठी। गेट खोलकर स्टील के बड़े बर्तन में दूध लेकर सावित्री ने अपनी अंतिम सवेरे को देखा। गैस स्टोव में चाय बनाने के लिए पानी व दूध रखा। विद्युत स्टोव में ईडली का बर्तन रखते ही अपराध बोध को लादकर नौकरानी आई। सावित्री के चेहरे पर हमेशा की तरह

नाराजगी न पाकर नौकरानी ने जल्दी ही पहले से निकालकर रखे गए चावल को पानी में साफ करने लगी। इतने में गर्म पानी के लिए होम नर्स पहुंच गई। हीटर की बाईं तरफ वाली अंगीठी उसकी थी। झगड़ा रोकने के लिए सत्यनेशन ने यह तरकीब ढूंढ़ निकाली।

होम नर्स ने स्विच दबाकर अपनी अंगीठी पर बड़े बेसिन में पानी भर कर रखा। फिर हाथों को ऊपर की ओर उठाकर अंगड़ाई ली। डेढ़ सेकंड के लिए हवा में फैली दुर्गन्ध से सावित्री को उल्टी आने लगी। वह कुछ कहना चाहती थी। लेकिन चुप रही।

सावित्री, सत्यनेशन की मां के कमरे में गई। चारपाई के नीचे रखे बेड़ पान से पेशाब की बू आ रही थी। सावित्री ने सोचा कि होम नर्स, बेड़ पान को साफ करने के बाद रसोई में आ सकती थी। अपने गाऊन को घुटनों तक उठाकर व्हील चेयर में बैठी सत्यनेशन की मां ने गर्म पानी का इंतजार किया। उनका दायां पैर घुटने के नीचे से काट दिया गया था। उस पर लगी महरमहपट्टी में नमी थी। सावित्री के कमरे में पहुंचते ही बूढ़ी ने शोर मचाना शुरू किया।

"गीतालक्ष्मी जल्दी आओ। इससे कहो कि यहां से चली जाए। मैं इससे मिलना नहीं चाहती।" होम नर्स जल्दी दौड़कर आई। "मैडम, सर ने आपको इस कमरे में आने से मना किया था न? मरीज को इमोजनेल डिस्टरबेंसस होगी। आप बाहर जाइए।"

सावित्री ने मन में ठान लिया कि जिंदगी के आखिरी दिन किसी से झगड़ा नहीं करेगी। इसलिए अपमानित होकर भी वह हंस पड़ी। वह बगल के कमरे में गई। उस कमरे में सत्यनेशन के बूढ़े पिताजी थे। सावित्री ने दरवाजा खोला तो वासना भरे स्वर में उसने पुकारा :

"'जल्दी आओ....कल रात को तू नहीं आई।' बूढ़ा हूं न, इसलिए तूने सोचा होगा कि इतना काफी है। मैं कितनी देर तक जागा। आओ गीतालक्ष्मी आओ।"

सावित्री ने दरवाजा बंद किया और जल्दी से सीढ़ियां चढ़कर ऊपर बच्चों के कमरे में पहुंच गई। चादर उठाई तो बेटे ने शोर मचाया, "गोव एवे, क्यों डिस्टर्ब कर रही हो?"

सावित्री ने बेटा और बेटी दोनों से उठने के लिए कहा, लेकिन वे चादर ओढ़कर फिर से लेट गए। मां तुम चले जाओ, हमारा काम हम

स्वयं कर लेंगे। अब सावित्री को बस एक ही कमरे में जाना बाकी था। वहां खामोशी थी और वासना सोई हुई थी। सावित्री वहां जाना नहीं चाहती थी।

दूसरी

दूसरी के चले जाने के बाद सूरज हंस पड़ा। झील चमकने लगी। मछली मारने के लिए आए लोग पुल के नीचे की ओर उतरने लगे। मछली पकड़ने के कंटिया की परछाई पानी में इधर-उधर जा रही थी। मृत्यु की जानकारी के बगैर मछलियां उछल रही थीं।

नाश्ते के लिए लाल केसरोल में गर्म इडलियां थीं। भूनी हुई प्याज के टुकड़े व मूंगफली से बनी चटनी। अंडा सब्जी। स्टील बउल में केला। मग में चाय, ग्लास जार में ठंडा पानी, बर्तन, प्याले आदि रखे हुए थे। चित्रकार जिस प्रकार चित्र को देखता है उसी प्रकार सावित्री डाइनिंग टेबल को देखने लगी। उसे लगा कि फ्लॉवर वेज में फूल रखकर मेज के बीच में रख दे तो मेज की सुंदरता बढ़ेगी। फिर उसने इरादा बदला। कुछ ही देर में खाने का अवशिष्ट मेज पर गिर पड़ेगा और मेज का सौंदर्य बिगड़ जाएगा, दुर्घटनाग्रस्त रेल की पटरी-सा।

वह कुछ सोच रही थी। इसलिए बेटी के रोने की आवाज सुनाई नहीं दी। जब तक आवाज उसके कानों में पड़ी, थोड़ी देर हो चुकी थी। गालों पर साबुन के झाग से दौड़कर आए सत्यनेशन ने बेटी के शरीर में बेटा का भोंका कोंपस निकाला। सत्यनेशन गुस्से में कहने लगा कि सावित्री, न तो तुम जिम्मेदार मां हो और न पत्नी। इसलिए बच्चों का बिगड़ना स्वाभाविक है। दरवाजे के पास खड़ी होम नर्स यह सब सुनकर मुस्कुरा रही थी। सत्यनेशन की मां अपने घुटनों का दर्द थोड़ी देर के लिए भूल गई।

बच्चों के जाने के बाद सावित्री ने सत्यनेशन से रुंधे स्वर में कहा—"नहा लीजिए। आज हम साथ में नाश्ता करेंगे।"

"आज क्या खासियत है?" सत्यनेशन को गुस्सा आया।

फिर सत्यनेशन ने जो भी कहा वह इस कहानी में लिखा नहीं जा सकता इसलिए सावित्री कमरे में चली गई। केवल ऐसा लिखा गया है।

तीसरी

तीसरी जब गुजर गयी तो प्रकृति में अंतरिक्ष के कण नये जोश के साथ इंतजार किया। अब एक बार फिर पुल को झकोर कर गुजर जाए तो सभी को ढोना पड़ेगा इसलिए प्रकृति ने खून के नशे का इंतजार किया।

यात्रा की शुरूआत

सत्यनेशन के बैग में ट्वल में लपेटकर खाने का डिब्बा रखते समय उसकी आंखें नम हो गईं। डिब्बा खोलने के पहले ही खबर उन तक पहुंच जाएगी। ढाढस बंधाने वाले मित्र उन्हें घटनास्थल ले आएंगे। पहली रात में पुछकारे हुए शरीर के टुकड़ों को वह देखेगा।

नाश्ता करने के बाद वाश्बेशन में हाथ धो रहे सत्यनेशन को वह छूना चाहती थी। बीस साल की आयु में उसके कौमार्य पर कब्जा किया हुआ आदमी। एक के बाद एक करके दो बच्चों के लिए उत्तरदायी आदमी। सावित्री का सत्यनेशन।

सावित्री उन्हें छूने ही वाली थी कि 'सर' पुकार के होम नर्स आ गई। उसने एक सूची देते हुए कहा कि मां के लिए यह दवाईयां शाम को जरूर ले आना। सावित्री ने देखा कि सत्यनेशन होम नर्स को देखकर मुस्कुरा रहा था। उसने उन्हें नहीं छूने का निश्चय किया।

चौथी

चौथे धी गुजरने पर मृत्यु का उदय हुआ। कोई भी मृत्यु आकस्मिक नहीं होती। इस दिन के इस क्षण में ऐसा होगा यह बहुत पहले ही लिख चुका होता है। अंतरिक्ष के कणों का इंतजार काफी है। हवा घनीभूत हो गई। हवा रुक गई। सभी लोगों ने इंतजार किया।

वह हो रहा है।

अब सावित्री पटरियों पर चल रही है। उसकी थैली में बारह मछलियां, एक किलो टमाटर व पापड़ हैं। घटना को यथार्थ बनाने के लिए साथ में एक मलयालम साप्ताहिक भी था। सावित्री इतना धीरे-धीरे चल रही थी कि उसका स्टिल फोटो निकाला जा सकता था। मृत्यु उसके ठीक पीछे है। पांचवीं ट्रेन कभी भी आ सकती है। बिखरे पड़े टमाटर व मछली तथा मानव शरीर को, सब्जी के टुकड़ों जैसे काटकर ट्रेन चली जाएगी।

जीने की इच्छा उसमें अभी भी नहीं है। ज़रा उसके मन को देखो। दर्द भरी कोठरियों को देखो। बत्तीस सालों का हर एक क्षण लोगों ने उसे खिलौने जैसे इस्तेमाल किया। उसने स्त्री की पवित्र आजादी की कामना कभी नहीं की। कुछ सपनों के संग जीने की इच्छा रखने वाली यह औरत स्नेहहीन व दुर्गंधपूर्ण दुनिया में कैसे आ गई? जो भी हो, अंत में मुक्ति का मार्ग उसने जान ही लिया। अब थोड़ी देर में पीछे से एक सीटी सुनाई देगी। फिर सारी पटरियों से विदाई। सारी निंदाओं से विदाई। एक ही मेज़, संगीत व टेलीफोन और न मिले स्वप्न से विदाई।

अचानक सावित्री के पांव के नीचे जमीन को हिलाते हुए पटरी हिल उठीं। पुल के लगभग बीचोंबीच पहुंच चुकी सावित्री ने मुड़कर देखा। तैयार रखे भोज को खाने की लालच में जोर से सीटी बजाकर दूर से आ रहे पांचवें को उसने देखा। एक दो मिनट के अंदर सावित्री नामक स्त्री अब इस दुनिया में नहीं रहेगी। पुल के नीचे पानी परिसर्पण गति से बहा।

●

मूसलाधार बारिश के बाद

☆ एम. टी. वासुदेवन नायर

दुबारा बारिश की छींटें पड़ने पर उसने कार का शीशा उठाते हुए ड्राइवर से कहा, "कोई जल्दी नहीं है...आहिस्ता चलाओ। फ्लाइट साढ़े नौ बजे की है।"

कल दोनों हवाई अड्डों में एक भी फ्लाइट न उतरी और न उड़ी, आज...? उसे दूर अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे की रोशनी दिखाई दे रही थी। उसने ट्राउज़र के निचले भाग को खोला, जो मोड़ा हुआ था। जूते गीले थे।

अच्छा हुआ कि ड्राइवर हमसा जिसे इब्राहिम कुट्टी ने भेजा था, वह अक्सर हवाई अड्डा आता-जाता था। गाड़ी चलाते हुए उसने बताया कि वह गल्फ से लौट रहे यात्रियों को लेने हफ्ते में दो-तीन बार यहां आता-जाता था।

प्रस्थान गेट के पास वह पहले भी आ चुका था। ड्राइवर ने बताया कि आगमन गेट उसके बगल में था।

वह टी.वी. देख रही भीड़ से होकर आगे बढ़ा। उसे पहले कुछ समझ में नहीं आया। थोड़ी देर बाद चौथी पंक्ति, पानाम फ्लाइट सं. 736, प्रत्याशित समय : 22 घंटे 10 बजे। मानो कि फ्लाइट आधा घंटा ही लेट है। साथ में अन्य हवाई जहाजों की फ्लाइट संख्या और समय प्रदर्शित की गई थी।

कस्टम हॉल से ट्रॉलियों को धकेलकर यात्रीगण बाहर निकल रहे थे। रेलिंग के पास कुछ लोग विदेशियों के प्लेकार्ड पकड़कर खड़े थे। तब उसने ड्राइवर हमसा को अपने पास खड़ा देखा, "अन्दर जाना है तो छह रुपए का टिकट खरीदना पड़ेगा।" टिकट काउंटर की ओर इशारा करते

हुए ड्राइवर ने कहा। जो भी हो, सभी इसी रास्ते से बाहर निकलते हैं।

पिछली बार शिवशंकर यहां आया था अप्पू को विदा करने। उनके पास छह घंटे का समय था। शायद वापस घर जाकर आ सकते हैं। वह जानता है कि वहां पर एक परिवार है, जयश्री और दो बच्चे हैं। वह उनका नाम नहीं जानता। गांव में परिवार के तीन सदस्य और रहते हैं।

"यहां से कितनी दूर है?"

"एक घंटा या ज्यादा-से-ज्यादा डेढ़ घंटा।"

जब उसने बताया कि फिर कभी चलेंगे तो ड्राइवर ने हठ नहीं की।

"जब हम वापस पहुंचेंगे चेक इन टाइम होगा..." उसने बताया।

जब वे पुराने हवाई अड्डे से वहां पहुंचे, अप्पू ने कहा, "पिताजी, मैं लांज में बैठूंगा।" "तुम...मैंने आज छुट्टी ले ली है। उन्होंने उसका लगेज ट्राली में रखने में मदद की।

उन्होंने ड्राइवर से भाड़े के बारे में पूछते वक्त अप्पू ने किराया दे दिया। हालांकि वह पहली बार विदेश जा रहा था, वह बेचैन नहीं था। ड्राइवर से उसकी बातचीत से उन्हें समझ में आया कि बैंगलूर में नौकरी करते-करते वह हिन्दी सीख गया था।

वह पूछना चाहता था कि क्या वह गांव गया था? मां से मिला था? लेकिन चुप रहा।

"पिताजी आप यहां समय मत गंवाइए...आप जाइए।"

अप्पू ने फिर से कहा, "ब्लड प्रेशर के लिए दवाइयां..."

"हां, नियंत्रण में ही हैं।"

वह जो खत लिखता था, लेटर हेड के बीच में तीन वाक्य होते थे। हमेशा स्वास्थ्य के बारे में पूछता था। एलोपैथी के बदले होमियोपैथी की कोशिश कर रहा हूं। अभी थोड़ा-सा सुधार है। इस प्रकार की सूचना जवाब में होती।

उसको नहीं मालूम था क्या बात करनी थी। इसलिए यूं ही खड़ा रहा।

"वहा पहुंचते ही खत लिखना।"

ट्राली के पहियों को सीधा करते हुए झुककर खड़ा रहा थोड़ी देर के लिए।

"अपना ख्याल रखना।"

"हां, मैं खत लिखूंगा, जा रहा हूं।"

अनजाने में अप्पू ने हाथ हिलाया। वह अंदर ही अंदर इस बात को लेकर बहस कर रहा था कि हाथ मिलाऊं या नहीं, फिर अचानक उसने हाथ बढ़ाया और मुस्कुराया। उन्होंने तुरंत हाथ मिलाया। बायां हाथ दूसरे हाथ पर रख धीमी आवाज में कहा, "ख्याल रखना।"

अप्पू मुस्कुराया और उन्होंने उसको निहारा। उन्हें अप्पू के बचपन का दृश्य याद आया। खुद खुलनेवाले दरवाजे से अप्पू ने प्रवेश किया। ट्राली रोकी और हाथ उठाया विदाई में। दरवाजा बंद होते ही उन्होंने जवाब में हाथ उठाया और आहिस्ता से चल दिया।

हम कार के पास वापस आ गए। टिकट खरीदकर उसने हॉल में प्रवेश किया। ज्यादातर सीट विजिटरों से भरी हुई थीं। साथ-साथ बैठे कुछ परिवारों के बीच एक-दो सीट खाली थी। उन्होंने न बैठने का निश्चय किया। बची हुई सिगरेट भी खत्म हो गई। हॉल के कोने में सीढ़ियों के नीचे केवल एक ही दुकान थी जिसमें सेब का जूस बेचा जाता था।

हमसा कमाल का आदमी था। वह गुंडा जैसा दिखता था। मीरचंदानियों के कारण वह दुनिया असहनीय नहीं बन जाती। इब्राहिम कुट्टी की बात को लीजिए वह कहता है कि लेखा-जोखा बाद में देखा जाएगा। पड़ोसी डिसूजा, नया बेड शीट डालकर, बैडरूम सजाकर अप्पू का इंतजार करती है...

कनाडा से आया पहला खत लंबा था। उसमें प्रशिक्षण और रोजगार के बारे में लिखा था। वह महाराष्ट्र वालों के साथ रहता था। बाद में जब उसने एक सेकंडहैंड कार खरीदी, उसने कार के साथ खींची हुई तस्वीर भेजी।

एक बार शिवशंकरन ने जवाब दिया कि वह पेंटिंग बनाना फिर से शुरू कर दी है। साथ में एकल प्रदर्शिनी का भी जिक्र किया जो कभी होगी नहीं। कुछ न कुछ लिखकर खत भरना है। खुशी की बात है कि उसका जवाब देर से आया। एक चीज के बारे में वह पूछना नहीं भूलता था। वह था उनके स्वास्थ्य के बारे में।

तुम्हारी प्रदर्शनियां किधर हैं? क्या लोग करोड़ों रुपए लेकर पंक्तियों में खड़े थे? जब उसने अपने जीवन को न चुकाए पुराने बिल की तरह मोड़ा और उनके हवाले किया तब भी जयश्री ने कुछ नहीं कहा। हैंडलूम दुकान से सेल्सगर्ल की नौकरी छोड़ने पर भी उसने उनसे कुछ नहीं पूछा।

वे लोग कहते हैं कि एक औरत ने अभय शंकर की जिंदगी को तबाह किया और उसे पागल बनाया। वह एक पुरानी मॉडल थी। वह पचास साल की थी और सरकार के लिए आर्ट फेस्टिवलों का आयोजन करती थी। उसको कसूरवार ठहराने का मन नहीं किया।

पागलपन तब शुरू हुआ जब वह चौपाटी फुटपाथ में और पांच सितारा होटलों की सीढ़ियों पर चित्र बेचता था। एक बार हुसैन की प्रदर्शनी के सामने उसने कला के वाणिर्ज्यीकरण के बारे में मेगाफोन पर बात की।

एक बार उन्होंने इलेक्ट्रिक ट्रेन के आगे कूदा। क्या यह मरणोपरांत नाम कमाने के लिए था या फिर बदला चुकाने के लिए? जयश्री ने पूछा।

वह जिसके घर में पेइंग गेस्ट के रूप में रहता था वहां की लड़की गर्भवती हो गई। अप्पू की मां के घर की सारी अव्यवस्था के चलते यह खबर मिली तो उसने कहा, "यदि शिव यही चाहता है तो ऐसा ही होने दो।"

अप्पू अच्छी तरह पढ़ रहा है। उसे इंजीनियरिंग के लिए एडमिशन मिलेगा। चिंता की कोई बात नहीं...उन्होंने भगवान को शुक्रिया अदा किया कि जब उन्हें पता चला कि चाचा मदद कर रहा था।

पहले जब वह अप्पू को विदा करने गया, जयश्री से इसके बारे में नहीं बताया। दो हफ्ते बाद केनेडा से खत आया तो उन्होंने बताया, "जाने से पहले वह मुझसे मिलने आया था।"

किसी न किसी दिन वह जयश्री और बच्चों से मिलेगा। इसलिए उसे घर ले जाने के लिए वह हवाई अड्डा गया।

मिसेज डिसूजा ने जयश्री से डिनर तैयार करने के लिए कहा। हालांकि फ्लाइट में इसका इंतजाम था फिर जयश्री के साथ डिसूजा शॉपिंग के लिए गई।

दस साल के राजेश के एलबम में केनेडा का डाक टिकट चिपका हुआ था। जयश्री ने पिताजी के दूसरे बेटे के बारे में कुछ बताया। नौ साल की स्मिता ज्यादा जानना चाहती थी। वह भाइ...वह किसके जैसा दिखता है? पिताजी के जैसा...या...?

वह कुछ न कुछ कहकर बात बदल देता था। ड्राइवर ने पास आकर कहा, "देखो! अमरीका से आए फ्लाइट के यात्री आ रहे हैं। उन्होंने जल्दी से चश्मा पोंछा और कस्टम्स गेट से बाहर निकलते लोगों को देखा।

किसी भी भीड़ में वह अप्पू को पहचान लेता। आखिर तीन सालों में उसे क्या फर्क आ सकता?''

फर्क इतना कि उसने चांदी के फ्रेमवाला चश्मा पहना हुआ था। खाकी कमीज और काला ट्राउजर पहना हुआ था। क्या उसका वजन बढ़ गया है?

''हां।''

''लो, वह आ गया।''

एलूमिनियम रेलिंग को थामते हुए उसने हाथ से इशारा किया। अप्पू ने उन्हें देखा। ट्राली को बगल में धकेलकर उसने उनका हाथ थामकर कहा, ''तुम यहां आए, बढ़िया।''

ट्राली लेकर यार्ड में आते ही उसने कहा, ''हर काउंटर के आगे लंबी कतारें...कोई तरीका नहीं...कोई न कोई रिश्वत पूछता है। ''दस डॉलर'' दस डॉलर। यह तो मोटी रकम है।

उसने चश्मे को माथे पर रखा।

''अप्पू मैं गाड़ी ले आया हूं।''

''पापा, ठहरो...।''

अप्पू ने मुड़कर देखा ''लो वह आ रही है।''

एक छोटी-सी लड़की ट्राली धकेलती हुई आ रही थी। पास आने पर ही पता चला कि वह एक औरत थी। उसने बड़ा-सा गोलाकार चश्मा पहना था जो उसके चेहरे के अधिकतम भाग को ढक रहा था। अप्पू ने उससे गंभीर रूप से कुछ कहा। उसका जवाब भी गंभीर था। बस यही समझ में आया कि वह अंग्रेज नहीं थी। पापा यह बेला है। वह थोड़ी-थोड़ी अंग्रेजी जानती है। फ्रांस की रहनेवाली है। बेला ने हाथ मिलाया। उसका हाथ स्मिता के हाथ से भी छोटा था। उसे मर्यादासूचक शब्द मालूम नहीं था इसलिए मुस्कुराया।

कोचीन के लिए फ्लाइट साढ़े पांच बजे की है। हमने वहीं से बुकिंग करवाई।

बेटा ही नहीं साथ में फ्रांस की यह औरत भी। उनका यहां आना कॉलोनी वासियों के लिए बड़ी घटना होगी। डिसूजा को फ्रेंच भी मालूम है।

''घर चलते हैं...वहां किसी भी प्रकार की असुविधा नहीं है।''

"एयरलाइन वालों ने ओवर नाइट का इंतजाम किया है। इसके लिए कूपन भी दिए हैं।" अप्पू ने कहा।

"तो हम इसे होटल में छोड़कर..."

दोनों ने आपस में फिर से बात की।

"कार किधर है।"

उन्होंने हमसा की तरफ इशारा किया जो मानो उनका झगड़ा खत्म होने के इंतजार में खड़ा था।

होटल हवाई अड्डे के पास था। वह सामने बैठा। बेला पीछे बैठी हुई थी। वह लगातार बात करती रहती। बीच में कभी-कभी अप्पू जवाब में 'हां-हां' कहता।

होटल के पोरटिको में ड्राइवर से लगेज निकालने के लिए कहते समय उन्होंने कहा, "अभी क्यों?"

"निकालने दो।"

"आप अभी भी उसी जगह में रहते हो, क्यों?"

"एक घंटे का रास्ता तय करना पड़ता है।"

होटल के दो पोटरों ने लगेज उठाया। जब वे होटल में चेक इन कर रहे थे तो वह दुखी था। मिसेज डिसूजा उनकी राह देख रही होगी। स्मिता और राजेश को सुलाने की कोशिश करने पर भी वे नहीं सोते। डिसूजा के यहां से लाए खाने को हॉटकेस में डालकर जयश्री किसी पुराने कपड़े के बटन सी रही होगी।

पोटर के पीछे-पीछे चलते हुए अप्पू ने एक बार मुड़कर देखा। वह औरत भी उनके साथ चली।

वह कौन है? मित्र या सहयोगी? प्रेमिका तो नहीं होगी। छोटे कद की लड़कियां सुंदर नहीं होतीं।

कमरे में सूटकेस रखने के बाद, अप्पू ने पोटर से पूछा, "दस या बीस?"

फ्लास्क से ठंडा पानी गिलास में डालते हुए बेला ने मुस्कराया। उसने गले को छूते हुए कहा, "प्यास लग रही है।"

अप्पू सोफे पर बैठकर जूते उतार रहा था। उसने अपनी कुर्सी को सामने के ऐनेवाले मेज की ओर सरकाया। अप्पू ने कहा, "जैट लैग...कुछ लोगों को यह हवाई जहाज से उतरते ही होता है। बेला थक गई है।"

पानी पीने के बाद बिस्तर पर बैठकर उसने बात की। अप्पू उसका

अनुवाद करता रहा। वह हिंदुस्तान को बहुत पसंद करती है। वह बहुत समय से हिंदुस्तान आने की योजना बना रही थी।

उन्होंने पूछा, "खाना?"

"फ्लाइट में दो बार खाया। उनका समय अलग रहता है।"

उसने दो उंगलियों को हिलाकर कहा, "दो बार।" यह भी एक कारण था कि अप्पू बात करते समय हाथों की मुद्रा से हाव-भाव अभिव्यक्त करता था। बेला के पिताजी इटली के वासी और मां फ्रांस की थी। बेला को समझ में आया कि वे उनके बारे में बात कर रहे थे तो एक छोटा-सा बैग लेकर वह गुसलखाने की ओर गई। अब वे अकेले थे।

"मैंने घर में बताया कि तुम...तुम आओगे।"

"बेला थक गई है।"

"क्या वह तुम्हारे साथ काम करती है?"

"वह फ्रेंच टीचर है। केनेडा में फ्रा़ंस के बहुत निवासी हैं। अरे, मैं आपको लिखना भूल गया था कि पिछले महीने हमारी शादी हुई।"

उनको कुछ समझ में नहीं आया।

"हमने एंबेसी में रजिस्टर किया। एक छोटी-सी पार्टी थी। मेरे पास उसकी तस्वीरे हैं। बेला के सूटकेस में होगा या बाहर। देखता हूं।" उसने बिस्तर पर पड़े बैग को खोला। उसमें से फोटो भरा लिफाफा मिला। बेला सफेद कपड़े पहने हुए थी जिसमें कई मोड़ थे। अप्पू ने सूट पहना हुआ था। उनके हाथ में गुलदस्ते थे। चार फोटो। पार्टी के और शादी के।

गुसलखाने से बेला बाहर आई तो उन्होंने मुस्कुराया। उनको याद आया कि ड्राइवर इंतजार कर रहा था।

"पिताजी मैंने आपके बारे में बेला से बताया कि आप चित्रकार हैं।" बेला ने उनकी तरफ बड़े आदर से देखा। फिर बेला ने उत्साह के साथ कुछ कहा। अप्पू ने अनुवाद किया। मोंट्रियोल में इसका एक घर है। उसमें गेस्ट रूम भी है। आप वहां आकर रहें तो बहुत सारे चित्र बना सकते हैं।

भगवान का शुक्रिया। उसको पता नहीं कि मैं अब फैंटम के स्ट्रिप्स को पेंट कर रहा हूं। एक बार समाचार-पत्र का कार्यालय देखने आए बच्चे ने केबिन के दरवाजे के पास खड़े होकर इन्हें बड़े आश्चर्य से देखा। वे फैंटम की कहानियों को पढ़ते और देखते हैं। वे यह सोचकर आश्चर्य

में पड़ गए कि क्या यही वह आदमी है जिसने फैंटम की तस्वीरें बनाईं। जब उन्होंने अमरीकी कला एजेंसियां और ली फाक के बारे में समझाया तो बच्चों को घुमा-फिरा रहे प्रेस कार्मिक ने कहा, "छोड़ो भाई साहब, अगर वे ऐसे सोचते हैं तो सोचने दो।"

लिफाफा और तस्वीरें को बगल में रखते समय अप्पू ने कहा, "आप चाहें तो एक तस्वीर ले सकते हैं।"

"अच्छा।"

बेला ने अपना केनवास शूज उतारा, मोजे भी उतारे और बेग से क्रीम निकालकर एड़ियों के बीच में लगाया।

उन्होंने अपने मन के झाड़ और जंगलों में किसी विषय के लिए ढूंढ़ा ताकि उस पर बात की जा सके। वह थककर बैठ गई। इस शताब्दी की बारिश...तूफान दूर समुद्र से निकल ज्यादा ताकतवर होता जा रहा है। बातचीत के लिए जब विषय मिला तो उसे चैन मिला। मेट्रो में बारिश के कारण सब कुछ अचानक अस्त-व्यस्त होने के बारे में उन्होंने बात की। अप्पू को सोफे का सहारा लेकर आंख बंद करते देख उन्होंने पूछा, "क्या, नींद आ रही है?"

"नहीं। फ्लाइट में हम सो ही तो रहे थे।"

उनको प्यास लगी। पानी पिया। हमसा को मन में धन्यवाद देते हुए उसने दूसरी सिगरेट जलाई। बरामदे में ट्रालियों की आवाज सुनाई दी। खिड़की से हवाई अड्डा दिखाई नहीं दिया। शायद वह होटल के बगल का भाग होगा।

"अप्पू, कितने दिनों की छुट्टी है?"

"मुझे सात अगस्त को लौटना है।"

"तुम छह को यहां पर होगे।"

"नहीं। हम दिल्ली जा रहे हैं। बेला दिल्ली देखना चाहती है। हमने बुकिंग कर ली है।" उन्होंने जैसे-तैसे कहा।

"बच्चे तुम्हें देखना चाहते हैं।"

"पक्का।"

अप्पू ने मुस्कुराने की कोशिश की और कहा, "पिताजी, चोटा निक्करा मंदिर में शादी करवाते होंगे न?"

"हां, ऐसे ही लगता है।"

जूतों को उतारते हुए अप्पू ने कहा, "बेला हमारे रीति-रिवाजों के अनुसार शादी करना चाहती है। वह जादू-टोने के बारे में फोटो खींचना चाहती है। वह अच्छी फोटोग्राफर है।"

उसने देखा कि बेला बिस्तर पर चढ़ गई है वह सोने जा रही है।

"ठीक है मैं चलता हूं।"

"ठीक है पिताजी, आप निकलिए।"

अप्पू ने पत्नी को पुकारा। वह जल्दी से उठी। उसे पता चला कि वे जा रहे हैं। उन्होंने सोचा विदाई में क्या कहना है? स्वागत है, मिलकर खुशी हुई, मिलकर अच्छा लगा।

बेला सामने आकर खड़ी हुई और झुकी। उन्होंने सोचा कि शायद जूते का फीता बांध रही होगी। लेकिन जब उसने जूते को छुआ तो उसे पता चला कि वह उनको प्रणाम कर रही थी। उठते हुए वह बोली, "पिताजी।" और उनको गले लगाया। वह आश्चर्यचकित हो गया और उसने सिर पर हाथ रखा। वह कुछ कह नहीं पाया। मन ही मन उसने कहा–सब कुछ अच्छा ही हो। अप्पू ने भी जल्दी से आकर पांव छुए। उन्होंने बेटे को गले लगाया।

"तुम्हें सारे ऐश्वर्य प्राप्त हों।"

दरवाजे पर रुककर उन्होंने मुस्कुराकर हाथ मिलाया। फिर जल्दी से चल पड़ा। सब कुछ अच्छा हो।

बारिश का पानी बह चुका था और सड़क सूख गई थी। आसमान साफ था। हंसा के स्टीरियो से गाना सुनाई दिया। एक-दो-तीन...इस गाने की मेल वाईस थी।

जब वह टैक्सी से बाहर निकला, कॉलोनी के सारे घरों में बत्ती बंद हो चुकी थी। तीसरी मंजिल के फ्लैट में रोशनी थी। क्या बच्चे सो गए होंगे?

राजेश ने दरवाजा खोला। वह ट्राउजर और टी-शर्ट पहने हुए था। टी-शर्ट पर लिखा हुआ था 'वर्ल्ड चैंपियन'। वह अतिथियों का स्वागत करने के लिए तैयार हुआ था। जयश्री ने हल्की पीले रंग की साड़ी पहनी हुई थी। बाल बढ़िया ढंग से बांधकर रखे हुए थे। स्मिता ने दीपावली में खरीदे हुए पीले सलवार कमीज पहनी हुई थी। मिसेज डिसूजा डाइनिंग टेबल के पास बैठी थी। उसके हाथ में वाईन था जो क्रिसमस के दौरान

मैंने दूसरा पत्थर नीचे फेंक दिया। शव बात करने लगा तो दिल हल्का हुआ। अब समय तो बीतेगा।

मैंने पूछा, "तुमने एसिड पी लिया और यही नहीं, समुद्र में कूदकर आत्महत्या भी कर ली?"

"न मैंने एसिड पिया और न ही समुद्र में कूदा।"

वह शुद्ध मलयालम में बात कर रही है। मुझे आश्चर्य हुआ।

"तू तमिलनाडु के चोलापुरम की सीतम्मा है न?"

एसिड लगने के कारण उसके विकृत चेहरे पर हंसी दिखाई नहीं दी। लेकिन सुनाई दी।

"मैं सीतम्मा नहीं हूं। मैं मलयाली हूं। यमुना। मेरा पूरा नाम यमुना देवी है।"

नाम सुनकर मैं क्षण भर के लिए बेचैन हो गया फिर अपने आपको संभाला।

"तेरी मृत्यु कैसे हुई? इस खत में बताई गई बातों को तुमने नहीं लिखा?" सुबह उसके शरीर से मिले ख़त को दिखाते मैंने पूछा।

"मैं जवाब दूंगी। लेकिन मेरी मदद करना।"

मैं हंस पड़ा। शव की मदद। एक बीड़ी जलाते हुए बिना किसी इच्छा के मैंने कहा, "मैं किसी की मदद नहीं करता। मुझे अपनी समस्याओं के लिए ही समय नहीं मिलता। फिर भी बताओ।"

मेरा घर तानीकुर्पी में है। पति खपरैल की फैक्टरी में काम करते हैं। बेटी विवाह योग्य हो गई है। छोटा-सा परिवार। लेकिन जब से घर बनवाना शुरू किया, हमारी समस्याएं शुरू हुई। बीड़ी बनाने वाली कंपनी की नौकरी छोड़कर मैंने पति के साथ खपरैल की फैक्टरी में काम करना शुरू किया। फिर भी ज्यादा कमा नहीं सका। मैंने पति से कहा था कि छोटे घर की ही जरूरत है। क्या बताएं जहां-जहां हो सब जगह से उधार ले लिया। मैं हंस पड़ा। मैं भी घर बनवा रहा था। जो किन्हीं कारणों से रुक गया है। जहां-तहां से संभव हो, मैंने लोन ले लिया था। बीवी के गहने गिरवी रखे, केवल मंगलसूत्र बाकी रह गया।

हंस क्यों पड़े?

"यूं ही।" मैंने उसको असलियत नहीं बताई। बताकर भी क्या फायदा? लोन तो नहीं मिलेगा। फिर उसने गिरवी रखने, घर बनवाने पर

सामना की गई मुसीबतें, जिन लोगों ने उधार दिया उनका तंग करना आदि के बारे में बताया। मैं यह सब सुनकर बैठा। उसकी बातें मेरी समस्याओं से मिलती-जुलती थीं।

दैनिकों में आनेवाली खबर की तरह सपरिवार मिलकर आत्महत्या करने के बारे में सोचा। ऐसे में एक दिन हम यह किला देखने के लिए आए। मुझे दिलचस्पी नहीं थी। लेकिन पति ने जिद की। कितने साल हो गए कि हम मेहनत करते ही रहे हैं। अब थोड़ा मौज-मस्ती हो जाए। बेटे को मेरी बहन के यहां छोड़कर हम रवाना हुए।

पति मुझे किला दिखाने ले गए। किले के पास के थ्री स्टार होटल में हमने कमरा लिया। मुझे बढ़िया खाना खिलाया। मैंने जी भरकर खाया। खाना खत्म होते-होते मैंने बेहोशी सी महूसस की। मैंने सोचा शायद यात्रा की थकावट होगी।

बेहोशी के बीच में मैंने देखा कि अधेड़ उम्र का होटल का मैनेजर हंसते हुए मेरे सामने खड़ा है। अभी आऊंगा कहकर पति बाहर चले गया।

मेरे ऊपर बेडशीट फेंककर जब वह निकला तो पति अंदर आया। साथ में किला देखने आए दो नवजवान टूरिस्ट थे।

मेरी आंखें नम हुईं। पति ने मेरे कंधे पर हाथ रखा। चिंता मत कर। हमारे घर का काम पूरा करना है, बेटी की शादी करवाना है न।

मैं बहुत कुछ कहना चाहती थी। लेकिन, एक शब्द भी बाहर नहीं निकला। प्यास लग रही थी। पति ने मीठा कुछ पिलाया। मैंने बड़े चाव से उसे पी लिया। नवजवानों को कमरे में छोड़कर पति चला गया।

हर दिन बहुत सारे टूरिस्ट मेरी खोज में आए। देशी व परदेशी। बीच में मिलनेवाले विश्रामवेला में आहिस्ता चलकर मैं दरवाजा खोलने की कोशिश करती। लेकिन दरवाजा बाहर से बंद रहता। फिर खिड़की खोलने पर वहां से किला व टूरिस्ट दिखाई दिया।

आपको मालूम है? बहुत पहले यह जमीन जिस पर किला है वह कन्या सी थी। किसी को कोई दिलचस्पी नहीं थी। सरकार ने इसे टूरिस्ट केंद्र बनाया तब से व्यापार का केंद्र बन गया। फिर इस जमीन पर अनेक स्टार होटल बनाए गए।

मुझे शव के जनरल नॉलिज पर आश्चर्य हुआ।

पहले-पहले मैं दिनों की याद करती थी। बुधवार, बृहस्पतिवार,

तथागत

☆ अक्षिता

डॉक्टर का पीछा करने पर मुझे लगा कि हमारे साथ जो खामोशी छाई थी, वह भी उदास है। हमेशा की तरह डॉक्टर दरवाजे के पास एक बार रुका और कहा, "परवाह नहीं। बाकी सब नार्मल है।" मैंने डॉक्टर की तरफ नहीं देखा, बल्कि नीचे की ओर जानेवाली अनगिनत सीढ़ियों को गिन रही थी।

परवाह नहीं इसका कारण डॉक्टर को मालूम था। अर्नाशमेमर्स के बारे में कुछ नहीं कहा जा सकता। मरीज का ध्यान रखना। कोई बदलाव नजर आए तो जरूर बताना।...डॉक्टर चला गया। लेकिन उन्होंने कुछ बातों पर ध्यान नहीं दिया। एक ही नजर में हमें कुछ दिखाई देता है। लेकिन इस दुनिया में उस नजर से भी परे कुछ है जो दिखाई नहीं देता। उदाहरण के लिए इस फ्लैट के बंद दरवाजे के भीतर मुझे और मेरी मां को तड़पा रही खामोशी। वह खामोशी कह रही है कि यही मृत्यु है, यही ईश्वर है।

अंदर मां लेटी है एक सीधी लकीर के समान निश्चल। मैं मां की ओर चल पड़ी। मेरी हर एक आहट को मां सुन रही होगी, मैंने ऐसा सोचा। लेकिन ऐसा नहीं हुआ। मुझे लगा कि मेरी आहट मां के खोए याददाश्त के दरवाजे पर खटखटाकर दुःखी होकर लौट रही है। मेरी याददाश्त तो बड़ी गठरी के समान है।

स्कूल से लौटते समय मेरे साथ दस-बारह बच्चे होते। बच्चों के साथ पगडंडियों से होते हुए घर आते समय मेरी आहट सुनकर मां दरवाजे पर आकर खड़ी रहती।

मां दीवार की ओर लेट रही है। वहां पर मेरी दीदी की तस्वीर टंगी

थी। उसकी मृत्यु दस साल पहले हुई। मां क्या सोच रही होंगी? मैंने चारपाई पर बैठकर पुकारा, "मां!"

मां ने मेरी तरफ देखा, लेकिन मुझे पहचाना नहीं। मेरी मां किस दुनिया में जा रही है जहां मेरी पुकार पहुंच नहीं पाती? दुःखों को अंदर समेटकर मैंने पूछा, "मां, तुम क्या सोच रही हो?" मां के जवाब का इंतजार कर रही थी मैं। मैंने खुद से पूछा, मां क्या सोच रही होंगी? मेरे दिल ने कहा, मुझे नहीं मालूम।

मां जितना हमें पहचानती है, उतना हम उन्हें नहीं पहचानते। मैंने देखा कि मां के माथे पर जो झुर्रियां थीं वह अब नहीं रहीं। उनका चेहरा प्रसन्न था। दरवाजा बंद कर बाहर निकाले गए बच्चे के समान थी मेरी अवस्था। मां की खुशी और गम में अब मैं नहीं हूं। सालों तक यह खुशी और गम मेरे लिए ही था।

मां की यादों से जब हम घिर जाते हैं तो हमारी मौत होती है। कमरे में फोन की घंटी बज रही है। जिस प्रकार बच्चा हठ करता है जब तक उसे उठाया नहीं जाता उसी प्रकार घंटी बजती रही। फोन पर पति और बच्चों ने बात की। वे पूछ रहे हैं कि कब तक मैं लौटूंगी? मां, दीपू बीमार है...

किसका फोन था, दीपू था क्या? उसकी छुट्टियां शुरू हो गईं क्या? मैं तेजी से मां के पास पहुंची, हां मां दीपू का फोन था, अगले हफ्ते उसकी छुट्टियां शुरू हो रही हैं, मां तुम दीपू को...।

मैं चुप रही। मैंने देखा कि मां की नजरें शून्य खिड़की सी हो गई हैं। हमारी प्रतीक्षा के विरुद्ध यूं ही आकर चले जाने वाले तथागत के रूप में मेरी मां मुझे देख रही है। उनकी नजरें कितनी निर्मम हैं।

बारह बज गए हैं। मैंने मां से कहा, "आंखों में दवाई लगाने का समय हो गया है, मां आंखें खोलो।"

मां ने आंखें बंद कीं और मुंह खोला। मुझे हंसना और रोना आया। मैंने मां को डांटा, "क्या बच्चों जैसी हरकत कर रही हो? आंखें खोलो...।"

मां की आंखों की तह में पड़ी हंसी दवाई में घुल गई। मैंने मां का चेहरा पोंछा। उन्हें व्हील चेअर पर बिठाया और धकेलने लगी। अब हम खिड़की के पास पहुंच गए हैं।

मैदान में बच्चे फुटबाल खेल रहे हैं। वे शोर मचा रहे हैं। गेंद हमारी खिड़की तक आकर नीचे गिर जाती है। मुझे लगा कि सारे शब्द व जिंदगी भी हमारी खिड़की के पास आकर लौट रही है।

उसी दिन मैं मां को अंतिम बार टहलाने ले गई। अचानक मां ने हाथ छुड़ाया और सड़क पार कर अप्रत्यक्ष हो गई। मेरे दिल की धड़कन हजार गुना बढ़ गई। बाद में मैंने मां को एक कपड़ों की दुकान के सामने पाया।

मैंने मां को फिर से बिस्तर पर बिठाया। वह बहुत दुबली हो गई थी। उसके दिल की धड़कन मुझे सुनाई दी।

"मां भात दूं खाने को?" मैंने पूछा।

मां की नजरें फिर से दीवार पर टंगी मेरी दीदी की तस्वीर पर पड़ीं। मां के माथे पर झुर्रियां थीं। भात खिलाते हुए मैंने पूछा, "वह किसकी तस्वीर है? बताओ मां।" मैं मां की हालत में सुधार लाने का प्रयत्न कर रही हूं—काश एक बूंद आंसू, आहें, कुछ भी उनमें...।

• • •

1/2010

FIC SAMAKALINA In Hindi

Samakalina Malayalama
kahaniyam

MARY JACOBS LIBRARY
64 WASHINGTON STREET
ROCKY HILL, NJ 08553

SOMERSET COUNTY LIBRARY SYSTEM
3 3665 02246 8715

संतोष अलेक्स

जन्म : 6 जनवरी 1971 को केरल के तिरुवल्ला में। कवि व बहुभाषा अनुवादक। कोचिन विश्वविद्यालय से हिन्दी में एम.ए. और अनुवाद में डिप्लोमा। पंद्रह सालों से अनुवाद के क्षेत्र में कार्यरत। अंग्रेजी, हिंदी, तेलगु व मलयालम भाषा में कहानियां व कविताओं का अनुवाद। देश की चर्चित अंग्रेजी, मलयालम व हिंदी पत्र-पत्रिकाओं में एवं विशेषांकों में अनुवाद प्रकाशित।

कृतियां

मौलिक : दूरम (मलयालम काव्य)

अनूदित : मलयालम से हिंदी–शुरुआतें (के. सच्चिदानंदन की कविता), देहांतर (सावित्री राजीवन की कविता), चिड़िया की महक (माधवीकुट्टी की कहानियां), सिद्धार्थ (हेरमन हेस्से के उपन्यास का नाट्य रूपांतर)

तेलगु से हिंदी : बारिश थम गई (एल.आर. स्वामी की कहानियां)

हिंदी से अंग्रेजी : शेल्टर प्राफ द रेन (एकांत श्रीवास्तव की कविता)

पुरस्कार : राष्ट्रीय हिंदी साहित्य सम्मेलन त्रिवेंद्रम द्वारा देहांतर के लिए 2004 का 'पंडित नारायण देव पुरस्कार'।

संप्रति : तकनीकी अधिकारी, सी आई एफ टी, पांडुरंगापुरम, आंध्रा युनिवर्सिटी पी. ओ. विशाखापटणम-530003 **ई-मेल :** santosh.alex@rediffmail.com

07-DQX-859